CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत शिक्षण

डा० प्रभाशंकर मिश्र

हरियाणा ग्रन्थ अकादेमी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

309
२७

[redacted] आरक्षित

[redacted]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत शिक्षण

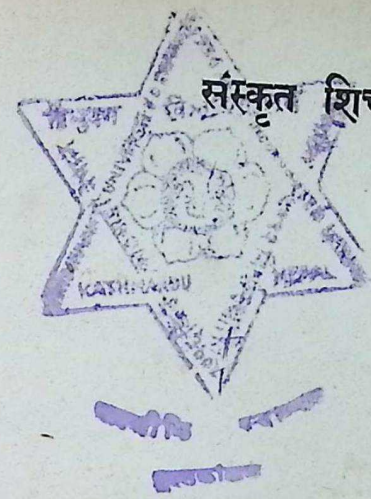

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत शिक्षण

डा० प्रभाशंकर मिश्र
एम० ए०, एम० एड्०, पी०-एच० डी०
वरिष्ठ भाषा विशेषज्ञ, राज्य शिक्षा संस्थान, गुड़गाँव

हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
चण्डीगढ़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

© हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, चण्डीगढ़

भारत सरकार के शिक्षा तथा समाज-कल्याण मंत्रालय की विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थ-निर्माण योजना के अन्तर्गत हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के तत्त्वावधान में रचित एवं प्रकाशित

R
491.2
MIS

Sanskrit Shikshan by Dr. Prabha Shankar Mishra has been brought out by Haryana Hindi Granth Akademi under a scheme sponsored by Ministry of Education and Social Welfare (Department of Culture), Government of India for the production of university-Level books and literature in regional Languages.

5888

प्रथम संस्करण : 1973
द्वितीय संस्करण : 1974

मुद्रित प्रतियाँ : 1100

मूल्य : पेपर बैक : साढ़े सात रुपये (Rs. 7.50)
पक्की जिल्द : दस रुपये (Rs. 10.00)

मुद्रक : पैराडाइज़ प्रिंटर्स, 240 इन्डस्ट्रीयल एरिया, चण्डीगढ़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रस्तावना

राष्ट्रभाषा हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को विश्वविद्यालयों में सर्वोच्च स्तर तक शिक्षा का माध्यम बनाने के प्रयत्नों की सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि इन भाषाओं में ज्ञान-विज्ञान की विविध शाखाओं के पर्याप्त ग्रन्थ उपलब्ध हों।

इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा एक विशेष योजना परिचालित की गई है। इस योजना के अनुसार इन भाषाओं में मौलिक ग्रन्थों की रचना करवाई जा रही है तथा अंग्रेजी आदि भाषाओं में उपलब्ध छात्रोपयोगी साहित्य के अधिकृत अनुवाद भी सुलभ किए जा रहे हैं। इस महत्त्वपूर्ण कार्य को कम-से-कम समय में सम्पन्न करने के लिए भारत सरकार की प्रेरणा और आर्थिक सहायता से सभी राज्यों में स्वायत्तशासी संस्थाओं की स्थापना की गई है। इन संस्थाओं की स्थापना से भारतीय भाषाओं में पुस्तक निर्माण के कार्य को बड़ा प्रोत्साहन मिलने लगा है और आशा की जाती है कि छात्रों को भारतीय भाषाओं में सम्बन्धित विषयों की वे प्रामाणिक पुस्तकें, जो उन्हें अब तक सामान्यतः बाज़ार में उपलब्ध नहीं थीं, यथाशीघ्र सुलभ होंगी।

हरियाणा में पुस्तक-निर्माण का यह कार्य हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के माध्यम से करवाया जा रहा है। यह हर्ष का विषय है कि प्रसिद्ध विद्वान् और अध्यापक इस कार्य में अकादमी को अपना हार्दिक सहयोग देने लगे हैं।

"संस्कृत शिक्षण" नामक प्रस्तुत पुस्तक अकादमी द्वारा इस योजना के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाने वाला बारहवाँ प्रकाशन है। इस पुस्तक के लेखक राज्य शिक्षा संस्थान, गुड़गाँव के वरिष्ठ भाषा विशेषज्ञ डॉ० प्रभाशंकर मिश्र हैं। पुस्तक का पुनरीक्षण, सम्पादन एवं सज्जा-संयोजन अकादमी के प्रकाशन-अनुभाग ने किया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुस्तक में भारत सरकार द्वारा तैयार की गई शब्दावली का प्रयोग किया गया है, ताकि देश की सभी संस्थाओं में छात्रों की सुविधा के लिए एक ही पारिभाषिक शब्दावली के आधार पर शिक्षा का आयोजन किया जा सके।

आशा है प्रस्तुत पुस्तक अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाओं में लोकप्रियता अर्जित करेगी और संस्कृत के अध्यापक इस प्रयास का स्वागत करेंगे।

निदेशक,
हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

शिक्षा मन्त्री, हरियाणा,
एवं अध्यक्ष,
हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय-सूची

		पृष्ठ संख्या
1.	संस्कृत भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	1
2.	संस्कृत भाषा का महत्त्व	6
3.	संस्कृत भाषा शिक्षण की उपयोगिता	11
4.	पाठ्यक्रम में संस्कृत का स्थान	14
5.	संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य	21
6.	संस्कृत शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त	26
7.	संस्कृत शिक्षण की विभिन्न पद्धतियाँ	32
8.	उच्चारण-शिक्षण	41
9.	गद्य शिक्षण	48
10.	कविता शिक्षण	57
11.	व्याकरण शिक्षण	66
12.	रचना शिक्षण	75
13.	अनुवाद शिक्षण	85
14.	लिखित कार्य का संशोधन	95
15.	संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य	103
16.	संस्कृत की पाठ्य पुस्तकें	110
17.	संस्कृत शिक्षण में श्रव्य-दृश्य साधनों का उपयोग	116
18.	संस्कृत शिक्षण में सहायक साधन	121
19.	संस्कृत अध्यापक	127
20.	संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के उपाय	131
21.	संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग	136
22.	संस्कृत शिक्षण में मूल्यांकन का नया दृष्टिकोण	140
23.	पाठ योजना	148
24.	परिशिष्ट क : पाठ योजनाओं के उदाहरण	153
25.	परिशिष्ट ख : सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची	171
26.	परिशिष्ट ग : पारिभाषिक शब्दावली	175

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर्वतों के मध्यवर्ती क्षेत्र में बोलचाल की भाषा थी। ब्राह्मण ही नहीं अन्य वर्ण भी इसका प्रयोग करते थे। जो बोल न सकते थे वे इसे समझ अवश्य लेते थे। इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि संस्कृत नाटकों का अभिनय होता था। यह तभी हो सकता था जब संस्कृत जनभाषा रही हो। प्राचीन शिलालेखों की भाषा संस्कृत है। जहाँ इनसे यह प्रमाणित होता है कि संस्कृत भारत में जनभाषा थी, वहाँ इसकी प्राचीनता भी सिद्ध होती है।

संस्कृत भाषा भारोपीय भाषा परिवार की प्रमुख भाषा

व्यक्तियों के परिवारों की भाँति भाषाओं के भी परिवार होते हैं। एक परिवार की सभी भाषाओं में शब्दावली तथा पद-रचना सम्बन्धी समानताएँ होती हैं। संसार के भाषा परिवार में से भारोपीय भाषा परिवार विशेष महत्त्वपूर्ण है। यह भाषा परिवार सबसे प्राचीन है। इसमें प्राचीनतम रचनाएँ हैं। संस्कृत इस भाषा परिवार की प्रमुख भाषा है। यूरोप की ग्रीक तथा लैटिन भाषाएँ, मध्य-एशिया की अवेस्ता तथा प्राचीन फारसी इसी परिवार की भाषाएँ हैं। संस्कृत के माता-पिता, भ्राता जैसे शब्दों के ग्रीक, अवेस्ता तथा फारसी भाषा में पर्यायवाची शब्द मिलते-जुलते हैं। इन भाषाओं के अनेक शब्द ऐसे हैं जिनको देखते ही इन भाषाओं का उद्गम एक होने का निश्चय हो जाता है। संस्कृत भाषा की भारोपीय परिवार में स्थिति को निम्नांकित तालिका के रूप में दिखाया जा सकता है :

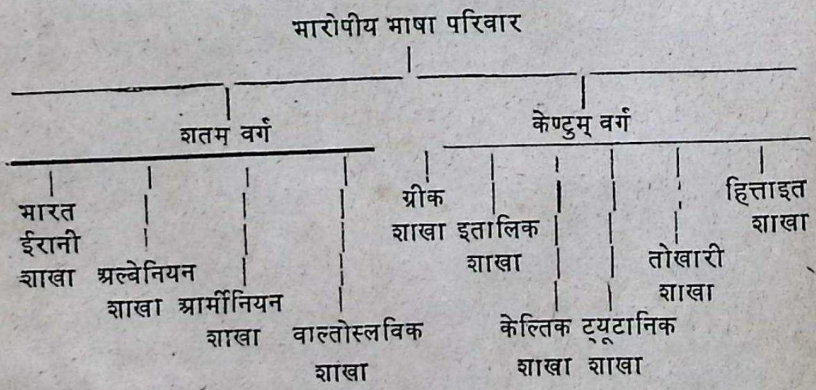

शतम् वर्ग तथा केण्टुम् वर्ग की भाषाओं को बोलने वाले एक ही परिवार के लोग थे। यह स्थान भारत तथा यूरोप का मध्यवर्ती भाग बताया जाता है। इन लोगों के दूरस्थ प्रदेशों में जा बसने से एक ही भाषा शतम् तथा केण्टुम दो वर्गों में बँट गई। यूनानी तथा लातीनी भाषाएँ केण्टुम् वर्ग की तथा भारत-ईरानी भाषाएँ शतम् वर्ग की प्रमुख भाषाएँ हैं। वैदिक संस्कृत भारत-ईरानी भाषा का भारतीय रूप है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत भाषा के तीन काल

संस्कृत भाषा का इतिहास बहुत लम्बा है। यह संसार की आदि भाषा है। इसमें भाषा का लिखित रूप 6000 ई० पू० अथवा इसके आसपास के समय का है जो वेदों के रूप में उपलब्ध है। यह भाषा आज भी एक सशक्त भाषा के रूप में विद्यमान है। इसके इतिहास को तीन कालों में बाँटा जा सकता है :

1. प्राचीन काल

यह काल संस्कृत भाषा के जन्म से 700 ई० पू० तक का काल है। इसे वैदिक काल कहा जा सकता है। इस अवधि में आर्य उत्तरी भारत में रह रहे थे। इस काल में संस्कृत जन भाषा थी। इस काल में ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद की रचना हुई।

तत्पश्चात् दर्शन, ज्योतिष, रेखागणित, व्याकरण, छन्द, अलंकार की रचना हुई। इसी समय यास्क ने निरुक्त की रचना की। इस काल में संस्कृत भाषा के साथ-साथ प्राकृत भाषा जन भाषा बन गई। परन्तु साहित्यिक भाषा संस्कृत ही रही। इस काल में पाणिनि, कात्यायन तथा पतंजलि ने संस्कृत भाषा में अत्युत्तम कृतियाँ प्रस्तुत कीं।

2. मध्यवर्ती आर्य भाषा काल

सस्कृत भाषा का यह काल 700 ई० पू० से 1000 ई० पू० तक माना जाता है। इस काल में जनसाधारण की भाषा प्राकृत थी। प्रादेशिक अन्तर के कारण प्राकृत भाषा के कई रूप थे। इनमें से, मागधी, अर्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री तथा पैशाची आदि रूप प्रमुख थे। इन प्राकृत भाषाओं के और विकृत होने पर अपभ्रंश भाषाओं का जन्म हुआ।

इस काल में भी संस्कृत उच्च वर्ग की बोलचाल की भाषा तथा साहित्यिक भाषा बनी रही।

3. अर्वाचीन आर्य भाषा काल

अपभ्रंश भाषाओं से काश्मीरी, सिंधी, पंजाबी, महाराष्ट्री, गुजराती, उड़िया, बंगला, तथा असमिया का जन्म हुआ। इन भाषाओं में संस्कृत की शब्दावली प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त होती है। इस प्रकार अर्वाचीन आर्य भाषाओं की समृद्धि का श्रेय संस्कृत को ही है।

इस काल में संस्कृत जन भाषा नहीं है, परन्तु संस्कृत भाषा के पण्डितों के लिए अब भी यह विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। संस्कृत भाषा की पत्र-पत्रिकाओं की संख्या भी कम नहीं है। संस्कृत रचनाएँ भी होती रहती हैं। संस्कृत भाषा का पठन-पाठन समस्त भारत में प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हो रहा है। अन्य भाषाओं की भाँति संस्कृत भाषा में अनुसंधान कार्य भी हो रहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाएँ

यह ऊपर बताया जा चुका है कि संस्कृत भाषा से प्राकृत भाषाओं ने तथा प्राकृत भाषाओं से अपभ्रंश भाषाओं ने जन्म लिया। तत्पश्चात् अपभ्रंश भाषाएँ ही आधुनिक आर्य भाषाओं के रूप में विकसित हुईं। इन भाषाओं का उद्गम निम्नांकित तालिका के रूप में दिखाया जा सकता है :

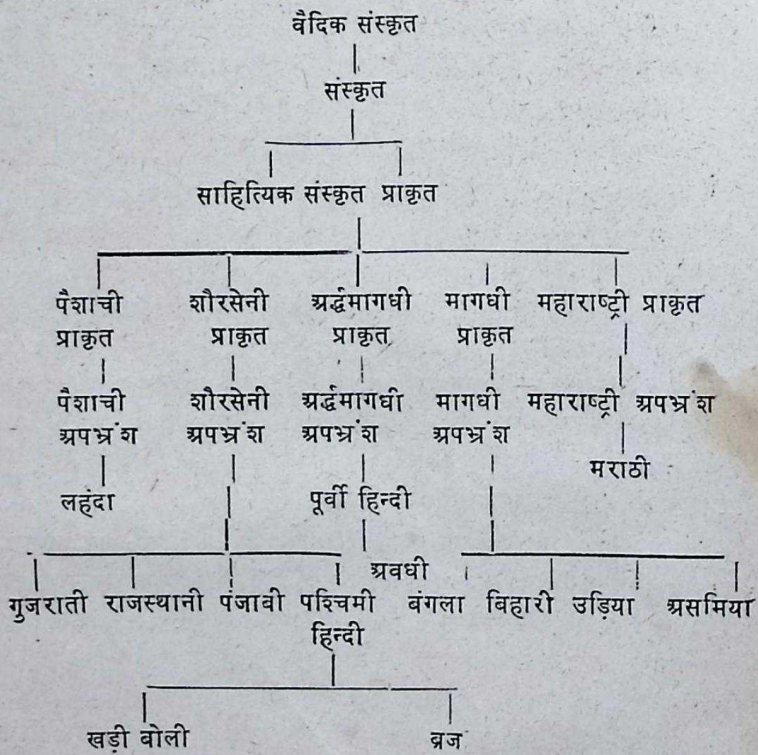

इस प्रकार इन सभी आर्य भाषाओं की जननी संस्कृत है। इन भाषाओं की समृद्धि का बहुत कुछ श्रेय संस्कृत भाषा को ही प्राप्त है। संस्कृत भाषा की शब्दावली प्रचुर रूप में इन भाषाओं में तत्सम रूप में प्रयुक्त होती है।

दक्षिण भारत की द्राविड़ तथा मुण्डा वर्ग की भाषाएँ आर्य भाषा परिवार से भिन्न परिवार की हैं। इन भाषाओं का द्राविड़ वर्ग से सम्बन्ध है। ये द्राविड़ भाषाएँ भी संस्कृत भाषा द्वारा प्रभावित हैं। इन भाषाओं में भी संस्कृत शब्दावली पर्याप्त रूप में प्रयुक्त होती हैं। इन भाषाओं का साहित्य भी संस्कृत साहित्य से प्रभावित है।

अतः भारत की सभी भाषाओं का संस्कृत भाषा से घनिष्ठ सम्बन्ध है। अधिकांश भारतीय भाषाएँ संस्कृत से उत्पन्न हुई हैं। शेष संस्कृत भाषा से समृद्ध हुई हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0_In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत भाषा की प्राचीनता स्पष्ट करें।
2. भारोपीय भाषा परिवार से आप क्या समझते हैं ?
3. संस्कृत भाषा का भारोपीय परिवार की भाषाओं से सम्बन्ध बताएँ।
4. संस्कृत भाषा का उद्गम कब हुआ ?
5. संस्कृत भाषा के तीन काल कौन से हैं ?
6. संस्कृत भाषा का भारतीय आर्य भाषाओं से क्या सम्बन्ध है ?
7. द्राविड़ भाषाओं का संस्कृत भाषा से क्या सम्बन्ध है ?
8. प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं से आप क्या समझते हैं ?
9. संस्कृत भाषा से प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं का जन्म कैसे हुआ ?
10. भारतीय भाषाओं की समृद्धि का श्रेय संस्कृत भाषा को कैसे प्राप्त होता है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 2

संस्कृत भाषा का महत्त्व

संस्कृत भाषा को जहाँ संसार की प्राचीनतम भाषा कहलाने का गौरव प्राप्त है वहाँ यह भारत की एक अमूल्य एवं अनुपम निधि भी है। भारतीय संस्कृति संस्कृत भाषा के माध्यम से ही अमर है। साथ ही संस्कृत सभी भारतीय आर्य भाषाओं की जननी है। भारत की आर्येतर भाषाएँ भी सस्कृत से ही समृद्ध हुई हैं। ऐसी अमर भाषा को कुछ लोग भ्रांतिवश मृत कह दिया करते हैं। ऐसा कहने वाले संस्कृत भाषा के महत्त्व से अपरिचित हैं। जिस भाषा का पठन-पाठन अविरल चल रहा हो, जिसमें निरन्तर रचना कार्य हो रहा हो और जो अन्य भाषाओं को अमरत्व प्रदान कर रही हो वह भाषा मृत कैसे कही जा सकती है। सस्कृत भाषा को बोलने वाले तथा इसे समझने वाले संख्या में कम हो सकते हैं पर इसका महत्त्व किसी भी अन्य भाषा से कम नहीं।

ऐतिहासिक महत्त्व

संस्कृत भाषा के साहित्य में प्राचीन इतिहास सन्निहित है। वेदों से प्राचीन आर्य जातियों की सभ्यता, संस्कृति, धर्म तथा राजनीति का इतिहास ज्ञात होता है। पुराणों और उपनिषदों, में, रामायण और महाभारत जैसे संस्कृत महाकाव्यों में, बौद्धों के त्रिपिटक साहित्य में तथा जैनों के आर्ष साहित्य में भारत का प्राचीन इतिहास विद्यमान है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से, मनुस्मृति तथा याज्ञवाल्क्य स्मृति से तत्कालीन समाज का इतिहास विदित होता है। और किसी स्रोत पर आधारित इतिहास कल्पनाजन्य हो सकता है परन्तु संस्कृत साहित्य में विद्यमान तथ्यों पर आधारित इतिहास में कल्पना का मिश्रण नहीं हो सकता। कल्हण की 'राजतरंगिणी', बाण का 'हर्ष चरित्र', विल्हण का 'विक्रमांकदेवचरित्रम्' आदि इतिहास ग्रंथों से प्राचीन भारत के सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन का ज्ञान प्राप्त होता है।

सांस्कृतिक महत्त्व

संस्कृत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। संस्कृत भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति अमर है। अब भी हमारे जातकर्म, नामकरण, यज्ञोपवीत, पाणिग्रहण आदि संस्कार संस्कृत भाषा में कराये जाते हैं। पूजा, पाठ, हवन, यज्ञ, आदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सभी संस्कृत भाषा के माध्यम से होते है। वस्तुतः संस्कृत भाषा हमारी संस्कृति का अजस्र स्रोत है।

केवल वर्तमान ही सब कुछ नहीं। वर्तमान का आधार भूतकाल होता है। भूतकाल की परम्पराएँ हमें अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती हैं। परम्पराओं को विस्मृत कर देने मे समाज अपनी संस्कृति को खो बैठता है। मूल के बिना वृक्ष के पत्ते सरस नहीं हो सकते। इसी प्रकार अपनी संस्कृति को सरस बनाए रखने के लिए हमें संस्कृत भाषा का अवलम्बन करना होगा। हमारी सभ्यता, संस्कृति, संस्कृत ग्रन्थों के रूप में है। संस्कृत भाषा से सम्बन्ध-विच्छेद करने से भारतीय संस्कृत कुम्हला जाएगी। अतः सांस्कृतिक दृष्टि से संस्कृत का महत्त्व कम नहीं है।

धार्मिक महत्त्व

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष,—जीवन के चार मुख्य लक्ष्य बताए गए हैं, इनमें भी धर्म मुख्य है।

भारत धर्म प्रधान देश है। आस्तिकता यहाँ के जीवन की प्रमुख विशेषता है। हिन्दुओं के अधिकांश धर्म ग्रन्थ संस्कृत में हैं। बौद्धों, जैनियों ने भी अपने कुछ धर्म ग्रन्थ संस्कृत में लिखे। हमारे धर्म ग्रन्थ भारतीय आध्यात्मिकता का आधार हैं। वेदों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण, महाभारत, 'श्रीमद्भगवद्गीता' आदि धर्म ग्रन्थों का पठन-पाठन सतत चलता रहता है। इस प्रकार संस्कृत हमारे धर्म को अनुप्राणित किए हुए है। संस्कृत के बिना हमारा धार्मिक जीवन अपूर्ण है।

राष्ट्रीय महत्त्व

किसी भी समाज में जहाँ अच्छी बातें होती हैं वहाँ बुरी भी होती हैं। भारत में विघटनकारी तत्त्व कभी-कभी उभार दिखाने लगते हैं। साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता, भाषा, जाति-पाँति जैसे विषयों पर कभी-कभी लोग बिगड़ बैठते हैं। ईर्ष्या, द्वेष, घृणा जैसी दुर्भावनाएँ कभी-कभी-भड़क उठती हैं। ऐसी स्थिति में संस्कृत भाषा का राष्ट्रीय महत्त्व हमारी सहायता करता है। संस्कृत सभी आर्य भाषाओं की जननी है। द्राविड़ भाषाएँ संस्कृत भाषा के प्रति ऋणी हैं। संस्कृत भाषा विघटनकारी तत्त्वों को इस एकरूपता का स्मरण कराती है। संस्कृत भाषा में विघटनकारी विष को धो देने की क्षमता है। संस्कृत भाषा अपने माध्यम से विभिन्न भाषा-भाषियों को एक शृंखला में बाँध देती है। संस्कृत लोगों को राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाती है। लोग भेद-भावों को भुलाकर राष्ट्रीय हितों को प्रमुखता देने लगते हैं।

कुछ लोग कह देते हैं कि राष्ट्रीयता के विकास में अंग्रेजी भी सहायक हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सकती है। ऐसा सोचना ठीक नहीं। अंग्रेज़ी आन्तरिक दृष्टि से फूट का विष घोलती है। वह लोगों में भेद-भाव भरती है। संस्कृत सभी आर्य भाषाओं की जननी है—यह विचार भाषा को लेकर झगड़ने वाले लोगों को शान्त कर देता है। लोग विघटन के स्थान पर सहयोग की बात सोचने लगते हैं। इस प्रकार संस्कृत भारत में राष्ट्रीयता की भावना विकसित करती है।

भारत में जितनी विभिन्नताएँ हैं उतनी शायद ही किसी देश में हों। भारत में अनेक प्रदेश हैं। प्रत्येक प्रदेश की संस्कृति भिन्न है, भाषा भिन्न है। भौगोलिक स्थिति भी भिन्न है। ऐसी स्थिति में संस्कृत ही शृंखला का कार्य कर सकती है। भाषा और प्रान्तीयता के आधार पर उत्पन्न मत-भेद संस्कृत भाषा के राष्ट्रीय महत्त्व को समझने पर समाप्त हो जाते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व

'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्'— भारतीय इस आदर्श का आरम्भ से पालन करते रहे हैं। इस प्रकार के कितने ही संदेश संस्कृत भाषा में उपलब्ध हैं जो हमें अन्तर्राष्ट्रीय जीवन के लिए प्रेरित करते हैं। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः"—सम्बन्धी भावना केवल भारतीयों के लिए ही सीमित नहीं है। भारतीय चाहते हैं कि विश्व भर के लोग सुखी हों और निरापद हों। ऐसे उत्कृष्ट विचार हमें अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए उत्साहित करते हैं।

शतम् वर्ग तथा केण्टुम् वर्ग के लोग मूलतः एक ही आर्य जाति से सम्बन्धित थे। यह ज्ञान इन वर्गों की भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त होता है। संस्कृत भाषा इन भाषाओं में प्रमुख है। इस भाषा के माध्यम से हम विदेशों में रहने वाले उन लोगों से सुगमता से सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं जिनकी मूल भाषा हमारे पूर्वजों की भाषा से भिन्न नहीं थी। इस दृष्टि से संस्कृत भाषा का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व भी है।

भाषा की दृष्टि से महत्त्व

संस्कृत का भाषा की दृष्टि से कितना महत्त्व है—इस विषय पर गत अध्याय में विस्तार से लिखा जा चुका है। संस्कृत भारोपीय भाषा परिवार की मुख्य भाषा है। एक ओर जहाँ संस्कृत का यूनानी तथा ईरानी—विदेशी भाषाओं से सम्बन्ध है वहाँ संस्कृत अधिकांश भारतीय आर्य भाषाओं की जननी है। ये भारतीय आर्य भाषाएँ संस्कृत से उत्पन्न ही नहीं हुईं, समृद्ध भी संस्कृत शब्दावली तथा संस्कृत साहित्य के आधार पर हुई हैं। सभी भारतीय आर्य भाषाओं में संस्कृत शब्दावली प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त होती है। दक्षिण भारत की द्राविड़ भाषाएँ भी संस्कृत भाषा से विपुल रूप में प्रभावित हैं। द्राविड़ भाषाओं में संस्कृत भाषा की पर्याप्त शब्दावली प्रयुक्त होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साहित्यिक महत्त्व

संस्कृत साहित्य अत्यन्त विस्तीर्ण है। वैदिक संस्कृत में केवल काव्य रचना हुई परन्तु लौकिक संस्कृत में गद्य, पद्य तथा नाटक साहित्य के अतिरिक्त अलंकार, ध्वनि, गुण, रीति आदि काव्य विषयों तथा ज्योतिष, गणित, दर्शन, नीति, इतिहास आदि अनेक विषयों पर रचनाएँ की गईं।

भारतीय भाषाओं ने संस्कृत भाषा से शब्दावली ही ग्रहण नहीं की प्रत्युत साहित्य के लिए संस्कृत साहित्य से विचारधारा भी ग्रहण की। संस्कृत भाषा के अनुकरण पर भारतीय भाषाओं में लक्षण तथा लक्ष्य ग्रन्थ लिखे गए। छन्द, अलंकार तथा अन्य काव्य विषय संस्कृत से ही अनूदित होकर भारतीय भाषाओं में आए।

संस्कृत साहित्य में उत्कृष्ट रचनाएँ उपलब्ध हैं। कालिदास की 'अभिज्ञान शाकुन्तल', 'रघुवश', 'कुमार सम्भव' तथा 'मेघदूत' रचनाएँ अतुल्य संस्कृत कृतियां हैं। इसी प्रकार भवभूति द्वारा रचित 'उत्तररामचरित' भारवि का 'किरातार्जुनीय', 'माघ का 'शिशुपालबध', हर्ष का 'नैषध चरित्र' तथा बाण की 'कादम्बरी' आदि ग्रन्थ संस्कृत साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। इनमें से अधिकांश ग्रन्थों का अनुवाद भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में किया जा चुका है।

इस प्रकार संस्कृत भाषा का साहित्य किसी अन्य भाषा से कम नहीं। साथ ही यह अन्य भाषाओं के लिए विशेषतः भारतीय भाषाओं के लिए प्रेरणा तथा विचारधारा का स्रोत भी है।

विज्ञान सम्बन्धी महत्त्व

संस्कृत भाषा में विज्ञान के विभिन्न विषयों पर ग्रन्थ उपलब्ध हैं। संस्कृत में भूगोल तथा खगोल पर आर्यभट्ट का आर्यभटीय प्रामाणिक ग्रन्थ उपलब्ध है। वैदिक साहित्य में आयत, वृत्त, समबाहु, त्रिभुज आदि रेखागणित सम्बन्धी विषयों का उल्लेख है। भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त तथा श्रीपति जैसे सस्कृत विद्वानों ने बीजगणित के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। वराहमिहिर ने ज्योतिष पर सूर्यसिद्धान्त नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की। भास्कराचार्य ने सिद्धान्त शिरोमणि नामक ज्योतिष ग्रन्थ की रचना की।

चिकित्सा विज्ञान वैदिक युग में भी विद्यमान था। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में चरक, वाग्भट तथा भावमिश्र के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। रसायन विज्ञान पर नागार्जुन का रस-रत्नाकर प्रसिद्ध ग्रन्थ है। भाषा विज्ञान पर यास्क का पुनिरुक्त सर्वविदित है।

अतः संस्कृत भाषा, विज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थों में भी किसी भाषा से कम नहीं है। विज्ञान सम्बन्धी गूढ़ विषयों पर सस्कृत भाषा में ग्रन्थों की उपलब्धि हम सभी भारतीयों के लिए गर्व का विषय है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कलात्मक महत्त्व

विज्ञान के साथ-साथ भारत ने अतीत काल में कला के क्षेत्र में भी उन्नति की थी। मूर्तिकला, चित्रकला, स्थापत्य कला में तो भारत विश्वविख्यात था। सिन्धु घाटी के अवशेषों के रूप में इन कलाओं की उन्नति के प्रमाण विद्यमान हैं। इन कलाओं के अतिरिक्त नाट्यकला, अभिनय सामग्री, वेष-भूषा, संगीत, नृत्य आदि कलाओं के सम्बन्ध में संस्कृत ग्रन्थों में यत्र तत्र उल्लेख मिलता है। कला की दृष्टि से भी हमें संस्कृत भाषा का महत्त्व स्वीकार करना होगा।

उपर्युक्त विवेचन से संस्कृत भाषा का महत्त्व स्पष्ट है। इस भाषा के वैभव को बनाए रखना हम सभी का कर्त्तव्य है।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत भाषा का महत्त्व किन-किन दृष्टिकोणों से है ?
2. सस्कृत का ऐतिहासिक महत्त्व क्या है ?
3. संस्कृत का सांस्कृतिक महत्त्व बताएँ।
4. संस्कृत का धार्मिक महत्त्व स्पष्ट करें।
5. संस्कृत का राष्ट्रीय महत्त्व किस आधार पर है ?
6. संस्कृत के अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व से आप क्या समझते हैं ?
7. संस्कृत का भाषा की दृष्टि से महत्त्व स्पष्ट करें।
8. संस्कृत के साहित्यिक महत्त्व से क्या अभिप्राय है ?
9. संस्कृत के विज्ञान सम्बन्धी महत्त्व से आप क्या समझते हैं ?
10. संस्कृत के कलात्मक महत्त्व से क्या भाव है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 3

संस्कृत भाषा शिक्षण की उपयोगिता

किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व उसकी उपयोगिता पर दृष्टिपात किया जाता है। उपयोगी कार्यों के करने से उन्नति का मार्ग खुलता है। अनुपयोगी कार्यों के करने में समय, धन, शक्ति की हानि होती है। ऐसा प्रश्न भाषाओं के सम्बन्ध में भी उठ सकता है। लोग उन्हीं भाषाओं और विषयों को पढ़ना अधिक उपयोगी समझते हैं जिनके अध्ययन से अधिक लाभ हो। व्यवसाय शीघ्र मिल सके। अंग्रेजी शासन काल में लोग व्यावसायिक लाभ के लिए अंग्रेजी पढ़ने पर बल देते थे।

उपयोगिता की दृष्टि से संस्कृत भाषा किसी से पीछे नहीं। जो लोग इसके शिक्षण के प्रति उदासीन हैं अथवा मौन हैं वे इसकी उपयोगिता से अपरिचित हैं। संस्कृत भाषा शिक्षण की उपयोगिता निम्नांकित दृष्टिकोणों से है :

1. सांस्कृतिक

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी सस्कृति होती है। संस्कृति को सजीव रखना राष्ट्र के सभी लोगों का कर्त्तव्य है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह भारत के विभिन्न प्रदेशों की विविधताओं को लांघ कर उन्हें एक सूत्र में बाँधती है। भारतीय सस्कृति हमें स्मरण कराती है कि हम किसी भी प्रदेश के हों परन्तु हम एक हैं, हमारी संस्कृति एक है। भारतीय संस्कृति हमें एक राष्ट्र का स्मरण कराती है। भारतीय संस्कृति के दिग्दर्शन के लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन परमावश्यक है। संस्कृत के अध्ययन के बिना हम अपनी सस्कृति के स्वरूप को नहीं पहचान सकते। अतः संस्कृत भाषा का शिक्षण विद्यार्थियों को अवश्य कराया जाना चाहिए।

2. कलात्मक

भारत अतीत काल में स्थापत्य, मूर्त्ति, संगीत, नृत्य आदि कलाओं में उन्नति के शिखर पर था। इन सभी कलाओं से सम्बद्ध ज्ञान संस्कृत भाषा में उपलब्ध है। इन कलाओं के ज्ञान पिपासुओं के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है।

3. साहित्यिक

संस्कृत साहित्य लक्षण तथा लक्ष्य ग्रन्थों की निधि है। साहित्य के प्रत्येक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय पर संस्कृत भाषा में अनुपम ग्रन्थ उपलब्ध हैं। संस्कृत में जहाँ अलंकार, ध्वनि, गुण, दोष, रीति, वृत्ति आदि काव्य विषयों पर लक्षण ग्रन्थ उपलब्ध हैं वहाँ महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, नीतिकाव्य, नाटक, कथा, लघु कथा आदि विषयों पर अनेक लक्ष्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं। भारतीय भाषाओं का साहित्य संस्कृत भाषा के साहित्य से विचारधारा एवं भाषा की दृष्टि से अत्यधिक प्रभावित है। अतः भारतीय भाषाओं के विद्यार्थियों के लिए संस्कृत भाषा के साहित्य का परिचय आवश्यक है। संस्कृत भाषा के साहित्य के अध्ययन से अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का अध्ययन सुगम हो जाता है। संस्कृत भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी साहित्यिक आलोचना तथा साहित्यिक रसास्वादन में भी दक्ष हो जाते हैं।

4. भावात्मक

संस्कृत शिक्षण से भावात्मक विकास होता है। नैतिक विकास होता है। विद्यार्थी सदाचारी बनते हैं। मानसिक संकीर्णता धुल जाती है। विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता के भाव उत्पन्न होते हैं। विद्यार्थी जातीयता, प्रान्तीयता और भाषावाद को भुलाकर भारतीयता के पुजारी बनते हैं। 'उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्' उक्ति के अनुसार आचरण करते हुए विद्यार्थी सारे विश्व को अपना कुटुम्ब समझते हैं। मानव मात्र के कल्याण को अपना जीवन लक्ष्य समझते हैं।

5. बौद्धिक

प्रत्येक विषय न्यूनाधिक रूप में बौद्धिक विकास में सहायक होता है। इस दृष्टि से भी संस्कृत भाषा के शिक्षण की उपयोगिता है। संस्कृत भाषा का एक ओर भारोपीय परिवार की ग्रीक, फारसी आदि भाषाओं से सम्बन्ध है और दूसरी ओर हिन्दी, पंजाबी, बंगला, उड़िया, मराठी आदि आर्य भाषाओं से तथा आर्येतर द्राविड़ भाषाओं से भी सम्बन्ध है। संस्कृत भाषा के अध्ययन से विद्यार्थी इन भाषाओं के प्रति तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं। ऐसा करने से उनकी विश्लेषणात्मक तथा विचारात्मक शक्तियों का विकास होता है। इस प्रकार संस्कृत भाषा का अध्ययन बौद्धिक विकास में सहायक होता है। सस्कृत भाषा का अध्ययन स्मरण शक्ति को प्रचण्ड करता है।

6. व्यावसायिक

लोग उस विषय को अधिक पढ़ते हैं जिससे तात्कालिक लाभ हो। वे अपने बच्चों को भी तात्कालिक उपयोगिता के विषयों को पढ़ने के लिए विवश करते हैं। आज का युग है भी अर्थकारी विद्या का। प्रायः कुछ लोग संस्कृत शिक्षण के प्रति इसलिए उदासीनता दिखाते हैं कि उन्हें इस भाषा की व्यावसायिक उपयोगिता प्रतीत नहीं होती। परन्तु उनका ऐसा सोचना ठीक नहीं है। आयुर्वेद, संगीत, मूर्त्तिकला, हस्तलिपि, ज्योतिष तथा शिक्षण आदि व्यवसायों के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत भाषा का शिक्षण अनिवार्य है। संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने पर संस्कृत शिक्षण के लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में नियुक्तियाँ हो जाती हैं। संस्कृत शिक्षण से सम्बद्ध अन्य व्यवसायों के लिए व्यक्ति अधिकारी बन जाता है।

उपर्युक्त सभी दृष्टिकोणों से संस्कृत भाषा के शिक्षण की उपयोगिता स्पष्ट है। संस्कृत भाषा का अध्ययन न केवल व्यक्ति के अपने हित में है। प्रत्युत समाज और राष्ट्र के हित में भी है।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत भाषा शिक्षण की उपयोगिता आप किन-किन दृष्टिकोणों से समझते हैं ?
2. संस्कृत भाषा शिक्षण की सांस्कृतिक उपयोगिता स्पष्ट करें।
3. संस्कृत भाषा शिक्षण की कलात्मक उपयोगिता क्या है ?
4. संस्कृत शिक्षण की साहित्यिक उपयोगिता बताएँ।
5. संस्कृत शिक्षण भावात्मक विकास में कैसे सहायक होगा ?
6. संस्कृत भाषा का शिक्षण विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास में कैसे सहायक होगा ?
7. संस्कृत शिक्षण से विद्यार्थियों को क्या व्यावसायिक लाभ होगा ?
8. संस्कृत भाषा का अध्ययन शैक्षणिक व्यवसाय की दृष्टि से किस प्रकार उपयोगी होगा ?
9. संस्कृत भाषा का शिक्षण राष्ट्रीय भावों के विकास में कैसे सहायक होगा ?
10. विद्यार्थियों के चरित्र के विकास के लिए संस्कृत शिक्षण की उपयोगिता स्पष्ट करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 4

पाठ्यक्रम में संस्कृत का स्थान

संस्कृत भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसके महत्त्व तथा उसके शिक्षण की उपयोगिता पर विचार कर लेने के पश्चात् प्रश्न उपस्थित होता है कि संस्कृत भाषा का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्या स्थान हो तथा शैक्षिक पाठ्यक्रम में इसे कितना महत्त्व दिया जाए। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित तीन दृष्टिकोण विचारणीय हैं :

प्रथम दृष्टिकोण

प्रथम दृष्टिकोण उन लोगों का है जो संस्कृत भाषा के अध्ययन एवं अध्यापन को अनावश्यक और हानिकारक समझते हैं। इन लोगों के विचार में संस्कृत ब्राह्मणों की भाषा है और इसकी आवश्यकता केवल कर्मकाण्ड के लिए होती है। ये लोग संस्कृत भाषा का पठन-पाठन आज के तकनीकी और वैज्ञानिक युग में व्यर्थ समझते हैं।

द्वितीय दृष्टिकोण

द्वितीय दृष्टिकोण उन लोगों का है जो संस्कृत को पाठ्यक्रम में एक वैकल्पिक विषय के रूप में स्थान दिलाना चाहते हैं। इनका विचार है कि विज्ञान के युग में अधिक महत्त्व वैज्ञानिक और आधुनिक विषयों को दिया जाना चाहिए। संस्कृत क्लिष्ट भाषा है। इसके पढ़ाने से पाठ्यक्रम बोझल होगा और विद्यार्थियों का काम बढ़ेगा। इसलिए संस्कृत का शिक्षण अनिवार्य न बनाया जाए। इसे पाठ्यक्रम में वैकल्पिक विषय के रूप में रखा जाए। संस्कृत केवल उन्हीं विद्यार्थियों को पढ़ाई जाए जो इस विषय में रुचि रखते हों।

तृतीय दृष्टिकोण

तृतीय दृष्टिकोण रखने वाले विद्वान् संस्कृत को पाठ्यक्रम में एक वैकल्पिक स्थान दिलाने के पक्ष में हैं। इनके दृष्टिकोण के अनुसार संस्कृत को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाए। इस मत के पोषक लोगों की यह धारणा इस आधार पर है कि संस्कृत भाषा सभी भारतीय आर्य भाषाओं की जननी है। इसका अध्ययन अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन में सहायक होगा। साथ ही विद्यार्थी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय संस्कृति को भी भलीभाँति समझ सकेंगे। इन लोगों की यह भी धारणा है कि संस्कृत भाषा के शिक्षण से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करने में सहायता मिलेगी।

उपर्युक्त दृष्टिकोणों का विश्लेषण

पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा के स्थान के सम्बन्ध में उपर्युक्त तीन दृष्टिकोणों में से प्रथम दृष्टिकोण भारतीय विचारधारा के प्रतिकूल है। यह विचार कि संस्कृत शिक्षण आधुनिक युग में व्यर्थ है बिल्कुल अनुचित है। ऐसा दृष्टिकोण उन लोगों का है जो संस्कृत भाषा के गौरव तथा इसके महत्त्व से अपरिचित हैं। वे इस भाषा की मधुरता एवं इस साहित्य की सरसता से अपरिचित हैं। ये लोग संस्कृत भाषा के महत्त्व के साथ भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता से भी अनभिज्ञ हैं। ऐसे लोगों पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव है। जहाँ उनका खान-पान, रहन-सहन पाश्चात्य ढंग का है वहाँ उनका चिन्तन भी वैसा ही है। ये लोग बोलचाल के लिए अंग्रेज़ी भाषा को अच्छा समझते हैं, किसी भारतीय भाषा को नहीं। इन्हें कोई भी भारतीय चीज़ घटिया लगती है। इसलिए ये लोग अंग्रेज़ी का अध्ययन अनिवार्य और संस्कृत का अध्ययन अनावश्यक समझते हैं। जो भाषा भारतीय संस्कृति और सभ्यता का माध्यम है उसे भारतीय शिक्षा प्रणाली में स्थान न देना भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात करना होगा।

द्वितीय दृष्टिकोण भी असंगत है क्योंकि इस मत के पोषक पाठ्यक्रम में संस्कृत के स्थान के प्रति उदासीन हैं। ये लोग संस्कृत को पाठ्यक्रम में वैकल्पिक विषय के रूप में स्थान देना चाहते हैं। संस्कृत के प्रसार हेतु सक्रिय पग नहीं उठाना चाहते।

तृतीय दृष्टिकोण भी असंगत है क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में समस्त भारत में संस्कृत का अध्ययन अनिवार्य किया जाना सम्भव नहीं है। बच्चा पठन मातृभाषा से आरम्भ करता है। उसे हिन्दी भाषा को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में पढ़ना पड़ता है। अभी अंग्रेज़ी का भी बोझ दूर नहीं हुआ है। यदि संस्कृत का अध्ययन अनिवार्य बना दिया जाएगा तो विद्यार्थियों को चार-चार भाषाएँ एक साथ पढ़नी पड़ेंगी। विद्यार्थियों को भाषाओं के अतिरिक्त और भी कई विषय पढ़ने होते हैं।

संस्कृत शिक्षण के सम्बन्ध में अभीष्ट मत

संस्कृत शिक्षण के सम्बन्ध में यदि उपर्युक्त तीनों दृष्टिकोण संगत नहीं हैं तो फिर इस सम्बन्ध में क्या किया जाना चाहिए।

संस्कृत शिक्षण के महत्त्व पर बल देते हुए लोकसभा के भूतपूर्व अध्यक्ष और बिहार के भूतपूर्व राज्यपाल श्री अनन्तशयनम् आयंगर ने अप्रैल, 1957 में पुरी में दिये गए अपने भाषण के अन्तर्गत कहा था कि "जो संस्कृत नहीं जानता वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत (कल्चर्ड) नहीं कहा जा सकता क्योंकि प्राचीन काल से ही हमारी जीवन पद्धति और परम्पराएँ केवल संस्कृत में ही प्रकट हुई हैं और यदि वर्तमान युग में भी हम उन्नति करना चाहते हैं तो हमें संस्कृत को अपने जीवन के आधार के रूप में पुन: स्वीकार करना होगा। बिना इसके हमारे सारे प्रयत्न निष्फल रहेंगे।"

भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, डॉ० राधाकृष्णन्, तथा भूतपूर्व प्रधानमन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने जहाँ कहीं भी संस्कृत भाषा के शिक्षण की चर्चा हुई वहाँ इसका शिक्षण भारतीय विद्यार्थियों के लिए आवश्यक बताया।

26 मार्च, 1972 को अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन का दिल्ली में उद्घाटन करते हुए भारत के राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि ने संस्कृत भाषा को अतीत और वर्तमान के मध्य तथा पूर्व और पश्चिम के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने वाली सजीव कड़ी बताया।.....उन्होंने संस्कृति की इस परम्परागत निधि को उचित मान्यता देने तथा इसे भावी सन्तति तक पहुँचाने का आग्रह किया।[1]

इसी अवसर पर भारत सरकार के पर्यटन एवं नागरिक विमानन मत्री श्री कर्णसिंह ने कहा कि संस्कृत केवल भारत की ही नहीं प्रत्युत समस्त विश्व की बपौती है। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा के कारण ही आज भारत का सारे विश्व में सिर ऊँचा है।[2]

भारत सरकार ने संस्कृत के अध्ययन के विषय में परामर्श देने के लिए डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी की अध्यक्षता में संस्कृत आयोग की स्थापना की थी। इस आयोग ने विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में संस्कृत के अध्ययन के लिए समुचित प्रबन्ध का आग्रह किया। इस आयोग ने यह भी सिफारिश की थी कि विषयों के वर्गों को इस प्रकार बनाया जाए कि जो विद्यार्थी संस्कृत भाषा का

---

[1]President V. V. Giri calld upon Sanskrit Scholars of the world to identify Sanskrit "as a living connection link between the past and the present as well as between the East and the West.....Let us give due recognition to this wonderful cultural heritage and pass it on to posterity; if possible with added embellishment."

(The Daily Tribune, dated 27th March, 1972. P. 1. columns 1-2)

[2]Tourism and Civil Aviation Minister Karan Singh, who presided said, "Sanskrit was not confined to India alone, but it was heritage of the entire world".....He said, "it was Sanskrit which gave India its present prestige in the world."

(The Daily Tribune, dated 27th March, 1972. P. 1. columns 2-3)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्ययन करना चाहें उन्हें इसके अध्ययन से वंचित न रखा जाए।*

अतः उपर्युक्त सभी विचारों से इस मत की पुष्टि होती है कि संस्कृत भाषा का अध्ययन आवश्यक है। प्रश्न शेष यह रह जाता है कि पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा का शिक्षण अनिवार्य बनाया जाए अथवा वैकल्पिक। डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी की अध्यक्षता में जो संस्कृत आयोग बनाया गया था उसने अपने प्रतिवेदन में संस्कृत को त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत अनिवार्य रूप से पढ़ाने का परामर्श भारत सरकार को दिया था। इस सूत्र के अनुसार हिन्दी तथा मातृभाषा के साथ-साथ तीसरी भाषा संस्कृत को अनिवार्य रूप से पढ़ाने का सुझाव था। कुछ राज्यों में अब भी इस सूत्र के अनुसार तीन भाषाएँ पढ़ाई जा रही हैं। इस समय भारत में संस्कृत शिक्षण मुख्यतः दो रूप में हो रहा है :

1. संस्कृत पाठशालाओं तथा संस्कृत महाविद्यालयों के रूप में।
2. सामान्य विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के रूप में।

संस्कृत पाठशालाओं तथा संस्कृत महाविद्यालयों में संस्कृत को एक मात्र विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। माध्यम भी संस्कृत ही होता है। इन संस्थाओं में संस्कृत का शिक्षण प्राथमिक स्तर से ही आरम्भ कर दिया जाता है। पाठ्यक्रम प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य अथवा प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री,आचार्य आदि कक्षाओं में विभाजित होता है।

सामान्य विद्यालयों में संस्कृत का शिक्षण प्रायः छठी श्रेणी से आरम्भ किया जाता है। इसे वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या कम होती है। सामान्य महाविद्यालयों में भी संस्कृत को वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

उपर्युक्त दोनों रूपों में संशोधन की आवश्यकता है।

प्रायः देखा जाता है कि संस्कृत पाठशालाओं तथा संस्कृत महाविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी आधुनिक विषयों से अपरिचित रह जाते हैं। अतः संस्कृत पाठशालाओं, महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम का आधुनिकीकरण किया जाना चाहिए। संस्कृत संस्थाओं में संस्कृत शिक्षण को प्रमुखता देते हुए भी मातृभाषा, सामाजिक अध्ययन, साधारण विज्ञान जैसे सामान्य विषय भी पढ़ाए जाने चाहिएँ। ऐसा करने से विद्यार्थी संस्कृत के गहन अध्ययन के साथ-साथ अन्य विषयों का भी गहन ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। विद्यार्थियों का दृष्टिकोण अधिक व्यापक बनेगा। उनके लिए व्यावसायिक सम्भावनाएँ बढ़ जाएँगी। संस्कृत अध्ययन का कार्य करने के अतिरिक्त वे अन्य सामान्य क्षेत्रों में भी सेवा कार्य कर सकेंगे।

सामान्य विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण माध्यमिक स्तर से आरम्भ होना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त करते हैं। विद्या-

*संस्कृत आयोग के अध्याय 3 के अनुच्छेद 49 तथा अध्याय 5 के अनुच्छेद 15 व 32 के अंशों के आधार पर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लयों में संस्कृत शिक्षण कक्षा 6 से आरम्भ होकर 11 तक चलना चाहिए। इन कक्षाओं में संस्कृत शिक्षण दो रूपों में होना चाहिए :

(क) अनिवाय रूप में तथा (ख) वैकल्पिक रूप में।

अनिवार्य रूप से संस्कृत शिक्षण के पाठ्यक्रम में संस्कृत साहित्य की अपेक्षा संस्कृत भाषा पर बल दिया जाए। इस से विद्यार्थियों का मातृभाषा सम्बन्धी ज्ञान पुष्ट होगा। उनकी शब्दावली बढ़ेगी। वे अपनी संस्कृति से परिचित होंगे तथा उनकी संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि विकसित होगी। अनिवार्य संस्कृत के लिए एक अलग प्रश्न-पत्र हो और उसमें उत्तीर्ण होना भी अनिवार्य हो। तभी विद्यार्थी और अध्यापक इसके पठन-पाठन की ओर ध्यान देंगे।

संस्कृत के अनिवार्य रूप में शिक्षण के साथ-साथ विद्यालयों में संस्कृत को एक वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाने का भी प्रबन्ध होना चाहिए। जो विद्यार्थी संस्कृत भाषा में विशेष रुचि रखते होंगे वे इसको वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ कर संस्कृत भाषा और साहित्य का उच्च अध्ययन कर सकेंगे। विषयों के विकल्प के ऐसे वर्ग बनाए जाएँ जिससे कि संस्कृत में रुचि रखने वाले विद्यार्थी इसे विकल्प के रूप में ले सकें। यहाँ तक सुविधा हो कि विज्ञान पढ़ने वाले विद्यार्थी भी यदि संस्कृत पढ़ना चाहें तो पढ़ सकें। ऐसे विद्यार्थियों को संस्कृत साहित्य, व्याकरण, तथा रचना का पर्याप्त ज्ञान कराया जाए। विद्यार्थियों को मौखिक संस्कृत का अभ्यास भी कराया जाए। ऐसे विद्यार्थी स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तरों पर सस्कृत का उच्च अध्ययन करते रहेंगे।

भारत को इस समय सबसे बड़ी आवश्यकता राष्ट्रीय एकता की है। राष्ट्रीय एकता के अभाव में आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति व्यर्थ होगी। राष्ट्रीय एकता ही भारत की स्वतंत्रता को सुरक्षित रख सकती है। राष्ट्रीय एकता के लिए संस्कृत भाषा को भारतीय शिक्षण प्रणाली में महत्त्वपूर्ण स्थान देना होगा। एतदर्थ संस्कृत को भारत के सभी प्रदेशों में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना हितकर होगा। जो विद्यार्थी संस्कृत भाषा का उच्च अध्ययन करना चाहें उनके लिए सामान्य विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में संस्कृत को वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाए जाने के लिए सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ। इस दिशा में आर्थिक अथवा कोई अन्य कठिनाई बाधक न हो।

संस्कृत पाठ्यक्रम की रचना के साधारण नियम

पाठ्यक्रम में संस्कृत को क्या स्थान दिया जाए? प्रश्न पर विचार कर लेने के उपरान्त विचारणीय यह है कि संस्कृत पाठ्यक्रम की रचना किन नियमों के आधार पर की जाए।

भारत के प्रत्येक प्रदेश के संस्कृत पाठ्यक्रम भिन्न-भिन्न हैं। अतः यहाँ कक्षानुसार संस्कृत का पाठ्यक्रम देना संगत प्रतीत नहीं होता। फिर प्रत्येक प्रदेश का पाठ्यक्रम प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा पूर्व निर्धारित होता है। संस्कृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्यापक शिक्षा विभाग को पाठ्यक्रम की रूपरेखा में सुधार हेतु अपने सुझाव अवश्य दे सकते हैं। इस दृष्टि से संस्कृत अध्यापकों का पाठ्यक्रम की रचना के साधारण नियमों से परिचित होना आवश्यक है। संस्कृत शिक्षण के पिछले पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं तथा वैयक्तिक विभिन्नताओं का ध्यान नहीं रखा जाता था। सभी विद्यार्थियों को एक जैसा पाठ्यक्रम पढ़ने के लिए विवश किया जाता था। आजकल के पाठ्यक्रम में इतनी छूट तो नहीं है फिर भी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाता है। संस्कृत पाठ्यक्रम की रचना के समय निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखा जाना चाहिए :

1. पाठ्यक्रम प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण हो। इसमें संस्कृत शिक्षण के मौखिक तथा लिखित दोनों पक्षों के अन्तर्गत आने वाले सभी विषयों को सम्मिलित किया जाए। जैसे गद्य, पद्य, व्याकरण, अनुवाद, रचना, मौखिक कार्य आदि।

2. पाठ्यक्रम बनाते समय विद्यार्थियों के मानसिक स्तर, उनकी पृष्ठभूमि तथा उनके पूर्ण ज्ञान का ध्यान रखा जाए।

3. पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की स्तरानुकूल रुचियों के अनुरूप हो।

4. पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं तथा आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाए।

5. पाठ्यक्रम लचकदार हो अर्थात् आवश्यकता तथा परिस्थितियों के अनुसार इसमें अपेक्षित परिवर्तन किया जा सके।

6. पाठ्यक्रम विस्तृत हो जिससे कि अध्यापक पाठ्यक्रमगत विषयों को विस्तार से पढ़ाएँ। केवल स्पर्श मात्रा से काम न चलाएँ।

7. पाठ्यक्रम का वर्गीकरण इस प्रकार हो कि कक्षा का पाठ्यक्रम पहले की तथा बाद की कक्षा के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित हो।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. पाठ्यक्रम में संस्कृत के स्थान पर विभिन्न दृष्टिकोणों का उल्लेख करें।

2. पाठ्यक्रम में संस्कृत के स्थान सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण करें।

3. पाठ्यक्रम में संस्कृत शिक्षण सम्बन्धी न्यायसंगत मत क्या है ?

4. विद्यालयों में संस्कृत को अनिवार्य रूप से पढ़ाए जाने के विषय में आपके अपने विचार क्या हैं ?

5. संस्कृत के वैकल्पिक विषय के रूप में शिक्षण से क्या अभिप्राय है ?

6. संस्कृत पाठशालाओं तथा महाविद्यालयों के संस्कृत पाठ्यक्रम के आधुनिकीकरण से क्या लाभ होगा ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

7. पाठ्यक्रम में संस्कृत का समावेश राष्ट्रीय एकता में किस प्रकार सहायक होगा ?

8. वर्तमान समय में सामान्य विद्यालयों के पाठ्यक्रम में संस्कृत की क्या स्थिति है ?

9. विज्ञान पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए संस्कृत का अध्ययन किस प्रकार उपयोगी होगा ?

10. संस्कृत पाठ्यक्रम के निर्माण के समय आप कौनसे नियमों को ध्यान में रखेंगे ? आजकल का संस्कृत पाठ्यक्रम पहले के संस्कृत पाठ्यक्रमों से किस प्रकार भिन्न है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 5

संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य

मातृभाषा तथा अंग्रेजी भाषा के उद्देश्यों से भिन्नता

विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों के उद्देश्य पूर्व निर्धारित होते हैं। भाषा शिक्षण के उद्देश्य अन्य विषयों के उद्देश्यों की अपेक्षा अधिक महत्त्व रखते हैं क्योंकि भाषा शिक्षण दो दृष्टियों से कराया जाता है—विषय की दृष्टि से तथा माध्यम की दृष्टि से। संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य मातृभाषा के शिक्षण सम्बन्धी उद्देश्यों से भिन्न होंगे क्योंकि विद्यार्थियों को मातृभाषा का शिक्षण प्रथम कक्षा से आरम्भ कराया जाता है और संस्कृत भाषा का शिक्षण छठी कक्षा से। पठनारम्भ करने से पूर्व भी बच्चे मातृभाषा का पर्याप्त मौखिक ज्ञान प्राप्त कर चुके होते हैं। विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति तथा विचार ग्रहण सम्बन्धी जितनी योग्यता मातृभाषा में होगी उतनी संस्कृत में नहीं।

संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य अंग्रेज़ी शिक्षण के उद्देश्यों से भी भिन्न होंगे। अंग्रेज़ी भाषा अब भी भारत में विद्यमान है। अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने के कारण अंग्रेज़ी भाषा का शिक्षण भारत में किसी न किसी रूप में चलता रहेगा। भारत में संस्कृत का पठन-पाठन कम अवश्य है परन्तु इसका महत्त्व अंग्रेज़ी भाषा से कहीं अधिक है। अंग्रेज़ी एक विदेशी भाषा है। संस्कृत भाषा हमारी संस्कृति का आधार है, माध्यम है। भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता की उन्नति का श्रेय संस्कृत को ही है। अतः संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य अंग्रेज़ी शिक्षण के उद्देश्यों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण होंगे।

संस्कृत शिक्षण के सामान्य उद्देश्य

संस्कृत सभी आर्य भारतीय भाषाओं की जननी है। आर्येतर भारतीय भाषाएँ भी इससे प्रभावित हैं। अतः संस्कृत भाषा शिक्षण के उद्देश्य अन्य भारतीय भाषाओं के शिक्षण सम्बन्धी उद्देश्यों की अपेक्षा विशिष्ट होंगे। संस्कृत शिक्षण के सामान्य उद्देश्य निम्नांकित हैं :

1. **ग्रहण का उद्देश्य :** संस्कृत शिक्षण का यह सर्वप्रथम उद्देश्य है। इस उद्देश्य से भाव है कि विद्यार्थी संस्कृत भाषा के माध्यम से व्यक्त विचारों को ग्रहण कर सकें। इस उद्देश्य को इस प्रकार भी लिखा जा सकता है :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

1. विद्यार्थी मौखिक रूप से व्यक्त संस्कृत को समझ सकें।
2. विद्यार्थी संस्कृत में लिखित विचारों को समझ सकें।

विद्यार्थी कोई भी भाषा पढ़ें उनमें उस भाषा के मौखिक एवं लिखित रूप को समझने की क्षमता हो। अतः यह आवश्यक है कि संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थी मौखिक तथा लिखित रूप में व्यक्त संस्कृत को समझ सकें।

2. **अभिव्यक्ति का उद्देश्य :** भावाभिव्यक्ति दो प्रकार से हो सकती है— बोलकर तथा लिखकर। अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थी—

1. सरल तथा शुद्ध सस्कृत में मौखिक विचाराभिव्यक्ति कर सकें और
2. सरल तथा शुद्ध संस्कृत में लिखित विचाराभिव्यक्ति कर सकें।

3. **सांस्कृतिक उद्देश्य :** संस्कृत भाषा के कारण ही भारतीय संस्कृति अमर है। इसी भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति हम तक पहुँची है। संस्कृत पढ़ते समय सांस्कृतिक उद्देश्य को भुलाया नहीं जा सकता। अतः सांस्कृतिक उद्देश्य के अन्तर्गत संस्कृत के विद्यार्थियों को प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों अथवा उनसे उद्धृत अंशों के माध्यम से प्राचीन भारतीय सस्कृति से परिचित कराया जाए।

4. **कलात्मक उद्देश्य :** विद्यार्थियों को सस्कृत साहित्य के कलापक्ष से भी परिचित कराया जाएगा। मनोहर लोकोक्तियों तथा सुभाषितों से परिचित कराया जाएगा। वे ताल, लय, तथा स्वर से संस्कृत कविता पढ़ने की क्षमता प्राप्त करेंगे।

5. **रचनात्मक उद्देश्य :** इस उद्देश्य के अन्तर्गत निम्नांकित बातें सम्मिलित होंगी :

1. सरल संस्कृत में मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति करने की क्षमता।
2. मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद करने की क्षमता।
3. शब्दों तथा लोकोक्तियों को संस्कृत वाक्यों में प्रयुक्त करने की क्षमता।
4. सरल विषयों पर निबन्ध लेखन।
5. अनुच्छेदों का संस्कृत में सारांश लेखन।

6. **रसानुभूति तथा मनोविनोद सम्बन्धी उद्देश्य :** स्वाध्याय पठन का चरम रूप है। स्वाध्याय मनोविनोद तथा आनन्द का स्रोत होता है। विद्यार्थी संस्कृत भाषा का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने पर सस्कृत साहित्य के स्वाध्याय से निरन्तर अपना मनोविनोद तथा आनन्दानुभूति करते रहेंगे। संस्कृत साहित्य की सरलता विद्यार्थियों को रसानुभूति के लिए आकर्षित करती रहेगी।

संस्कृत शिक्षण के स्तरानुसार उद्देश्य

आजकल भारत में संस्कृत शिक्षण निम्न दो पद्धतियों के अनुसार किया जा रहा है :

1. स्कूल कालेज पद्धति के अनुसार तथा
2. पाठशालीय पद्धति के अनुसार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन दोनों पद्धतियों में संस्कृत शिक्षण की रूपरेखा भिन्न है। अतः संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य दोनों पद्धतियों के विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग होंगे क्योंकि संस्कृत शिक्षण के उपर्युक्त सभी उद्देश्य किसी भी पद्धति के अन्तर्गत एक साथ प्राप्त किए जाने सम्भव नहीं।

स्कूल कालेज पद्धति के अनुसार संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य

भारत के विभिन्न प्रदेशों के स्कूलों में संस्कृत भाषा का शिक्षण प्रायः कक्षा 6 से आरम्भ होता है और यह उच्च विद्यालयों में कक्षा 10 तक तथा उच्चतर विद्यालयों में कक्षा 11 तक चलता है। बी० ए० (भाग 1, 2, 3,) अथवा एफ० ए० में संस्कृत का अध्ययन वैकल्पिक विषय के रूप में होता है। तत्पश्चात् एम० ए० तथा पी–एच० डी० कक्षाओं में संस्कृत का अध्ययन तथा अनुसंधान सम्बन्धी कार्य चलता रहता है। इस पद्धति के अनुसार संस्कृत शिक्षण के क्रमशः प्रारम्भिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तरों के अनुसार निम्नलिखित उद्देश्य होंगे।

प्रारम्भिक स्तर—कक्षा 6, 7, और 8

1. संस्कृत के सरल गद्यांशों तथा पद्यांशों को शुद्ध एवं स्पष्ट रूप में पढ़ने की क्षमता।
2. बोले गए तथा लिखे गए सरल संस्कृत वाक्यों का अर्थ ग्रहण करने की क्षमता।
3. सरल संस्कृत के वाक्यों का मातृभाषा में अनुवाद करने की क्षमता।
4. मातृभाषा के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करने की क्षमता।
5. सरल तथा छोटे-छोटे संस्कृत वाक्यों के रूप में अति सरल मौखिक अभिव्यक्ति।
6. देखकर तथा सुनकर शुद्ध लिखने की क्षमता।

माध्यमिक स्तर—कक्षा 9,10 तथा हायर सैकेण्डरी की कक्षा 11 और इण्टरमीडियेट कक्षाएँ

1. संस्कृत के सरल तथा कठिन वाक्यों एवं गद्यांशों को शुद्ध एवं स्पष्ट ढंग से पढ़ने की क्षमता।
2. संस्कृत के श्लोकों एवं पद्यांशों का सस्वर और सुस्वर पाठ करने की क्षमता।
3. संस्कृत के सरल एवं कठिन गद्यांशों एवं पद्यांशों का अर्थग्रहण करने की क्षमता।
4. संस्कृत के कुछ कठिन वाक्यों तथा अनुच्छेदों का मातृभाषा में अनुवाद करने की क्षमता।
5. मातृभाषा के कुछ कठिन वाक्यों तथा अनुच्छेदों का संस्कृत में अनुवाद करने की क्षमता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

6. साधारण विषयों पर सरल संस्कृत में निबन्ध रचना करने की क्षमता।

उच्च स्तर—बी० ए० तथा एम० ए० कक्षाएं

1. सभी प्रकार के गद्य खण्डों को शुद्ध एवं स्पष्ट रूप में पढ़ने की क्षमता।
2. सभी प्रकार के पद्यांशों को शुद्ध उच्चारण और लय, ताल से पढ़ने की क्षमता।
3. सभी प्रकार के संस्कृत गद्य, पद्य को समझने की क्षमता।
4. मातृभाषा तथा अन्य परिचित भाषाओं से संस्कृत में सुगमता से अनुवाद करने की क्षमता।
5. सामान्य विषयों पर संस्कृत में पत्र प्रस्ताव लिखने की क्षमता।
6. संस्कृत में श्लोकों, पद्यांशों की रचना करने की क्षमता।
7. संस्कृत में मौखिक भावाभिव्यक्ति की क्षमता।
8. संस्कृत रचनाओं का आलोचनात्मक विवेचन करने की क्षमता।
9. संस्कृत भाषा तथा साहित्य से सम्बन्धित विषयों पर शोध कार्य करने की क्षमता।

पाठशालीय पद्धति के अनुसार संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य

पाठशालीय पद्धति स्कूल कालेज पद्धति से भिन्न है। पाठशालीय पद्धति के अन्तर्गत शिक्षण का स्तर ऊँचा रहता है। माध्यम भी प्रायः संस्कृत होता है। इस पद्धति के अनुसार संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य स्तरानुसार इस प्रकार होंगे:

प्रारम्भिक स्तर–प्राज्ञ अथवा प्रथमा

1. सरल संस्कृत को समझने की क्षमता।
2. सरल संस्कृत में बोलने की क्षमता।
3. सरल श्लोकों, पद्यांशों का अन्वय करने तथा उनकी व्याख्या करने की क्षमता।
4. सरल संस्कृत से मातृभाषा में तथा मातृभाषा से सरल संस्कृत में अनुवाद करने की क्षमता।
5. व्याकरण में सन्धि, समास, कारक, तद्धित, कृदन्त, शब्दरूपों तथा धातुरूपों का ज्ञान।
6. अलंकारों और छन्दों का साधारण ज्ञान।

माध्यमिक स्तर—विशारद अथवा पूर्व मध्यमा-उत्तर मध्यमा

1. सरल एवं कठिन गद्य खण्डों को समझने की क्षमता।
2. सरल एवं कठिन पद्य खण्डों का अन्वय करने तथा उनकी व्याख्या करने की क्षमता।
3. मातृभाषा से संस्कृत में तथा संस्कृत से मातृभाषा में सरल एवं कठिन अनुवाद करने की पूर्ण क्षमता।
4. संस्कृत भाषा में बोलने और लिखने की क्षमता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

5. व्याकरण प्रक्रिया का पूर्ण ज्ञान।
6. अलंकार तथा छन्दों का पूर्ण ज्ञान।
7. संस्कृत में पत्र प्रस्ताव लिखने की क्षमता।
8. श्लोकों तथा पद्यांशों की रचना करने की क्षमता।

उच्च स्तर—शास्त्री तथा आचार्य

1. संस्कृत में मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति की पूर्ण क्षमता।
2. संस्कृत गद्य, पद्य, रचना करने की क्षमता।
3. संस्कृत में धारा प्रवाह गति से व्याख्यान करने की क्षमता।
4. संस्कृत में दीर्घ अनुच्छेदों का सारांश लिखने की क्षमता।
5. संस्कृत ग्रन्थों का आलोचनात्मक विवेचन तथा टीका-टिप्पणी करने की पूर्ण क्षमता।
6. शोधकार्य करने की पूर्ण क्षमता।
7. शास्त्रार्थ करने की क्षमता।
8. संस्कृत भाषा में पूर्ण पाण्डित्य अर्जन।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य मातृभाषा तथा अंग्रेजी भाषा के शिक्षण के उद्देश्यों से किस दृष्टि से भिन्न होंगे ?
2. संस्कृत शिक्षण के सामान्य उद्देश्य बताएँ।
3. संस्कृत शिक्षण में ग्रहण के उद्देश्य से आप क्या समझते हैं ?
4. अभिव्यक्ति के उद्देश्य से क्या अभिप्राय है ?
5. संस्कृत शिक्षण के सांस्कृतिक उद्देश्य से क्या भाव है ?
6. संस्कृत शिक्षण के रचनात्मक उद्देश्य के अन्तर्गत आप विद्यार्थियों को क्या पढ़ाएँगे ?
7. संस्कृत-शिक्षण के रसानुभूति तथा मनोविनोद सम्बन्धी उद्देश्य की व्याख्या करें :
8. संस्कृत शिक्षण के स्तरानुसार उद्देश्यों की क्या आवश्यकता है ?
9. स्कूल कालेज पद्धति के अनुसार संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य बताएँ।
10. पाठशालीय पद्धति के अनुसार संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य बताएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 6

संस्कृत शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त

किसी भी कार्य को करने से पूर्व जितना आवश्यक उसके उद्देश्य निर्धारित करना है उतना ही आवश्यक उस कार्य को करने की प्रक्रिया से सम्बद्ध सिद्धान्तों से अवगत होना है। प्रक्रिया से सम्बद्ध सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करने से उस प्रक्रिया का करना सुगम एव रोचक बनता है। भाषा शिक्षण भी एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के अपने सिद्धान्त हैं। अतः भाषा शिक्षण की प्रक्रिया आरम्भ करने से पूर्व भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों का जानना अत्यावश्यक है।

भाषा भावाभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन है। भाषा की अपनी विशेषताएँ हैं। इसमें परिवर्तन होता रहता है। भाषा अनुकरण और अभ्यास से सीखी जाती है। भाषा की ये विशेषताएँ संस्कृत भाषा पर भी उसी प्रकार घटित होती हैं जैसे किसी अन्य भाषा पर। संस्कृत शिक्षण के सिद्धान्त भी वही हैं जो किसी अन्य भाषा के। अतः संस्कृत शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त निम्नांकित हैं।

1. स्वाभाविकता का सिद्धान्त

भाषा सीखना एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। भाषा सीखने के लिए शारीरिक एवं मानसिक क्षमताएँ बच्चे में जन्म से ही होती हैं। उन्हें केवल विकसित करना होता है। आरम्भ में शिशु अनुकरण द्वारा अपनी माता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के सम्पर्क से मातृभाषा सीखता है। शिशु का ज्यों-ज्यों सम्पर्क क्षेत्र बढ़ता है, उसे भाषा का मौखिक ज्ञान अधिकाधिक होता है। विधिवत् शिक्षारम्भ से पूर्व भी शिशु की स्वाभाविक प्रवृत्ति उसे भाषा सीखने के लिए प्रेरित करती है। इसी स्वाभाविक प्रवृत्ति से प्रेरित होकर शिशु मातृभाषा के अतिरिक्त और भाषाएँ भी सीख लेता है।

भाषा सीखने की इस स्वाभाविक प्रवृत्ति का उपयोग संस्कृत शिक्षण में सहायक होगा। कक्षा के भीतर तथा बाहर ऐसा वातावरण हो जिसमें बच्चे स्वभावतः संस्कृत बोलने के लिए प्रेरित हों। संस्कत अध्यापक विद्यार्थियों के समक्ष सरल संस्कृत बोलें। विद्यार्थियों को सरल सस्कृत में अभिव्यक्ति करने के लिए उत्साहित किया जाए। विद्यार्थियों को श्लोक तथा सूक्तियाँ स्मरण करने के लिए प्रेरित किया जाए। दीवारों पर लिखी संस्कृत सूक्तियों तथा टँगे हुए चार्टों से भी विद्यार्थियों को संस्कृत सीखने के लिए प्रेरणा मिलेगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

2. रुचि का सिद्धान्त

विद्यालय का वातावरण ऐसा हो जिसमें विद्यार्थी रुचि दिखाएँ। विद्यार्थी विद्यालय में अधिकाधिक रहने के लिए रुचि दिखाएँ। तभी वे भाषा का अधिक उपयोग कर सकेंगे और भाषा सीख सकेंगे।

संस्कृत भाषा बच्चों की मातृभाषा नहीं है और न ही यह बोलचाल की सामान्य भाषा है। इसका सीखना विद्यालयों में ही सम्भव हो सकता है। अतः यह आवश्यक है कि विद्यालयों में विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाते समय रुचि के सिद्धान्त का ध्यान रखा जाए। यदि संस्कृत शिक्षण रोचक नहीं होगा तो विद्यार्थी आगे चल कर इसका पठन छोड़ देंगे।

अन्य विषयों की भान्ति संस्कृत के शिक्षण में श्रव्य दृश्य सामग्री का उपयोग किया जाए। चार्टों तथा चित्रों का प्रयोग किया जाए। श्यामपट का अधिकाधिक उपयोग किया जाए। संस्कृत पाठ्यपुस्तक रोचक एवं आकर्षक हो। यह और भी आवश्यक है कि संस्कृत अध्यापक की संस्कृत शिक्षण में रुचि हो। संस्कृत अध्यापक का विद्यार्थियों के प्रति व्यवहार भी सहानुभूतिपूर्ण हो। वह उनको रुचि से पढ़ाएँ।

3. अभ्यास का सिद्धान्त

भाषा एक कला है। अन्य कलाओं की भाँति इसे सीखने के लिए भी अभ्यास की आवश्यकता है। सस्कृत भाषा विद्यार्थियों की मातृभाषा नहीं है। अतः इसे सीखने के लिए अभ्यास और भी आवश्यक होगा संस्कृत शिक्षण के लिए अल्पाभ्यास सहायक न होगा। इसके लिए दीर्घकालिक अभ्यास की आवश्यकता होगी। साथ ही अभ्यास मौखिक एवं लिखित दोनों प्रकार का होना चाहिए।

ऋ, ष, क्ष, ज्ञ जैसी संस्कृत ध्वनियों का उच्चारण सरल नहीं हैं। इन संस्कृत ध्वनियों के उच्चारण के लिए अभ्यास की आवश्यकता होगी। सस्कृत गद्य तथा पद्य शिक्षण में उच्चारण का अभ्यास आवश्यक होगा। संस्कृत व्याकरण तथा रचना शिक्षण में भी अभ्यास आवश्यक होगा।

4. मौखिक कार्य का सिद्धान्त

भाषा को सीखने का काम कानों और जिह्वा से आरम्भ होता है। शिशु आरम्भ में सुनने और बोलने का अभ्यास करता है। अतः भाषा शिक्षण में पहले मौखिक कार्य करवाया जाए। तत्पश्चात् लिखित कार्य।

संस्कृत पर्याप्त समय तक मौखिक भाषा रही। इसका लिखित रूप बाद में सामने आया। अन्य भाषाओं की भाँति संस्कृत शिक्षण के लिए भी पहले मौखिक कार्य करवाया जाए। विद्यार्थी संस्कृत शब्दावली तथा संस्कृत भाषा की रचना से परिचित होंगे। कुछ समय पश्चात् लिखित कार्य करवाया जाए। संस्कृत का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिखित कार्य पूर्वकृत मौखिक कार्य पर आधारित हो।

5. सक्रियता का सिद्धान्त

सक्रियता का सिद्धान्त शिक्षण की प्रक्रिया में सहायक होता है। निष्क्रिय विद्यार्थी शिक्षा-ग्रहण में पिछड़ जाता है। सक्रियता से मानसिक विकास तीव्र गति से होता है। भाषा शिक्षण के लिए भी आवश्यक है कि विद्यार्थियों को अधिकाधिक सक्रिय बनाया जाए।

सस्कृत अध्यापक स्वयं ही वक्ता न बना रहे। विद्यार्थियों को भी बोलने का अवसर दे। वह विद्यार्थियों को सरल संस्कृत में अभिव्यक्ति के लिए उत्साहित करे। वह विद्यार्थियों को पठित पाठ के विषय में अधिकाधिक प्रश्न करने का अवसर दे। संस्कृत शिक्षण सम्बन्धी पाठान्तर क्रियाओं में सक्रिय भाग लेने के लिए तथा पुस्तकालय की सरल संस्कृत पुस्तकों को पढ़ने के लिए विद्यार्थियों को अधिकाधिक उत्साहित किया जाए।

6. अनुपात तथा क्रम का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त से अभिप्राय है कि भाषा शिक्षण सम्बन्धी विभिन्न उद्देश्यों में उचित अनुपात रखा जाए अर्थात् कुछ पर अत्यधिक बल देना और कुछ की अवहेलना कर देना ठीक नहीं। साथ ही उद्देश्यों पर क्रमानुसार बल दिया जाए अर्थात् जिस उद्देश्य की पूर्ति पहले आवश्यक हो उस पर पहले बल दिया जाए और जिस उद्देश्य की पूर्ति की आवश्यकता बाद में हो उस पर बाद में बल दिया जाए।

संस्कृत जनभाषा नहीं है। अतः इसके शिक्षण में अभिव्यक्ति के उद्देश्य की अपेक्षा ग्रहण के उद्देश्य पर पहले और अधिक बल दिया जाए। अभिव्यक्ति के उद्देश्य पर बाद में और अपेक्षाकृत कम बल दिया जाए। साथ ही संस्कृत के मौखिक कार्य पर पहले और लिखित कार्य पर बाद में बल दिया जाए।

7. बहुमुखी विधि का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त से तात्पर्य है कि एक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उस उद्देश्य से सम्बन्धित सभी विषयों पर ध्यान दिया जाए अर्थात् बहुमुखी प्रयत्न किया जाए। तभी उस उद्देश्य को पूर्णतया प्राप्त किया जा सकेगा। विद्यार्थियों को कारण तथा अपादान कारकों का अन्तर समझाने के लिए इन कारकों से सम्बद्ध कितने ही उदाहरण उनके समक्ष रखे जाएँगे। विद्यार्थियों को भी ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए उत्साहित किया जाएगा। विद्यार्थियों का ध्यान पाठ्यपुस्तक में आए ऐसे उदाहरणों की ओर भी आकर्षित किया जाएगा। इस सम्बन्ध में मौखिक कार्य के साथ लिखित कार्य भी करवाना होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

8. अन्य सामान्य सिद्धान्त—शिक्षण सूत्र

शिक्षण सम्बन्धी कुछ और सामान्य सिद्धान्त हैं जो **शिक्षणसूत्र** के नाम से जाने जाते हैं। **शिक्षण सूत्र** सम्बन्धी ये सिद्धान्त अन्य भाषाओं की भाँति संस्कृत भाषा के शिक्षण पर भी प्रयुक्त होते हैं। ये सामान्य सिद्धान्त इस प्रकार हैं :

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर

पठनारम्भ से पूर्व बच्चे कुछ सामान्य ज्ञान प्राप्त कर चुके होते हैं। इसी सामान्य ज्ञान को आधार मान कर पठनारम्भ किया जाता है। इसी प्रकार नया पाठ पढ़ाने के लिए नये ज्ञान का पूर्व पठित पाठ से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। ऐसा करने से बच्चे नया ज्ञान सुगमता से प्राप्त कर लेते हैं। बच्चे नया पाठ पढ़ने के लिए रुचि दिखाते हैं। 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' नामक सिद्धान्त का अनुसरण करने से पाठ्य विषय विशृंखल प्रकरणों का समूह नहीं बनता प्रत्युत एक अखण्ड इकाई बन जाता है। संस्कृत में लट् लकार पढ़ा लेने पर लङ् लकार का बोध कराना सुगम होगा। स्वर सन्धि के पश्चात् ही व्यंजन सन्धि का ज्ञान कराना चाहिए। व्यंजन सन्धि पढ़ा लेने पर ही विसर्ग सन्धि का ज्ञान कराना चाहिए।

2. सरल से कठिन की ओर

यह सिद्धान्त 'ज्ञात से अज्ञात की ओर', नामक उपर्युक्त सिद्धान्त से मिलता-जुलता है। ज्ञात विषय सरल होता है और अज्ञात कठिन। अध्यापक सरल विषय पहले पढ़ाए और कठिन विषय बाद में। संस्कृत शिक्षण करते समय पहले संस्कृत के सरल वाक्यों का बोध कराया जाए और तत्पश्चात् बड़े तथा कठिन वाक्यों का। उपमा अलंकार पढ़ाने के पश्चात् ही रूपक अलंकार पढ़ाया जाए। अनुष्टुप् छन्द के उपरान्त मन्दाक्रान्ता छन्द पढ़ाया जाए।

3. स्थूल से सूक्ष्म की ओर

स्थूल विषयों का ज्ञान प्राप्त करना सुगम होता है। जबकि सूक्ष्म विषयों का कठिन। अतः पहले स्थूल विषय पढ़ाये जाएँ और तदुपरान्त सूक्ष्म। संस्कृत शब्दावली सिखाते समय नये शब्दों का ज्ञान चित्रों के माध्यम से कराया जाए। संस्कृत में वर्णनात्मक निबन्ध लिखवाने से पूर्व विद्यार्थियों को वर्णनात्मक विषयों से सम्बन्धित स्थान तथा पदार्थ देखने का अवसर दिया जाए। वर्णनात्मक विषयों के पश्चात् ही भावनात्मक विषयों पर निबन्ध लिखवाए जाएँ क्योंकि वर्णनात्मक निबन्धों का सम्बन्ध स्थूल वस्तुओं से तथा भावात्मक निबन्धों का सम्बन्ध सूक्ष्म भावों से होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

4. पूर्ण से अंश की ओर

हम साधारणतः पहले किसी वस्तु के समग्र रूप को देखते हैं। तत्पश्चात् ध्यान उसके अंशों की ओर जाता है। शिक्षण में भी यही सिद्धान्त लागू होता है। बच्चों को किसी वस्तु का पहले पूर्ण चित्र दिखाया जाए। बाद में उस चित्र के अंशों की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया जाए। विद्यार्थियों के समक्ष पहले 'पठित' रूप प्रस्तुत करने के पश्चात् 'पठ्' धातु और उसके साथ लगने वाले प्रत्यय का परिचय कराया जाए। इसी प्रकार पहले अपठत्, पठिष्यति रूप प्रस्तुत किये जाएँ और तत्पश्चात् इन रूपों के अंशों का परिचय कराया जाए।

5. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर

यह सिद्धान्त 'पूर्ण से अंश की ओर' नामक उपर्युक्त सिद्धान्त का पूरक है। इस सिद्धान्त की सहायता से विद्यार्थी किसी अवयवी के विभिन्न अवयवों को संश्लिष्ट करना सीखेंगे। विद्यार्थियों को इस सिद्धान्त के माध्यम से सन्धि, समास और वाक्य रचना सम्बन्धी कार्य कराया जा सकता है।

6. अनुभव से तर्क की ओर

विद्यार्थियों द्वारा अनुभूत विषयों को शिक्षण का आधार बनाया जाए। अनुभूत विषयों पर आधारित ज्ञान स्थायी और अधिक स्पष्ट होगा। 'उद्यानम्' नामक संस्कृत पाठ विद्यार्थियों के उद्यान सम्बन्धी अनुभव के आधार पर पढ़ाया जाना चाहिए। 'होलिकोत्सवः' पाठ बालकों के 'होली' सम्बन्धी पूर्व अनुभव के आधार पर पढ़ाया जाए।

7. विशेष से सामान्य की ओर

इस सिद्धान्त को 'उदाहरण से नियम की ओर' भी कहा जा सकता है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत पहले उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं और तत्पश्चात् नियम। राम+आदि=रामादि, हिम+आलयः=हिमालयः, कपि+ईशः=कपीशः; आदि विशेष उदाहरणों द्वारा दीर्घ सन्धि सम्बन्धी सामान्य नियम समझाया जाना इस नियम का एक उदाहरण है। द्वन्द्व समास सम्बन्धी नियम बताने से पूर्व इस समास से सम्बन्धित उदाहरण प्रस्तुत किये जाएँ।

8. आगमन से निगमन की ओर

यह सिद्धान्त शिक्षण की दृष्टि से बड़ा उपयोगी है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत उदाहरणों से नियम की ओर और फिर नियम से उदाहरणों की ओर गमन किया जाता है। ऐसा करने से विद्यार्थियों का ज्ञान परिपक्व एवं स्थायी बनता है। व्याकरण शिक्षण में तो यह सिद्धांत अत्यन्त उपयोगी है। संस्कृत व्याकरण शिक्षण के लिए इस सिद्धान्त का अनुसरण अवश्यमेव किया जाना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

9. अनिश्चित से निश्चित की ओर

बालकों का आरम्भिक ज्ञान अनिश्चित और अस्पष्ट होता हैं। इसे निश्चित और स्पष्ट बनाने के लिए इस सिद्धान्त का अनुसरण किया जाना चाहिए।

विद्यार्थी 'राम' और 'फल' शब्दों के रूपों को सभी विभक्तियों में एक जैसा समझ बैठते हैं। उन्हें इनका अन्तर बताना होगा। जो विद्यार्थी 'साधु' तथा 'धेनु' शब्दों के रूप एक जैसे समझें उन्हें वास्तविकता से परिचित कराना होगा। इसी प्रकार विद्यार्थियों के संस्कृत शिक्षण से सम्बद्ध अन्य विषयों के ज्ञान को अनिश्चित से निश्चित बनाना होगा।

उपर्युक्त सभी सिद्धान्तों की सार्थकता इस सिद्धान्तों का संस्कृत अध्यापक द्वारा ठीक प्रकार से अनुसरण किये जाने पर निर्भर करेगी।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत शिक्षण के लिए संस्कृत शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों को जानना क्यों आवश्यक है ?
2. संस्कृत शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त कौन-कौन से हैं ?
3. संस्कृत शिक्षण में स्वाभाविकता के सिद्धान्त का क्या महत्त्व है ?
4. रुचि के सिद्धान्त से क्या भाव है ? इसका उपयोग आप संस्कृत शिक्षण में किस प्रकार करेंगे ?
5. अभ्यास का सिद्धान्त संस्कृत शिक्षण के लिए क्यों अधिक आवश्यक है ?
6. संस्कृत शिक्षण में आप 'मौखिक कार्य' के सिद्धान्त का किस प्रकार उपयोग करेंगे ?
7. संस्कृत शिक्षण में सक्रियता का सिद्धान्त किस प्रकार सहायक होगा ?
8. 'अनुपात तथा क्रम' के सिद्धान्त का आप संस्कृत शिक्षण में उपयोग कैसे करेंगे ?
9. बहुमुखी विधि का सिद्धान्त क्या हैं ? इसकी संस्कृत शिक्षण में उपयोगिता बताएँ।
10. 'शिक्षण सूत्र' से क्या अभिप्राय है ? इसके अन्तर्गत आने वाले सिद्धान्तों की संस्कृत शिक्षण में उपयोगिता सिद्ध करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 7

संस्कृत शिक्षण की विभिन्न पद्धतियाँ

प्राचीन काल में संस्कृत शिक्षण की केवल एक पद्धति थी—'पंडित शैली'। इसी परम्परागत पद्धति द्वारा पाठशालाओं, आश्रमों, गुरुकुलों तथा मठों में संस्कृत की शिक्षा दी जाती थी। भारत में अंग्रेज़ी शासन काल में शिक्षा प्रणाली परिवर्तित हुई। संस्कृत शिक्षण पद्धति पर भी प्रभाव पड़ा। मनोविज्ञान ने भी शिक्षण प्रणाली को प्रभावित किया। शिक्षण की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नताओं और रुचियों को महत्त्व दिया जाने लगा। फलस्वरूप संस्कृत शिक्षण के लिए आधुनिक काल में नवीन पद्धतियाँ सुझाई गईं।

संस्कृत शिक्षण की प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षण पद्धतियों का विवरण इस प्रकार है।

1. पाठशाला पद्धति

इस पद्धति को 'पण्डित शैली' 'तथा' व्याकरण पद्धति के नाम से भी जाना जाता है। यह पद्धति प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति का प्रतीक है। अतः संस्कृत शिक्षण की यही प्राचीनतम प्रणाली है। पाठशालाओं, आश्रमों, गुरुकुलों तथा मठों में इसी पद्धति द्वारा संस्कृत शिक्षण कराया जाता था। आजकल भी जिन संस्थाओं में संस्कृत शिक्षण प्राचीन पद्धति के अनुसार किया जा रहा है वहाँ इस पद्धति का किसी न किसी रूप में अनुसरण किया जा रहा है।

पाठशाला पद्धति के अन्तर्गत संस्कृत शिक्षण व्याकरण के माध्यम से कराया जाता है। इसलिए इसे व्याकरण पद्धति कहा जाता है। संस्कृत शिक्षण व्याकरण शिक्षण से आरम्भ किया जाता है। विद्यार्थियों को लघु सिद्धान्त कौमुदी, सारस्वत चन्द्रिका, शब्द रूपावली, धातु रूपावली आदि जैसे व्याकरण ग्रन्थों का अध्ययन करना होता है। विद्यार्थियों को व्याकरण के आरम्भिक ज्ञान के पश्चात् व्याकरण का गहन अध्ययन करना होता है। साथ-साथ साहित्य की अन्य विधाओं का भी ज्ञान कराया जाता है।

पाठशाला पद्धति के दोष

पाठशाला पद्धति के आलोचक इस पद्धति में निम्नांकित दोष बताते हैं :

1. यह पद्धति मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। इसमें विद्यार्थियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की मानसिक क्षमताओं तथा रुचि-विभिन्नताओं की उपेक्षा की जाती है।

2. यह पद्धति नीरस है। विद्यार्थियों को व्याकरण का शुष्क ज्ञान प्राप्त करने के लिए बाध्य किया जाता है।

3. इस पद्धति में भाषा के अन्य पक्षों की अवहेलना की जाती है।

4. स्मरण शक्ति पर अधिक बल देने के कारण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध हो जाता है। कल्पना एवं सोचने की शक्ति का ह्रास होता है।

5. सामाजिक दृष्टि से विद्यार्थी अविकसित रह जाते हैं।

पाठशाला पद्धति के गुण

परन्तु पाठशाला पद्धति के निम्नलिखित गुणों की भी अवहेलना नहीं की जा सकती :

1. इस पद्धति द्वारा विद्यार्थी व्याकरण का गहन एवं उच्च ज्ञान प्राप्त करते है। व्याकरण भाषा का मूल है।

2. संस्कृत व्याकरण इतना जटिल है कि उसका पूर्ण ज्ञान इस पद्धति के बिना और किसी पद्धति के माध्यम से सम्भव नहीं।

3. इस पद्धति द्वारा पढ़ने वाले विद्यार्थी संस्कृत भाषा के पूर्ण पण्डित बनते हैं। व्याकरण की दृष्टि से उनकी भाषा सर्वतः शुद्ध होती है।

4. इस पद्धति द्वारा ज्ञान प्राप्त कर लेने से विद्यार्थी संस्कृत भाषा के अन्य पक्षों का सुगमता से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

संशोधन की आवश्यकता

पाठशाला पद्धति अब भी पाठशालाओं तथा गुरुकुलों में प्रचलित है। मनोविज्ञान के सिद्धान्त से मेल न रखने पर भी इस पद्धति का अपना महत्त्व है। सामान्य अनुभव इस बात का साक्षी है कि जिन पण्डितों ने इस पद्धति से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की है उनकी विद्वत्ता उच्च कोटि की है।

जो विद्यार्थी व्याकरण के माध्यम से संस्कृत पढ़ना चाहें उन्हें इस पद्धति द्वारा पढ़ने की सुविधा अवश्य प्राप्त होनी चाहिए। जिन पाठशालाओं तथा गुरुकुलों में इस पद्धति को अपनाया जाए वहाँ आवश्यकतानुसार इस पद्धति में सुधार किया जाए। सुधार परिस्थितियों के अनुसार हितकर होगा। इस पद्धति में निम्नलिखित संशोधन अपेक्षित हैं :

1. व्याकरण पर केवल उतना बल दिया जाए जितना आवश्यक हो।

2. रटन्त प्रणाली का परिहार किया जाए। व्याकरण का व्यावहारिक ज्ञान कराया जाए।

3. व्याकरण शिक्षण को वैज्ञानिक के स्थान पर मनोवैज्ञानिक बनाया जाए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

4. व्याकरण के साथ-साथ संस्कृत भाषा तथा साहित्य के अन्य पक्षों को भी पढ़ाया जाए।

5. विद्यार्थियों को अन्य आधुनिक विषय भी पढ़ाए जाएँ।

6. विद्यार्थियों के सामाजिक पक्ष के विकास के लिए पाठान्तर क्रियाओं को समुचित स्थान दिया जाए।

7. श्रव्य दृश्य सहायक साधनों के प्रयोग से संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाया जाए।

संशोधन के पश्चात् भी यह पद्धति सामान्य स्कूलों तथा कालेजों के लिए उपयुक्त नहीं होगी क्योंकि वहाँ विर्थियों को संस्कृत के अतिरिक्त और कई विषय पढ़ने होते हैं। हाँ, पाठशालाओं तथा गुरुकुलों में यह पद्धति अवश्यमेव उपयोगी सिद्ध होगी।

2. भण्डारकर पद्धति

इस पद्धति का दूसरा नाम व्याकरण-अनुवाद पद्धति है। इस पद्धति का अन्वेषण डॉ० रामाकृष्ण गोपाल भण्डारकर द्वारा किया गया था। उन्हीं के नाम से यह पद्धति प्रसिद्ध है। डॉ० भण्डारकर भारतीय विद्या, संस्कृत तथा प्राकृत भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित थे। डॉ० भण्डारकर ने संस्कृत शिक्षण की इस पद्धति में पाश्चात्य शिक्षण पद्धति का समावेश किया। इस पद्धति में व्याकरण तथा अनुवाद के अभ्यास से संस्कृत शिक्षण पर बल दिया जाता है।

भण्डारकर पद्धति के दोष

भण्डारकर पद्धति के आलोचक इस पद्धति में निम्नांकित दोष बताते हैं :

1. इस पद्धति में व्याकरण-अनुवाद पर इतना बल दिया जाता है कि भाषा शिक्षण के अन्य अंगों-उच्चार, कविता का रसास्वादन, रचना कार्य तथा मौखिक कार्य—की अवहेलना हो जाती है।

2. डॉ० भण्डारकर द्वारा इस पद्धति के अन्तर्गत लिखी गई पुस्तकों के पाठों का क्रमविधान दोषपूर्ण है। विद्यार्थियों को जिन विषयों का ज्ञान आरम्भ में कराना चाहिए उनका बाद में कराया गया है और जिनका बाद में कराना चाहिए उनका पहले कराया गया है।

भण्डारकर पद्धति के गुण

इस पद्धति में कुछ विशेषताएँ भी है। वे इस प्रकार हैं:

1. इस पद्धति में रटन्त प्रणाली को उत्साहित करने की अपेक्षा विद्यार्थियों की बोध शक्ति को जाग्रत करने का प्रयास किया जाता है।

2. व्याकरण के नियमों का इस प्रकार वर्गीकरण किया गया है कि संस्कृत पठनारम्भ-कर्ता विद्यार्थी संस्कृत का ज्ञान सुगमता से प्राप्त कर लेते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

3. इस पद्धति में 'सरल से कठिन की ओर', 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' आदि मनोवैज्ञानिक नियमों का अनुसरण किया गया है।

3. पाठ्यपुस्तक पद्धति

संस्कृत शिक्षण के लिए इस पद्धति का अधिक प्रचलन है। आजकल स्कूलों तथा कालेजों में संस्कृत शिक्षण के लिए इसी पद्धति का प्रयोग किया जा रहा है। इस पद्धति के अन्तर्गत संस्कृत शिक्षण निर्धारित पाठ्यपुस्तक के माध्यम से कराया जाता है। निर्धारित पाठ्यपुस्तक की सामग्री कक्षा के स्तर के अनुरूप होती है।

इस पद्धति के अन्तर्गत संस्कृत पाठों का मातृभाषा में अनुवाद किया जाता हैं। शब्दार्थ और वाक्यार्थ बताए जाते हैं। प्रसंगानुसार व्याकरण का ज्ञान कराया जाता है। पाठ्यपुस्तक को प्रमुखता दी जाती है। परीक्षा-प्रश्नपत्र भी पाठ्यपुस्तक की सामग्री पर आधारित होता है।

पाठ्यपुस्तक पद्धति के दोष

इस पद्धति में निम्नांकित दोष हैं :

1. संस्कृत शिक्षण केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित रहता है। विद्यार्थियों का संस्कृत ज्ञान व्यापक एवं गहन नहीं हो पाता।

2. शब्दार्थ तथा वाक्यार्थ पर अधिक बल दिया जाता है। मौखिक तथा लिखित कार्य अति सीमित होता है।

3. इस पद्धति में अध्यापक को अधिक और विद्यार्थियों को कम काम करना पड़ता है।

4. विद्यार्थियों को सक्रिय नहीं बनाया जाता। इसलिए उनकी रुचि पाठ में कम होती है।

5. इस पद्धति में भी विद्यार्थियों को रटना अधिक पड़ता है। उनके मानसिक विकास में बाधा पड़ती है।

पाठ्यपुस्तक पद्धति के गुण

1. संस्कृत अध्यापक द्वारा आदर्श वाचन तथा विद्यार्थियों द्वारा सस्वर वाचन के फलस्वरूप विद्यार्थियों का उच्चारण सुधरता है।

2. शब्दावली का ग्रहण सुगम है।

3. विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के रूप में संस्कृत अध्ययन के लिए साधन सुग्राह्य हो जाता है।

4. पाठ्यपुस्तक द्वारा पढ़ाने से संस्कृत शिक्षण की प्रक्रिया में नियमितता-तथा समरूपता आती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

4. प्रत्यक्ष पद्धति

इस पद्धति को निर्बाध पद्धति भी कहा जाता है। यह पद्धति अनुवाद पद्धति के सर्वथा विपरीत है। प्रत्यक्ष पद्धति के अन्तर्गत संस्कृत भाषा का ज्ञान संस्कृत के माध्यम से कराया जाता है। श्रेणी-कक्ष का वातावरण ऐसा हो कि जिसमें विद्यार्थियों को संस्कृत सुनने का अधिकाधिक अवसर मिले। अध्यापक संस्कृत की पाठ्यपुस्तक को संस्कृत के माध्यम से पढ़ाए। पाठ्य वस्तु का मातृभाषा में अनुवाद न करे। शिक्षण के समय प्रश्नोत्तर का माध्यम भी संस्कृत ही हो।

प्रत्यक्ष पद्धति के दोष

इस पद्धति के विपक्ष में निम्नांकित तर्क दिए जाते हैं :

1. प्रत्यक्ष पद्धति द्वारा संस्कृत शिक्षण की गति धीमी होती है।

2. प्रत्यक्ष पद्धति द्वारा केवल वही भाषा पढ़ाई जा सकती है जो विद्यार्थियों के बोलचाल की सामान्य भाषा हो। अतः प्रत्यक्ष पद्धति द्वारा संस्कृत शिक्षण में सफलता अनिश्चयात्मक है।

3. बहुत कम संस्कृत अध्यापक संस्कृत का मौखिक प्रयोग करने के लिए सक्षम होते हैं। इस दृष्टि से भी प्रत्यक्ष पद्धति द्वारा संस्कृत शिक्षण सफल नहीं हो पाएगा।

प्रत्यक्ष पद्धति के गुण

परन्तु इस पद्धति के निम्नलिखित कुछ गुण भी हैं :

1. प्रत्यक्ष पद्धति द्वारा संस्कृत शिक्षण संस्कृत के माध्यम से कराया जाएगा। अतः विद्यार्थियों का संस्कृत का ज्ञान परिपक्व एवं स्थायी होगा।

2. विद्यार्थियों की संस्कृत में मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी कुशलता बढ़ेगी।

3. शिक्षा सम्बन्धी सारा कार्य संस्कृत में होने के कारण संस्कृत शिक्षण का स्तर उन्नत होगा।

5. हर्बार्टीय सोपान पद्धति

शिक्षण की यह एक विदेशी पद्धति है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक हर्बार्ट के सिद्धान्तों के आधार पर उसके शिष्यों ने इस पद्धति को प्रस्तुत किया था। अन्य विषयों की भाँति संस्कृत शिक्षण के लिए भी इसका उपयोग किया जाने लगा है। इस पद्धति के निम्नांकित पाँच पद हैं :

1. **प्रस्तावना :** इस पद में विद्यार्थियों को नवीन पाठ ग्रहण के लिए तैयार किया जाता है।

2. **प्रस्तुतीकरण :** इस पद के अन्तर्गत अध्यापक विषय वस्तु को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

3. **तुलना** : इस पद के अन्तर्गत विद्यार्थियों द्वारा पूर्व प्राप्त ज्ञान की तुलना नवीन ज्ञान से की जाती है। विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान तथा कठिनाइयों का निवारण भी इस पद के अन्तर्गत दिया जाता है।

4. **सामान्यीकरण** : तुलना के उपरान्त पाठ्य वस्तु से सम्बद्ध सामान्य सिद्धान्त निर्धारित किए जाते हैं।

5. **प्रयोग** : निर्धारित सामान्य सिद्धान्तों का विद्यार्थियों द्वारा पुनः प्रयोग किया जाता है। ऐसा करने से पठित ज्ञान और पुष्ट हो जाता है।

हर्बार्टीय सोपान पद्धति के दोष

हर्बार्ट पद्धति में भी कुछ दोष हैं। ये दोष इस प्रकार हैं :

1. यह पद्धति सभी विषयों के शिक्षण के लिए प्रयुक्त हो सकती है परन्तु संस्कृत शिक्षण के लिए नहीं।

2. यह पद्धति सभी पाठों के लिए भी नहीं अपनाई जा सकती। सौन्दर्यानुभूति, रचना तथा पुनरावृत्ति सम्बन्धी पाठों के लिए हर्बार्टीय पद्धति उपयुक्त नहीं है।

हर्बार्टीय पद्धति के गुण

इस पद्धति के निम्नांकित गुण हैं :

1. इस पद्धति का सबसे बड़ा गुण यह है कि यह मनोवैज्ञानिक है। इसमें आगमन तथा निगमन दोनों प्रणालियों का समावेश है। इस पद्धति में चार पद आगमन प्रणाली के और एक पद निगमन प्रणाली का है। अतः यह पद्धति विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप है।

2. इसमें रटने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि नियम विद्यार्थियों की सहायता से निकलवाए जाते हैं।

3. इस पद्धति द्वारा प्राप्त ज्ञान स्थायी एवं परिपक्व होता है।

6· मूल्यांकन पद्धति

आधुनिक शिक्षा में मूल्यांकन का नवीन दृष्टिकोण ग्रहण किया गया है। इसी आधार पर शिक्षण के लिए मूल्यांकन पद्धति का विकास किया गया है। मूल्यांकन से अभिप्राय है किसी वस्तु का मूल्य आंकना, महत्त्व जानना। इस पद्धति के अन्तर्गत उन्हीं विषयों को पढ़ाया जाता है जो उद्देश्य की दृष्टि से महत्त्व रखते हों। इस पद्धति के निम्नांकित पद हैं :

1. उद्देश्य,
2. व्यवहार रूप,
3. पाठ्य-बिन्दु,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

4. शिक्षक का कार्य,
5. छात्रों का कार्य और
6. मूल्यांकन ।

उपर्युक्त पद हर्बार्टीय सोपान पद्धति से मिलते-जुलते हैं। अन्तर केवल यह है कि मूल्यांकन पद्धति में यह देखा जाता है कि पाठ के उद्देश्य प्राप्त हुए हैं अथवा नहीं ।

मूल्यांकन पद्धति के दोष

आलोचकों का कथन है कि—

1. यह पद्धति व्यवहार्य नहीं है। प्रत्येक पाठ को इस पद्धति के पदों के अनुरूप ढालना कठिन है।

2, इस पद्धति के लिए अधिक समय और परिश्रम की आवश्यकता होती है।

3. प्रत्येक अध्यापक इतना कुशल नहीं होता कि वह इसका प्रयोग सफलता-पूर्वक कर सके।

मूल्यांकन पद्धति के गुण

1. केवल वही सामग्री पढ़ाई जाती है जो महत्त्व रखती है।
2. शिक्षण प्रणाली नियमित होती है।
3. अध्यापक तथा विद्यार्थियों के कार्य का साथ-साथ मूल्यांकन होता चलता है। शिक्षण सम्बन्धी त्रुटियों को साथ-साथ दूर किया जा सकता है।

7. अभीष्ट पद्धति—संयुक्त पद्धति

संस्कृत शिक्षण की उपर्युक्त छः पद्धतियों की उपयोगिता सीमित है। वाचन प्रक्रिया को शुद्ध एवं गतिमय बनाने के लिए पाठ्यपुस्तक पद्धति उपयोगी है। पाठ योजना की दृष्टि से हर्बार्टीय पद्धति उत्तम है। व्याकरण शिक्षण के लिए व्याकरण-अनुवाद पद्धति ठीक है। पाण्डित्य अर्जन हेतु पाठशाला पद्धति महत्त्व-पूर्ण है।

संस्कृत शिक्षण सम्बन्धी विषयों की विविधता एवं जटिलता को देखते हुए संस्कृत शिक्षण के लिए कोई भी एक पद्धति सम्पूर्ण नहीं कही जा सकती। आवश्यकतानुसार सभी पद्धतियों का उपयोग करना होगा। अतः संस्कृत शिक्षण के लिए एक ऐसी पद्धति की आवश्यकता है जिसमें संस्कृत शिक्षण की उपर्युक्त सभी पद्धतियों का समन्वय हो। ऐसी संयुक्त पद्धति ही संस्कृत शिक्षण की अभीष्ट पद्धति है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत शिक्षण की पद्धतियों के उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राचीन पद्धतियों में भी कुछ गुण हैं और आधुनिक पद्धतियाँ भी सर्वथा दोषमुक्त नहीं हैं। अतः प्राचीन तथा नवीन पद्धतियों के गुणों को लेकर संस्कृत शिक्षण के लिए एक संयुक्त पद्धति बनाना ही हितकर होगा।

आजकल स्कूलों में पाठ्यपुस्तक पद्धति अधिक प्रचलित है। वर्तमान परिस्थितियों में यही पद्धति उपयोगी है परन्तु इसको दोषमुक्त बनाने की आवश्यकता है। शब्दार्थ और वाक्यार्थ के साथ-साथ भावार्थ तथा सौन्दर्यानुभूति को भी महत्त्व दिया जाए। संस्कृत के माध्यम से संस्कृत शिक्षण कठिन है। अतः पाठ्यपुस्तक पढ़ाने के लिए मातृभाषा का अवलम्बन किया जाए परन्तु विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल संस्कृत में मौखिक कार्य अवश्य करवाया जाए। अनुवाद और व्याकरण संस्कृत शिक्षण के साधन है। अतः इन्हें इसी दृष्टि से महत्त्व दिया जाए। संस्कृत शिक्षण में मूल्यांकन के दृष्टिकोण को भी अपनाया जाए। इससे ज्ञात होता रहेगा कि संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य प्राप्त हो रहे हैं अथवा नहीं। पाठ्यपुस्तक पद्धति के साथ हर्बार्टीय पद्धति के पांच पदों का भी आवश्यकतानुसार समन्वय किया जाए।

संस्कृत पाठशालाओं तथा महाविद्यालयों की प्रारम्भिक कक्षाओं में संस्कृत शिक्षण के लिए उपर्युक्त संयुक्त पद्धति ठीक रहेगी। परन्तु इन संस्थाओं की उच्च कक्षाओं में प्रत्यक्ष पद्धति का भी उपयोग किया जा सकता है। इन सस्थाओं में व्याकरण पर केवल उतना बल दिया जाए जितना आवश्यक हो। सौन्दर्यानुभूति, रचना तथा आलोचना जैसे तत्त्वों की उपेक्षा न की जाए।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. शिक्षण पद्धति से क्या अभिप्राय है ? शिक्षण पद्धति की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?
2. संस्कृत शिक्षण की प्रमुख पद्धतियाँ कौन-कौन सी हैं ?
3. पाठशाला पद्धति से क्या भाव है ? संस्कृत शिक्षण के लिए यह कहाँ तक उपयोगी है ?
4. भण्डारकर पद्धति से क्या अभिप्राय है ? गुण-दोषों की दृष्टि से इसका विवेचन करें।
5. पाठ्यपुस्तक पद्धति की क्या विशेषताएँ हैं ? क्या यह सर्वथा दोषमुक्त है ?
6. प्रत्यक्ष पद्धति से आप क्या समझते हैं ? इसके गुण और दोष क्या हैं ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

7. हर्बार्टीय सोपान पद्धति की संस्कृत शिक्षण के लिए उपयोगिता सिद्ध करें।
8. मूल्यांकन पद्धति से क्या अभिप्राय है ? संस्कृत शिक्षण के लिए इस पद्धति को अपनाना कहाँ तक हितकर होगा ?
9. आपके विचार में संस्कृत शिक्षण के लिए कौन-सी पद्धति अधिक ठीक रहेगी ?
10. "संयुक्त पद्धति संस्कृत शिक्षण की अभीष्ट पद्धति है"—इस कथन पर अपने विचार प्रकट करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 8

उच्चारण-शिक्षण

संस्कृत शिक्षण में उच्चारण का महत्त्व

सभी भाषाओं में उच्चारण का महत्त्व है परन्तु संस्कृत भाषा में शुद्ध उच्चारण का अत्यधिक महत्त्व है। वेदाध्ययन के लिए शुद्ध उच्चारण पर विशेष बल दिया जाता था। ध्वनि शास्त्र का वेदांग के रूप में गहन अध्ययन किया जाता था। संस्कृत में शुद्ध उच्चारण की महत्ता का परिचय पाणिनि के इस श्लोक से मिलता है :

मन्त्रोहीनः स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥

अर्थात्—यदि स्वर अथवा वर्ण को विकृत कर किसी मन्त्र का अशुद्ध उच्चारण किया जाए तो वह वाणी का वज्र यजमान को उसी प्रकार मार डालता है जैसे स्वर को विकृत कर देने से इन्द्र का शत्रु वृत्रासुर मारा गया। इस मन्त्र में 'इन्द्रशत्रुः' शब्द में 'इ' पर बल देकर उच्चरित किया जाना चाहिए था परन्तु बल दिया गया 'शत्रुः' शब्द के 'श' पर। अशुद्ध उच्चारण से 'इन्द्रः यः शत्रुः सः' (इन्द्र जो शत्रु है वह) मारा जाए के स्थान पर अर्थ हो गया 'इन्द्रस्य शत्रुः' (इन्द्र का शत्रु) वृत्रासुर मारा जाए। पाणिनि ने उच्चारण की महत्ता पर यहां तक बल दिया है कि उन्होंने ब्रह्म की प्राप्ति भी सुस्वर, सुस्पष्ट, सुव्यवस्थित तथा सुप्रयुक्त वर्णों के माध्यम से बताई है।

अशुद्ध उच्चारण से जहाँ अर्थ का अनर्थ होता है वहाँ भाषा भी दूषित हो जाती है। संस्कृत शिक्षण में उच्चारण का और भी अधिक महत्त्व है। विद्यार्थी यदि संस्कृत ध्वनियों तथा शब्दों का अशुद्ध उच्चारण करेंगे तो उन्हें भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान नहीं हो सकेगा। वे यदि अशुद्ध बोलेंगे तो अशुद्ध ही लिखेंगे क्योंकि अशुद्ध उच्चारण ही अशुद्ध अक्षर विन्यास का कारण होता है। उनकी अशुद्ध मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति उनकी अल्पज्ञता व अयोग्यता का परिचय देगी। अशुद्ध उच्चारण भाषाध्ययन में बाधक बनता है।

भाषा सम्बन्धी शुद्ध अशुद्ध प्रवृत्तियाँ भाषा शिक्षण के आरम्भ में ही बनती हैं। उच्चारण सम्बन्धी दोषों को यदि प्रारम्भिक अवस्था में दूर न किया जाए तो वे आगे चलकर असाध्य हो जाते हैं। इसलिए अत्यावश्यक है कि संस्कृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्यार्थियों को आरम्भ से ही उच्चारण की महत्ता से परिचित कराया जाए तथा उनके उच्चारण को शुद्ध किया जाए। विद्यार्थियों को संस्कृत ध्वनियों तथा शब्दों के शुद्ध उच्चारण से परिचित कराया जाए।

संस्कृत ध्वनियाँ

संस्कृत भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इस लिपि में वर्णों का उच्चारण उनके नामों के अनुरूप है। 'क' का उच्चारण 'क' ही है। 'Cat' में 'C' के उच्चारण की भाँति भिन्न नहीं। यही इस लिपि की सबसे बड़ी विशेषता है। संस्कृत ध्वनियों में अरबी, फारसी, अंग्रेज़ी अथवा अन्य यूरोपीय भाषाओं की वर्णमाला जैसी अक्रमबद्धता भी नहीं है। कण्ठ्य वर्णों के पश्चात् ओष्ठ्य वर्ण नहीं आ गए हैं। संस्कृत वर्णों का क्रम वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है जैसा कि निम्नांकित तालिका से स्पष्ट है :

अ आ, क ख ग घ ङ, ह, विसर्ग (:)	—कण्ठ
इ ई, च छ ज झ ञ, य श	—तालु
ऋ, ट ठ ड ढ ण, र ष	—मूर्धा
लृ, त थ द ध न, ल स	—दन्त
उ ऊ, प फ ब भ म	—ओष्ठ
ए ऐ	—कण्ठ-तालु
ओ औ	—कण्ठोष्ठ
व	—दन्तोष्ठ
अं	—नासिका

पाणिनीय शिक्षा के अनुसार संस्कृत की मूल ध्वनियाँ 63 या 64 थीं। धीरे-धीरे लुप्त स्वरों का प्रयोग समाप्त हो गया। अब लौकिक संस्कृत की वर्णमाला में ये वर्ण हैं :

स्वर —अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन—क, ख, ग, घ, ङ
च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ, ण
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म
य, र, ल, व
श, ष, स, ह

अनुस्वार (ं)
विसर्ग (:)
अनुनासिक (ँ)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्ष, त्र और ज्ञ संयुक्त वर्ण हैं। त्र का उच्चारण प्रायः शुद्ध किया जाता है। परन्तु 'क्ष' का उच्चारण प्रायः 'क्छ' तथा 'ज्ञ' का उच्चारण 'ग्य', अथवा 'ग्यं', किया जाता हैं। ऐसा उच्चारण अशुद्ध है। इन सयुक्त अक्षरों का उच्चारण उन्हीं अक्षरों के अनुरूप होना चाहिए जिनमे ये बने हैं जैसे 'क्ष' और 'ज्ञ'। 'ष' का उच्चारण 'ख' नहीं 'ष' ही होना चाहिए।

'श' और 'ष' का उच्चारण मूर्धा तथा तालु के भेद के अनुसार होना चाहिए। 'शेष' शब्द के उच्चारण से 'श' तथा 'ष' अक्षरों के उच्चारण का अन्तर स्पष्ट हो जाता है।

'कृष्ण' 'कृषक' 'कृपण' 'गृह' 'मृत' आदि शब्दों में आए 'कृ' 'गृ' तथा 'मृ' अक्षरों का उच्चारण एकमात्रिक 'ऋ' के रूप में करना चाहिए। 'ऋ' का उच्चारण 'अमृतांजन' और 'रिषि' के रूप में ठीक नहीं है।

'लृ' का प्रयोग वैदिक संस्कृत में अत्यल्प था। आजकल साहित्यिक संस्कृत में तथा भारतीय भाषाओं में इसका प्रयोग नहीं हो रहा है।

उच्चारण दोषों के प्रकार

1. अशुद्ध वर्ण लोप

उच्चारण के समय किसी वर्ण का लोप हो जाने पर यह दोष उत्पन्न होता है। 'परमात्मा' के लिए 'प्रमात्मा', 'साप्ताहिक,' के लिए 'सप्ताहिक' 'रामायण' के लिए 'रमायण' 'कार्तिक' के लिए 'कातिक' शब्द के उच्चारण में वर्ण का लोप है जो कि उच्चारण की दृष्टि से एक दोष है।

2. अशुद्ध स्वर भक्ति

'प्रेम' के लिए 'परेम', 'प्रताप' के लिए 'परताप', 'महात्मा' के लिए 'महातमा' 'जन्म' के लिए 'जनम' अशुद्ध स्वरभक्ति के उदाहरण हैं। इन शब्दों के उच्चारण में स्वरों का अवाञ्छनीय योग है।

3. अशुद्ध आगम

उच्चारण में स्वर, व्यञ्जन के अशुद्ध आगम मे यह दोष उत्पन्न होता है जैसे 'स्त्री' के लिए 'इस्त्री', 'विद्वान्' के लिए'विदवान्', शब्द का उच्चारण।

4. अशुद्ध वर्ण विपर्यय

उच्चारण के समय वर्णों के क्रम के उलट जाने से यह दोष उत्पन्न होता है जैसे 'प्रह्लाद' के स्थान पर 'प्रल्हाद', 'विह्वल' के स्थान पर 'विव्रहल', तथा 'चिह्न' के स्थान पर 'चिन्ह' का प्रयोग।

5. अशुद्ध मात्रा भेद

ह्रस्व स्वर के स्थान पर दीर्घ स्वर तथा दीर्घ स्वर के स्थान पर ह्रस्व स्वर:

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के बोलने से यह दोष उत्पन्न होता हैं। जैसे 'ईश्वर' के लिए 'इश्वर', 'पौरुष' के लिए 'पोरुष' तथा 'गुरु' के लिए 'गुरू' और 'कवि' के लिए 'कवी' का उच्चारण।

6. अनुनासिक दोष

'ङ', 'ञ', 'ण', 'न', तथा 'म्', के अशुद्ध उच्चारण से यह दोष उत्पन्न होता है जैसे 'लवण' के लिए 'लवन', 'श्रवण' के लिए 'श्रवन'।

7. व और ब का अशुद्ध प्रयोग

'व' के स्थान पर 'ब' तथा 'ब' के स्थान पर 'व' के प्रयोग से यह दोष उत्पन्न होता है। 'वचन' के स्थान पर 'बचन', विकास' के स्थान पर 'बिकास' 'बहिष्कार' के स्थान पर 'वहिष्कार' का प्रयोग इस दोष के कुछ उदाहरण हैं।

8. श तथा ष का अशुद्ध प्रयोग

'श' के स्थान पर 'ष' तथा 'ष' के स्थान पर 'श' का उच्चारण एक और दोष है। जैसे 'पाषाण' के स्थान पर 'पाशाण' तथा 'कश्यप' के स्थान पर 'कष्यप'।

9. अनुचित गति तथा प्रवाह।

10. थथलाना या अटक-अटक कर बोलना

11. आवश्यकता से अधिक ऊँचा तथा धीमा स्वर।

12. अशुद्ध स्वराघात।

वाक्य में जिस शब्द पर बल की आवश्यकता हो उस पर बल न देकर किसी और शब्द पर बल देने से यह दोष उत्पन्न होता है। 'त्वया किम् पठितम्'—वाक्य में 'किम्' पर बल न देकर 'त्वया' शब्द पर बल देने से इस वाक्य में यह दोष उत्पन्न हो सकता है।

अशुद्ध उच्चारण के कारण

उच्चारण में अशुद्धि प्रायः इन कारणों से होती है:

1. वर्णों तथा शब्दों की ध्वनियों का ज्ञान न होने से।
2. प्रयत्न लाघव से—जैसे राजेन्द्र के लिए रजेन्द्र तथा राजेश के लिए रजेश बोलने से।
3. संस्कृत शब्दों का उच्चारण सम्बन्धी अभ्यास न होने से।
4. उच्चारण सम्बन्धी प्रवृत्ति के विकृत बन जाने से।
5. शारीरिक दोष—जैसे नाक में बोलना, अटक-अटक कर बोलना या थथलाना।
6. स्थानीय प्रभाव से भी उच्चारण दोषपूर्ण हो जाता है जैसे 'श' के स्थान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर 'स' तथा 'स' के स्थान पर 'श' का उच्चारण करना। 'स्थान' को 'अस्थान' 'स्नान' को 'अस्नान' बोलना भी इसी प्रकार के उदाहरण हैं।

उच्चारण-शिक्षण विधियाँ

विद्यार्थियों को संस्कृत ध्वनियों तथा शब्दों के उच्चारण की विधिवत् शिक्षा देनी चाहिए। विधिवत् उच्चारण शिक्षण के अभाव में विद्यार्थियों का उच्चारण विकृत हो सकता है। संस्कृत उच्चारण शिक्षण के लिए निम्नांकित विधियों का प्रयोग किया जा सकता है :

1. अनुकरण विधि

अध्यापक स्वयं संस्कृत ध्वनियों तथा शब्दों का आदर्श उच्चारण विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करे। बाद में विद्यार्थियों से उन ध्वनियों तथा शब्दों का उच्चारण करवाएँ। अध्यापक के आदर्श उच्चारण के अनुकरण से विद्यार्थियों का का उच्चारण ठीक हो जाएगा।

2. आवृत्ति विधि

यदि विद्यार्थियों का उच्चारण अशुद्ध हो तो संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों से ध्वनियों तथा शब्दों की बार-बार आवृत्ति कराए। जब तक विद्यार्थियों के उच्चारण में दोष दिखाई दे तब तक शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाए।

3. परिवर्तन विधि

यदि विद्यार्थियों का सम्बन्ध ऐसे व्यक्तियों तथा ऐसे स्थान से हो जहाँ उच्चारण सम्बन्धी दोष विद्यमान हों तो वहाँ से विद्यार्थियों को हटा देना चाहिए अन्यथा उच्चारण सम्बन्धी प्रवृत्तियाँ सदा के लिए विकृत हो जाएँगी।

4. अवरोध विधि

शीघ्र बोलने से उच्चारण अशुद्ध और अस्पष्ट हो जाता है। ऐसी स्थिति में अवरोध विधि सहायक होगी अर्थात् विद्यार्थियों को जल्दी और अस्पष्ट बोलने से रोका जाए। कुछ समय तक ऐसा करने से विद्यार्थियों के बोलने की गति ठीक हो जाएगी और उनका उच्चारण भी स्वतः ठीक हो जाएगा।

5. पूर्णता विधि

इस विधि में एक वर्ण अथवा एक शब्द के शुद्ध उच्चारण पर ही नहीं पूरे पद अथवा वाक्य के शुद्ध उच्चारण पर ध्यान दिया जाता है।

उच्चारण सुधार के लिए उपाय

संस्कृत विद्यार्थियों के उच्चारण सुधार की दिशा में निम्नलिखित उपाय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष सहायक होंगे :

1. उच्चारण सुधार के लिए प्रयास प्रारम्भिक स्तर से ही आरम्भ किया जाना चाहिये क्योंकि एक बार प्रवृत्तियों के विकृत होने से विद्यार्थियों का उच्चारण सुधारना कठिन हो जाता है।

2. जिन विद्यार्थियों का उच्चारण अशुद्ध हो उनका अनुकरण अन्य विद्यार्थियों को नहीं करने देना चाहिए।

3. संस्कृत अध्यापक का अपना उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। तभी वह विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श उच्चारण प्रस्तुत कर सकेगा। अध्यापक विद्यार्थियों को संस्कृत वर्णों तथा शब्दों के शुद्ध उच्चारण से ही परिचित कराए।

4. विद्यार्थियों के उच्चारण को शुद्ध करने के लिए उन्हें अभ्यास कराना आवश्यक होगा। बार-बार अभ्यास से ही विद्यार्थी वर्णों तथा शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना सीखेंगे।

5. 'श' और 'ष', 'व' और 'ब', 'ड' और 'ड़', 'ढ' और ''ढ़, जैसी ध्वनियों का अन्तर विद्यार्थियों को स्पष्ट रूप से बता देना चाहिए। 'ऋ', 'र', 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' आदि अक्षरों का शुद्ध उच्चारण विद्यार्थियों को भलीभाँति समझा देना चाहिए।

6. गद्य, पद्य शिक्षण के समय आदर्श वाचन तथा अनुकरण वाचन की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। अध्यापक प्रत्येक सस्कृत गद्यांश तथा पद्यांश का आदर्श वाचन प्रस्तुत करे। तत्पश्चात् आवश्यकतानुसार 1-2-3 विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन करवाए। विद्यार्थी जहाँ अशुद्ध उच्चारण करते हों वहाँ उन्हें उनकी त्रुटि बताई जाए और शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाए।

7. वैयक्तिक तथा सामूहिक उच्चारण अभ्यास ध्वनियों तथा शब्दों का उच्चारण सुधारने में विशेष सहायक होगा। यदि बहुत से विद्यार्थी किसी ध्वनि अथवा शब्द का उच्चारण अशुद्ध करते हों तो वहाँ सामूहिक अभ्यास आवश्यक होगा। वैयक्तिक अभ्यास अलग-अलग विद्यार्थी से कराया जाए।

8. मौखिक कार्य विद्यार्थियों के उच्चारण को सुधारने में विशेष महत्त्व रखता है। अतः इसका अधिकाधिक प्रयोग करवाया जाना चाहिए। मौखिक कार्य कक्षा में शिक्षण के समय तथा कक्षा से बाहर वाद-विवाद और भाषण प्रतियोगिताओं और नाटक-अभिनय के रूप में करवाया जा सकता है।

9. जिन विद्यार्थियों का उच्चारण दोषपूर्ण हो उनके प्रति संस्कृत अध्यापक का व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। जो विद्यार्थी तुतलाते हों या अटक-अटक कर उच्चारण करते हों उन्हें डाँटना या झिड़कना नहीं चाहिए प्रत्युत् अध्यापक का व्यवहार ऐसा हो जिससे कि विद्यार्थियों को शुद्ध उच्चारण के लिए प्रोत्साहन तथा प्रेरणा मिले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

10. शुद्ध उच्चारण यदि मुखावयव सम्बन्धी किसी दोष के कारण हो और यदि वह दोष साध्य हो तो चिकित्सा कारवाई जानी चाहिए।

11. कई बार आत्महीनता, डर, संकोच जैसे मनोवैज्ञानिक कारण भी शुद्ध उच्चारण में बाधक होते हैं। ऐसी स्थिति में विशेषज्ञों से मनोवैज्ञानिक संदर्शन प्राप्त करना आवश्यक होगा।

12. विद्यार्थियों को मात्रा, गति, विराम, बल, स्वराघात आदि उच्चारण तत्त्वों से परिचित करा देना चाहिए तथा इनका पर्याप्त अभ्यास भी करा देना चाहिए। ऐसे अभ्यास से विद्यार्थियों के उच्चारण सम्बन्धी बहुत से दोष दूर हो जाएँगे।

13. जहाँ पद समस्त अथवा सन्धि युक्त हों वहाँ उनका समासविग्रह या सन्धिच्छेद किया जाए। विद्यार्थियों को पहले उन पदों का अलग-अलग तथा तत्पश्चात् समस्त अथवा सन्धियुक्त शब्दों का उच्चारण बताना चाहिए तथा अभ्यास कराना चाहिए।

14. संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों को उच्चारण सिखाने में धैर्य से काम लें।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत शिक्षण में उच्चारण का महत्त्व बताएँ।
2. संस्कृत ध्वनियों की विशेषताओं का उल्लेख करें।
3. उच्चारण दोष से आप क्या समझते हैं? उच्चारण दोषों के मुख्य प्रकार बताएँ।
4. उच्चारण में अशुद्धि किन कारणों से उत्पन्न होती हैं?
5. उच्चारण-शिक्षण की मुख्य विधियाँ कौन-सी हैं?
6. संयुक्त विद्यार्थियों के उच्चारण को सुधारने के लिए आप क्या उपाय करेंगे?
7. उच्चारण शिक्षण में अभ्यास का क्या महत्त्व है?
8. उच्चारण शिक्षण के लिए अध्यापक द्वारा आदर्श वाचन क्यों आवश्यक है?
9. उच्चारण शिक्षण में वैयक्तिक तथा सामूहिक अभ्यास का आप किस प्रकार प्रयोग करेंगे?
10. मौखिक कार्य उच्चारण सुधार में किस प्रकार सहायक होगा?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 9

गद्य शिक्षण

संस्कृत गद्य की विशेषताएँ

संस्कृत गद्य अति प्राचीन है। यजुर्वेद में संस्कृत गद्य उपलब्ध है। उपनिषदों में गद्य का प्रयोग हुआ है। वैदिक संस्कृत साहित्य में गद्य का प्रचुर प्रयोग हुआ है। संस्कृत गद्य का अधिक परिष्कृत एवं व्यापक प्रयोग लौकिक संस्कृत साहित्य में किया गया है। दण्डी, सुबन्धु तथा बाण की गद्य कृतियाँ संस्कृत गद्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

संस्कृत साहित्यकारों ने गद्य को कवियों की कसौटी कहा है—"गद्यं कवीनां निकर्षं वदन्ति"। इस दृष्टि से संस्कृत गद्यकार गद्य की रचना के प्रति बड़े सावधान रहे हैं। यही कारण है कि संस्कृत गद्य भावाभिव्यक्ति एवं उपादेयता की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है।

संस्कृत गद्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी संश्लिष्ट शैली है। समास-युक्त शैली के कारण संस्कृत गद्य में संक्षिप्तता की विशेषता है। जिस विचार की अभिव्यक्ति के लिए अन्य भाषाओं में कई पृष्ठ लिखने पड़ते हैं उसी विचार को संस्कृत में केवल कुछ पंक्तियों में व्यक्त किया जा सकता है।

संस्कृत गद्य की दूसरी बड़ी विशेषता यह है कि संस्कृत गद्य के माध्यम से जितनी उत्तमता से कोमल भावों को प्रकट किया जा सकता है उतनी ही उत्तमता से दुरूह से दुरूह दार्शनिक विचारों को भी व्यक्ति किया जा सकता है।

संस्कृत गद्य की एक और विशेषता यह है कि इसमें संस्कृत पद्य जैसी सरसता है। संस्कृत गद्य से पाठक उतना ही आनन्द प्राप्त करते हैं जितना कि संस्कृत पद्य से : दण्डी, सुबन्धु और बाण की गद्य कृतियों से हम वैसे ही रस प्राप्त कर सकते हैं जैसा कि कालिदास, भारवि और माघ की काव्य कृतियों से।

संस्कृत गद्य शिक्षण के उद्देश्य

संस्कृत गद्य शिक्षण के उद्देश्य मुख्यतः दो प्रकार के हैं :

(क) सामान्य उद्देश्य तथा

(ख) विशेष उद्देश्य

(क) सामान्य उद्देश्य

संस्कृत शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों से भाव है वे उद्देश्य जो सामान्यतः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्येक गद्य पाठ से प्राप्त किए जा सकते हैं। संस्कृत गद्य शिक्षण के सामान्य उद्देश्य संस्कृत शिक्षण के प्रत्येक स्तर पर लगभग समान होंगे। परन्तु विद्यार्थियों के संस्कृत ज्ञान की न्यूनाधिकता के कारण प्रत्येक स्तर पर इन उद्देश्यों में कुछ विभिन्नता हो सकती है। इस दृष्टि से संस्कृत गद्य शिक्षण के स्तरानुकूल सामान्य उद्देश्य निम्नांकित हैं :

प्रारम्भिक स्तर—कक्षा 6, 7 तथा 8

1. विद्यार्थियों को संस्कृत शब्दावली से परिचित कराना।
2. संस्कृत शब्दों तथा वाक्यों का शुद्ध उच्चारण सिखाना।
3. संस्कृत के सरल वाक्यों का अर्थ ग्रहण करने की क्षमता प्रदान करना।
4. संस्कृत भाषा के सामान्य रूप से परिचित कराना।
5. विद्यार्थियों में संस्कृत पठन के प्रति रुचि विकसित करना।
6, संस्कृत गद्य में आए नैतिक प्रसंगों के आधार पर विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करना।

माध्यमिक स्तर—कक्षा 9, 10 तथा 11

1. विद्यार्थियों की संस्कृत शब्दावली में वृद्धि करना।
2. विद्यार्थियों को संस्कृत ध्वनियों तथा कठिन शब्दों के उच्चारण का अभ्यास कराना तथा उनमें शुद्ध एवं स्पष्ट रूप से संस्कृत वाचन की क्षमता उत्पन्न करना।
3. संस्कृत गद्यांशों का अर्थ ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना।
4. विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा का व्यावहारिक ज्ञान कराना।
5. विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
6. विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति को विकसित करना।
7. विद्यार्थियों का नैतिक विकास करना।
8. विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न करना।

उच्च स्तर—स्नातक कक्षाएँ

1. विद्यार्थियों के संस्कृत शब्द भण्डार तथा सूक्ति भण्डार में अधिकाधिक वृद्धि करना।
2. विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा का मौखिक एवं व्यावहारिक प्रयोग करने की क्षमता प्रदान करना।
3. विद्यार्थियों को संस्कृत गद्य की विविध शैलियों से परिचित कराना।
4. विद्यार्थियों में विवेचनात्मक एवं समीक्षात्मक शक्ति का विकास करना।
5. विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति का उच्च स्तर पर विकास करना।
6. विद्यार्थियों के चरित्र-विकास में सहायता करना।
7. विद्यार्थियों में संस्कृत साहित्याध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ख) विशेष उद्देश्य

प्रारम्भिक स्तर पर विद्यार्थियों को संस्कृत गद्य शिक्षण प्रायः सरल वाक्यों के माध्यम से कराया जाता है। साथ ही लघु कथाओं का भी प्रयोग किया जाता है। माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर विद्यार्थियों को संस्कृत गद्य लघु कथाओं के अतिरिक्त निबन्ध, वर्णन, जीवनी तथा नाटक के माध्यम से भी कराया जाता है। इन सब विधाओं के शिक्षण के सामान्य उद्देश्य वही हैं जो ऊपर लिखे जा चुके हैं। परन्तु इन विधाओं के माध्यम से गद्य शिक्षण के विशेष उद्देश्य इस प्रकार हैं :

	विषय सामग्री	विशेष उद्देश्य
1.	कथा	1. कथा का ज्ञान 2. चरित्र निर्माण 3. कल्पना शक्ति का विकास
2.	निबन्ध	1. विषय-वस्तु का ज्ञान 2. बौद्धिक शक्ति का विकास 3. जिज्ञासा का विकास
3.	वर्णन	1. विषय वस्तु का ज्ञान 2. कल्पना शक्ति का विकास 3. वर्णन शैली का परिचय
4.	जीवनी	1. महापुरुषों के जीवन-वृत्त का ज्ञान 2. महापुरुषों के उच्च आदर्शों से विद्यार्थियों के चरित्र का विकास
5.	नाटक	1. विद्यार्थियों को जीवन की किसी झांकी से परिचित कराना 2. पात्रों के चित्रित जीवन से विद्यार्थियों के चरित्र का विकास 3. विद्यार्थियों को कथोपकथन शैली की जानकारी देना 4. विद्यार्थियों को नाटक कला से परिचित कराना एवं अभिनय का अभ्यास कराना।

संस्कृत गद्य शिक्षण के सोपान

संस्कृत गद्य शिक्षण के लिए निम्नांकित सोपानों का अनुसरण किया जाना चाहिए :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

1. प्रस्तावना

गद्य पाठ आरम्भ करने से पूर्व संस्कृत अध्यापक को प्रस्तावना का सोपान पूरा करना चाहिए। प्रस्तावना के सोपान में विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान का पाठगत नवीन ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। संस्कृत अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित दो चार प्रश्न करे। प्रश्न ऐसे हों जिन से विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का स्तर भी जाँचा जा सके और साथ ही विद्यार्थियों में नवीन ज्ञान को प्राप्त करने के लिए उत्सुकता भी जागृत की जा सके। प्रश्न छोटे-छोटे हों, स्पष्ट हों और निश्चित हों।

प्रस्तावना सम्बन्धी प्रश्नों से प्रस्तुत किए जाने वाले पाठ के लिए भूमिका तैयार हो जाती है। अध्यापक आवश्यकतानुसार चित्र दिखा कर और उनके सम्बन्ध में प्रश्न करके अथवा विद्यार्थियों से बातचीत करके प्रस्तावना के सोपान को पूरा कर सकता है।

2. उद्देश्य कथन

प्रस्तावना सम्बन्धी प्रश्नों अथवा बातचीत के पश्चात् अध्यापक पाठ का उद्देश्य कथन करे। वह विद्यार्थियों को बताए कि उन्हें उस समय कौन सा गद्य पाठ पढ़ना है।

3. प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य कथन के पश्चात् संस्कृत अध्यापक गद्य पाठ को पढ़ाना आरम्भ करे। इस सोपान में उसे निम्नांकित कार्य करने चाहिएँ :

1. **आदर्श वाचन** : अध्यापक पढ़ाए जाने वाले गद्यांश का सस्वर वाचन करे। उसका उच्चारण स्पष्ट एवं शुद्ध हो। उसका वाचन कक्षा के सभी विद्यार्थियों को सुनाई दे। साथ ही पाठ का वाचन विरामचिह्नों का ध्यान रखते हुए इस प्रकार किया जाए कि विद्यार्थियों को गद्यांश का भाव ग्रहण करने में सुगमता हो।

2. **अनुवाचन** : आदर्श वाचन के पश्चात् विद्यार्थियों को उसी गद्यांश के अनुवाचन के लिए कहा जाए। गद्यांशों को आवश्यकतानुसार दो तीन विद्यार्थियों से पढ़वाया जाए। सन्धियुक्त शब्दों तथा कठिन शब्दों के उच्चारण का विशेष अभ्यास करवाया जाए। ऐसा अभ्यास वैयक्तिक भी हो सकता है और सामूहिक भी। एक विद्यार्थी द्वारा शब्द का अशुद्ध उच्चारण किये जाने पर यदि अन्य विद्यार्थियों से ही उसका शुद्ध उच्चारण पूछा जाए तो अच्छा होगा।

3. **व्याख्या** : विद्यार्थियों द्वारा अनुवाचन के पश्चात् गद्यांश में आए कठिन शब्दों तथा वाक्यांशों की व्याख्या की जाए। सन्धियुक्त तथा समासयुक्त संस्कृत शब्दों का सन्धिच्छेद तथा समास-विग्रह किये बिना विद्यार्थी इनका अर्थ नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समझ पाएँगे। अतः पहले ऐसे शब्दों का सन्धिच्छेद तथा समास-विग्रह किया जाना चाहिए। इन रूपों को श्यामपट पर लिख देना चाहिए। मिलते-जुलते उदाहरणों द्वारा सन्धि तथा समास सम्बन्धी नियमों का ज्ञान भी करा देना चाहिए। संस्कृत शब्दों तथा वाक्यांशों की व्याख्या के लिए निम्नांकित विधियाँ अपनाई जा सकती हैं :

(क) **उद्बोधन विधि :** इस विधि के अन्तर्गत शब्दों का अर्थ विद्यार्थियों से ही निकलवाया जाता है। अध्यापक वस्तुओं, चित्रों तथा कार्यों की ओर संकेत करता है और विद्यार्थी इस संकेत के आधार पर शब्दार्थ बताते हैं। एक विद्यार्थी द्वारा उत्तर न दिए जाने पर दूसरे विद्यार्थियों से शब्दार्थ पूछा जाता है।

(ख) **अनुवाद विधि :** इस विधि के अन्तर्गत अध्यापक स्वयं शब्द को मातृभाषा में अनूदित करके अर्थ बता देता है अथवा श्यामपट पर लिख देता है। जैसे—

शब्द	अर्थ
सुरम्यः	सुन्दर
बुभुक्षितः	भूखा
उड्डीय	उड़कर
कर्दमः	कीचड़

(ग) **कोष विधि :** इस विधि में शब्दों का अर्थ 'अमरकोष' आदि के प्रसंगों के आधार पर किया जाता है जैसे 'अर्णवः' शब्द का अर्थ 'सागरः' इस प्रकार बताया जाएगा :

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः उदन्वानुदधिः सिन्धुः सारस्वान्सागरोऽर्णवः इत्यमरः।

(घ) **प्रयोग विधि :** शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करके भी अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है जैसे —

—किमर्थम् एष कोलाहलः ?

—यमराजः पुत्रवर-प्रदानेन विवशो
भूत्वा सत्यवतः प्राणान् अमुञ्चत्।

'यहाँ 'कोलाहलः' तथा 'विवशः' शब्दों का अर्थ वाक्यों में प्रयोग द्वारा स्पष्ट किया गया है।

(ङ) **तुलना विधि :** शब्दों का अर्थ उन शब्दों के पर्यायवाची तथा विपरीतार्थक शब्दों के साथ तुलना करके भी स्पष्ट किया जा सकता है। जैसे—

'अरि' शब्दों का अर्थ 'शत्रु', रिपु, 'विपक्षी' आदि पर्यायवाची शब्दों से तुलना करके स्पष्ट किया जा सकता है।

'तीक्ष्ण—कुंठित', 'गम्भीर—चंचल' जैसे विपरीतार्थक शब्दों की तुलना से शब्दार्थ स्पष्ट किया जा सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(च) व्युत्पत्ति विधि : इस विधि के अन्तर्गत शब्दों का अर्थ शब्दों के मूलाधारों, धातुओं, उपसर्गों तथा प्रत्ययों के विश्लेषण द्वारा किया जाता है। शब्दों का सन्धिच्छेद तथा समास-विग्रह किया जाता है जैसे—

—भुनक्ति—भुज् धातु, परस्मैपद, कर्तृवाच्य, रुधादिगण, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एक वचन।

—मूलान्यपि—मूलानि+अपि।

(छ) प्रसंग विधि : कई बार शब्दों का अर्थ ऐतिहासिक, भौगोलिक, पौराणिक प्रसंगों द्वारा स्पष्ट करना पड़ता है।

(ज) टीका विधि : व्याख्या करने की यह विधि संस्कृत में प्राचीनकाल से प्रचलित है। इसे समन्वय विधि भी कहा जाता है क्योंकि इसमें कोश विधि, प्रयोग विधि, व्युत्पत्ति विधि, तुलना विधि जैसी सभी विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सकता है।

शब्दार्थ सम्बन्धी व्याख्या के लिए उपर्युक्त सभी विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सकता है। प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तरों पर उद्बोधन विधि का उपयोग अधिक लाभदायक होगा। इन स्तरों पर प्रयोग विधि भी उपयोगी सिद्ध होगी। उच्च स्तर पर कोश विधि, तुलना विधि तथा व्युत्पत्ति विधि का उपयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है।

व्याख्या के सोपान के अन्तर्गत कठिन शब्दों तथा वाक्यांशों की व्याख्या के साथ-साथ अर्थ ग्रहण, भाषागत सौन्दर्य तथा व्याकरण सम्बन्धी कार्य भी किया जाए। विद्यार्थियों से सन्धि समास सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाएँ।

4. **मौनवाचन**—अध्यापक शब्दों, वाक्यांशों एवं वाक्यों की व्याख्या के पश्चात् विद्यार्थियों को गद्यांश का मौनवाचन करने के लिए कहे। मौन पाठ से विद्यार्थियों को विषय-वस्तु सम्बन्धी ज्ञान को पुष्ट करने का अवसर प्राप्त होता है।

5. **आवृत्ति**—मौन पाठ के पश्चात् अध्यापक विद्यार्थियों से गद्यांश सम्बन्धी प्रश्न पूछे। अध्यापक को यह ज्ञान हो जायेगा कि विद्यार्थी पढ़ाए गए गद्यांश पूर्णतया समझ पाए हैं अथवा नहीं। जिन बातों को विद्यार्थी समझ न पाएँ हों उन्हें फिर से समझा दिया जाना चाहिए।

4. पुनरावृत्ति

उपर्युक्त सोपान क्रमांक 3 द्वारा प्रत्येक गद्यांश को पढ़ा लेने पर सम्पूर्ण गद्य पाठ की पुनरावृत्ति की जानी चाहिए। पुनरावृत्ति सम्बन्धी प्रश्न सम्पूर्ण गद्य पाठ पर आधारित हों।

5. कक्षा-कार्य तथा गृह-कार्य

गद्य पाठ की समाप्ति पर विद्यार्थियों के ज्ञान को और पुष्ट करने के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्हें कक्षा में तथा घर पर करने के लिए लिखित कार्य दिया जा सकता है। यह कार्य ऐसा हो जिसे करने के लिए विद्यार्थियों को अपनी बुद्धि का उपयोग करना पड़े। कक्षा में लिखित कार्य करने के लिए समय न हो तो विद्यार्थियों को गृहकार्य दिया जाना चाहिए।

कथा, नाटक, जीवनी, वर्णन, तथा निबन्ध के माध्यम से गद्य शिक्षण

इसी अध्याय में पहले लिखा जा चुका है कि विद्यार्थियों को गद्य शिक्षण कराने के लिए वाक्यों के अतिरिक्त लघु कथा, लघु नाटक, जीवनी, वर्णन तथा निबन्ध आदि विधाओं के माध्यम को भी अपनाना पड़ता है। इन सबके शिक्षण के जो विशिष्ट उद्देश्य होते हैं उनका उल्लेख भी इसी अध्याय में विशिष्ट उद्देश्यों के अन्तर्गत किया जा चुका है। कथा, नाटक आदि उपर्युक्त सभी विधाएँ मूलतः गद्य विधाएँ हैं। अतः इनके माध्यम से गद्य शिक्षण के लिए भी उसी विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए जिसका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। शब्दार्थ की व्याख्या तथा व्याकरण सम्बन्धी प्रसंगों के लिए भी वही विधि अपनाई जाएगी जो कि सामान्य गद्य शिक्षण के लिए अपनाई जाएगी। कथा शिक्षण के माध्यम से गद्य शिक्षण कराते समय कथा तत्त्व पर तथा नाटक शिक्षण के माध्यम से गद्य शिक्षण के समय पात्र-चरित्र-चित्रण पर अधिक बल देने की आवश्यकता होगी। वर्णन में प्रकृति-चित्रण पर तथा निबन्धों में विचारों के प्रति जिज्ञासा पर बल देने की आवश्यकता होगी।

मौन पाठ, आवृत्ति, पुनरावृत्ति, कक्षा कार्य तथा गृहकार्य सम्बन्धी सोपान उसी प्रकार के होंगे जैसे सामान्य गद्य शिक्षण में। माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों को पठित नाटक का अभिनय करने के लिए कहा जा सकता है।

संस्कृत गद्य शिक्षण सम्बन्धी कुछ उपयोगी सुझाव

1. सम्पूर्ण गद्य पाठ को एक ही कालांश में समाप्त करना आवश्यक नहीं है। लम्बे गद्य पाठ को आवश्यकतानुसार दो-तीन अथवा और अधिक कालांशों में पढ़ाया जा सकता है। प्राथमिक स्तर पर पाठ छोटे हों तो भी उन्हें एक से अधिक कालांश में पढ़ाया जाए जिससे कि विद्यार्थी भलीभाँति पाठ को समझ सकें।

2. गद्य पाठ प्रस्तुत करने से पूर्व अध्यापक द्वारा इसकी तैयारी अनिवार्य रूप से की जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तक में गद्य पाठों की सख्या अधिक होती है। नवीन शब्दावली, भाषा कुशलताओं तथा व्याकरण से सम्बद्ध ज्ञान विद्यार्थियों को गद्य पाठों के माध्यम से ही कराना होता है। पाठ प्रस्तुत करने से पूर्व यदि अध्यापक पाठ सम्बन्धी तैयारी नहीं करेगा तो वह विद्यार्थियों को इन सब बातो का ज्ञान सुचारु रूप से नहीं करा सकेगा।

3. गद्य पाठ प्रस्तुत करने से पूर्व अध्यापक को यह देख लेना चाहिए कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसे उस पाठ से विद्यार्थियों को कौन से नये शब्द, मुहावरे, सूक्तियाँ तथा लोकोक्तियाँ सिखानी हैं। कौन से नये सन्धि नियम तथा समास-विग्रह बताने हैं। अर्थ-ग्रहण तथा आकृति सम्बन्धी कौन से प्रश्न विद्यार्थियों से पूछने हैं। भाषा कुशलताओं का किस प्रकार विकास करना है। जब तक इन सभी बातों के विषय में अध्यापक पहले से ही नहीं सोच लेगा वह संस्कृत गद्य का शिक्षण ठीक प्रकार से नहीं कर सकेगा।

4. गद्य पाठ सम्बन्धी ज्ञान की परिपुष्टि हेतु विद्यार्थियों को कक्षा में तथा घर पर करने के लिए लिखित कार्य अवश्य देना चाहिए।

5. प्रत्येक पाठ को प्रस्तुत करने से पूर्व प्रस्तावना सम्बन्धी सोपान को अवश्य पूरा किया जाना चाहिए। ये प्रश्न प्रसंगानुकूल हों। "श्री रामः" पाठ पढ़ाने के लिए प्रस्तावना के रूप में निम्नांकित प्रश्न किये जा सकते हैं :

1. विजयादशमी कस्मिन् मासे भवति ?
2. विजयादशमी दिवसस्य का विशेषता ?
3. वयम् रामलीलायाम् किम् पश्यामः ?
4. रावणः केन हतः ?

विद्यार्थी प्रारम्भिक स्तर पर यदि संस्कृत में पूरे वाक्य में उत्तर न दे सकें तो सांकेतिक उत्तर ही पर्याप्त समझने चाहियें।

6. प्रस्तावना सम्बन्धी सोपान के अन्त में उद्देश्य कथन अवश्य किया जाना चाहिए। जैसे—

"आगच्छत, रावणस्य हन्तुः जनप्रियस्य श्री रामस्य विषये जानीयाम।"

उद्देश्य कथन से विद्यार्थी पाठ की ओर और अधिक ध्यान देंगे, अध्यापक को पाठ पढ़ाने में अधिक सफलता मिलेगी।

7. अध्यापक को प्रत्येक गद्यांश का आदर्श वाचन करना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर आदर्श वाचन अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए। अध्यापक का उच्चारण दोष रहित हो।

8. अनुवाचन के समय विद्यार्थियों के अशुद्ध उच्चारण को अश्वयमेव ठीक किया जाना चाहिए अन्यथा उसका उच्चारण सदा के लिए विकृत हो जाएगा।

9. गद्य पाठ को रोचक बनाने के लिए श्रव्य दृश्य सामग्री का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जाना चाहिए। चित्र, चार्ट, मॉडल अथवा वस्तुओं का प्रयोग किया जा सकता है। चित्रों, चार्टों का निर्माण अध्यापक स्वयं कर सकता है। यह आवश्यक नहीं कि चित्र और चार्ट मंहगे हों। सस्ते चार्ट भी शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी हो सकते हैं।

10. गद्य पाठ पढ़ाने के लिए प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा का अवलम्बन करना पड़ता है। फिर भी संस्कृत अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों से पाठ में से अर्थ ग्रहण सम्बन्धी प्रश्न संस्कृत में करे और विद्यार्थियों को संस्कृत में उत्तर देने के लिए उत्साहित करे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

11. गद्य पाठ इस विधि से पढ़ाए जाएँ कि संस्कृत गद्य शिक्षण सम्बन्धी उद्देश्य अवश्य प्राप्त हों, केवल परीक्षा उत्तीर्ण कराने की दृष्टि से ही गद्य पाठ न पढ़ाए जाएँ।

12. एक गद्य पाठ को विद्यार्थी जब भलीभाँति समझ जाएँ तभी दूसरा प्रस्तुत किया जाए। भाग-दौड़ करने से विद्यार्थी पूर्णरूपेण लाभान्वित नहीं हो सकेंगे।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत गद्य की विशेषताओं का उल्लेख करें।
2. संस्कृत गद्य शिक्षण के क्या उद्देश्य है ?
3. प्राथमिक स्तर पर गद्य शिक्षण द्वारा आप किन उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहेंगे ?
4. गद्य शिक्षण के अन्तर्गत संस्कृत शब्दों तथा वाक्यांशों की व्याख्या के लिए कौन सी विधियों का प्रयोग किया जा सकता है ? आप कौन से स्तर के लिए कौन सी विधि को अधिक उपयुक्त समझते हैं ?
5. संस्कृत का गद्य पाठ पढ़ने के लिए आप कौन से सोपानों का प्रयोग करेंगे ?
6. कथा, नाटक, निबन्ध तथा वर्णन के माध्यम से संस्कृत गद्य पढ़ाते समय आप किस बात पर विशेष बल देंगे ?
7. गद्य पाठ पढ़ाने से पूर्व संस्कृत अध्यापक द्वारा पाठ की तैयारी क्यों आवश्यक है ?
8. संस्कृत गद्यांश की व्याख्या के समय अध्यापक को किन बातों की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए ?
9. संस्कृत गद्य शिक्षण में वाचन का क्या महत्त्व है ? विद्यार्थियों के वाचन को शुद्ध बनाने के लिए आप क्या उपाय करेंगे ?
10. संस्कृत गद्य शिक्षण में कौन सी श्रव्य दृश्य सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 10

कविता शिक्षण

संस्कृत कविता शिक्षण का महत्त्व

पौर्वात्य तथा पाश्चात्य साहित्यकारों ने कविता की विभिन्न परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं। भारतीय विद्वानों ने कविता की परिभाषा के सम्बन्ध में रसवाद, रीतिवाद, वक्रोक्तिवाद तथा ध्वनिवाद का निरूपण किया है। इन विभिन्नताओं के होने पर भी कविता की कुछ सर्वसम्मत और सर्वमान्य विशेषताएँ हैं। इन विशेषताओं के आधार पर कहा जा सकता है कि कविता जीवन की व्याख्या है, यह जीवन को चित्रित करती है। कविता मानव की भावनाओं की अभिव्यक्ति है। भाव, बुद्धि, कल्पना तथा शैली कविता के मुख्य तत्त्व हैं। कविता का सर्वोपरि उद्देश्य रस की उत्पत्ति करना है।

संस्कृत-कविता शिक्षण का महत्त्व इसलिए है कि विद्यार्थी कविता के रस का आनन्दानुभव कर सकें। विद्यार्थी कविता के भाव तथा शैली के सौन्दर्य को समझ सकें। संस्कृत साहित्य का आरम्भ कविता से हुआ। संस्कृत साहित्य का अधिकांश पद्य के रूप में है। यदि विद्यार्थियों को संस्कृत कविता से परिचित न कराया जाएगा तो विद्यार्थी संस्कृत साहित्य के अधिकांश भाग से अपरिचित रहेंगे।

कविता के माध्यम से भाव-सौन्दर्य की अनुभूति करने के साथ-साथ विद्यार्थी कविता-रचना की विभिन्न शैलियों से परिचित होंगे। परोक्ष रूप से विद्यार्थियों को कविता रचना के लिए प्रशिक्षण मिलेगा। आगे चलकर वे संस्कृत कविता की रचना द्वारा संस्कृत साहित्य में वृद्धि कर सकेंगे।

प्राचीन आचार्यों ने कविता के पठन-पाठन का महत्त्व, धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति बताया है। अतः कविता विद्यार्थियों को काव्यानन्द की अनुभूति कराने के साथ-साथ धर्मार्थकाममोक्ष—चतुर्वर्ग की प्राप्ति का साधन भी बन सकती है।

संस्कृत कविता शिक्षण के उद्देश्य

ऊपर बताया जा चुका है कि संस्कृत कविता शिक्षण का महत्त्व भाव-सौन्दर्य की अनुभूति, रसानन्द की प्राप्ति, धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्वर्ग की सिद्धि तथा रचनात्मक प्रवृत्ति के विकास की दृष्टि से है। महत्त्व के यही आधार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत कविता-शिक्षण के उद्देश्य हैं। संस्कृत शिक्षण के इन मूलाधार उद्देश्यों को (1) सामान्य तथा (2) विशेष उद्देश्यों के अन्तर्गत लिखना उपयुक्त होगा।

सामान्य उद्देश्य

संस्कृत कविता शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों से अभिप्राय है वे उद्देश्य जो संस्कृत कविता-शिक्षण करते समय सामान्य रूप से प्राप्त होंगे अर्थात् प्रत्येक कविता इन उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो सकती है। ये सामान्य उद्देश्य निम्नांकित हैं :

1. छात्र संस्कृत का लय, गति आरोह, अवरोह, तथा भाव सहित वाचन कर सकें तथा आनन्द प्राप्त कर सकें।
2. विद्यार्थियों में कवितागत भावों को समझने तथा उनकी व्याख्या करने की क्षमता उत्पन्न करना।
3. कवितागत सौन्दर्य की अनुभूति की क्षमता उत्पन्न करना।
4. विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को विकसित करना।
5. विद्यार्थियों को विभिन्न कविता-शैलियों से परिचित कराना।
6. विद्यार्थियों को कवि के जीवन-दर्शन से परिचित कराना।
7. भावों के परिष्कार तथा उदात्त भावों के विकास द्वारा विद्यार्थियों का नैतिक विकास करना।
8. संस्कृत कविता के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
9. विद्यार्थियों में कविता-रचना करने की क्षमता उत्पन्न करना।

विशेष उद्देश्य

विशेष उद्देश्य कविता विशेष से सम्बन्धित होगा। विशेष उद्देश्य प्रत्येक कविता का अलग-अलग होगा। विशेष उद्देश्य इस प्रकार होगा :

1. कवितागत भावों से विद्यार्थियों को परिचित करना।
2. कवि के कवितागत सन्देह से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
3. कवि के जीवन, उसकी विचारधारा तथा उसकी कविता-लेखन शैली से परिचित कराना।

संस्कृत कविता शिक्षण की विभिन्न प्रणालियाँ

संस्कृत कविता शिक्षण के लिए विभिन्न प्रणालियों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से प्रमुख ये हैं :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

1. भाषानुवाद प्रणाली

इस प्रणाली के अन्तर्गत पहले संस्कृत पद्यांश के प्रत्येक शब्द का अर्थ विद्यार्थियों की मातृभाषा में बताया जाता है। तत्पश्चात् प्रत्येक पंक्ति का सरलार्थ बताया जाता है। यह काम अध्यापक स्वयं करता है। विद्यार्थियों को भाषानुवाद याद रखना होता है। प्रत्येक पद्यांश के लिए यही क्रम अपनाया जाता है।

2. दण्डान्वय प्रणाली

दण्डान्वय प्रणाली द्वारा कविता शिक्षण के अन्तर्गत प्रत्येक पद्यांश का अन्वय किया जाता है। पद्यांश के मुख्य खण्ड अथवा प्रधान क्रिया को ढूंढ़ना और उसके अनुसार कर्ता, कर्म, तथा क्रिया को ढूंढ़ना और तत्पश्चात् उन्हें गद्य वाक्य का क्रम देना दण्डान्वय कहलाता है। पद्य-खण्ड को एक पूरे वाक्य (दण्ड) में परिवर्तित करना ही दण्डान्वय है। प्रत्येक पद्यांश को इसी क्रम से गद्य वाक्य के रूप में परिवर्तित किया जाता है और फिर उस वाक्य का अर्थ कर दिया जाता है। यही क्रम प्रत्येक पद्यांश के लिए अपनाया जाता है।

3. खण्डान्वय प्रणाली

दण्डान्वय प्रणाली की भाँति खण्डान्वय प्रणाली में भी पहले प्रधान वाक्य या क्रिया को ढूंढ़ा जाता है। और फिर प्रश्नोत्तर द्वारा वाक्य के शेष अंशों को ढूंढ़ा जाता है। प्रश्नोत्तर के प्रयोग के कारण इस प्रणाली को प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहा जाता है। परन्तु खण्डान्वय प्रणाली के प्रश्न दण्डान्वय प्रणाली के प्रश्नों से भिन्न होते हैं। दण्डान्वय प्रणाली में पूछा जाता है—इस वाक्य में क्रिया कौन-सी है ? कर्ता कौन है ? आदि। परन्तु खण्डान्वय प्रणाली के अन्तर्गत प्रश्न पद्यांश के विषय पर आधारित होते हैं। प्रश्न मातृभाषा में नहीं प्रत्युत संस्कृत में होते हैं। उदाहरणार्थ :

नमन्ति फलिनो वृक्षाः, नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्क वृक्षाश्च मूर्खाश्च, न नमन्ति कदाचन ॥

प्रश्न —के वृक्षाः नमन्ति ?
उत्तर— फलिनो वृक्षाः।
प्रश्न—के जनाः नमन्ति ?
उत्तर—गुणिनो जनाः।
प्रश्न—के कदाचन न नमन्ति ?
उत्तर— शुष्क वृक्षाश्च मूर्खाश्च।

खण्डान्वय प्रणाली में विद्यार्थियों का सहयोग लिया जाता है। इस प्रकार कविता शिक्षण रोचक बन जाता है। इस प्रणाली द्वारा पद्यांश के सूक्ष्मातिसूक्ष्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाव को ग्रहण कराया जा सकता है।

4. व्याख्या प्रणाली

भाषानुवाद प्रणाली में शब्दार्थ और सरलार्थ पर अधिक बल दिया जाता है, परन्तु व्याख्या प्रणाली में भावार्थ पर। शब्दों तथा वाक्यांशों का अर्थ भावार्थ को स्पष्ट करने के लिए बताया जाता है। भावार्थ के साथ-साथ कवि की विचार-धारा, रचना-शैली आदि के सम्बन्ध में भी बता दिया जाता है। वाक्य प्रणाली में व्याकरण प्रसंगों पर बल नहीं दिया जाता है। मुख्य बल भाव पर होता है। पद्यांश के एक-एक पद का भावार्थ स्पष्ट किया जाता है। व्याख्या प्रणाली में पद्यांश से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथा अन्य प्रसंगों का स्पष्टीकरण किया जाता है। उदाहरणार्थ ;

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

श्रीमद्भगवद्गीता के इस श्लोक के भावार्थ के स्पष्टीकरण के लिए श्री कृष्णार्जुन संवाद का प्रसंग बताना होगा तथा पद्यांशगत दृष्टांत को स्पष्ट करना होगा।

5. तुलना प्रणाली

इस प्रणाली द्वारा एक पद्यांश की व्याख्या करते समय अध्यापक उसी कवि के अन्य पद्यांशों के साथ अथवा अन्य कवियों की कविताओं के भावों तथा रचना शैलियों के साथ तुलना प्रस्तुत करता है। ऐसे करने से समानता तथा भिन्नता की दृष्टि से एक ही कवि अथवा कई कवियों की विचारधाराओं तथा कविता-शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन हो जाता है। कालिदास के किसी पद्यांश की अश्वघोष के समान भाव अथवा शैली वाले पद्यांश के साथ तुलना की जा सकती है।

6. समीक्षा प्रणाली

इस प्रणाली के अन्तर्गत विद्यार्थी स्वयं साहित्यालोचन के सिद्धान्तों की दृष्टि से कविता की भाषा वा शैली की दृष्टि से समीक्षा करते हैं तथा कविता के भावों को ग्रहण करते हैं। अध्यापक इस कार्य में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है। कक्षा में समीक्षा प्रश्नोत्तर के माध्यम से भी की जा सकती है। समीक्षा के अन्तर्गत समान भाव वाली कविताओं अथवा कवियों की समान विचारधारा की तुलना की जा सकती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

7. व्यास प्रणाली

इस प्रणाली को भाष्य प्रणाली भी कहा जाता है। यह कथावाचन जैसी प्रणाली है। इस प्रणाली द्वारा कविता शिक्षण करते समय अध्यापक सस्वर पाठ करता है, ऐतिहासिक प्रसंगों, दृष्टांतों को स्पष्ट करता हुआ कविता के भाव को स्पष्ट करता है।

संस्कृत कविता शिक्षण के लिए कौन सी प्रणाली उत्तम है ?

प्रारम्भिक स्तर पर कविता शिक्षण के लिए गीत तथा अभिनय प्रणाली का प्रयोग किया जा सकता है। बालक गीत को स्वर से गाएँ। आवश्यकतानुसार ताली बजाएँ और अभिनय करें। परन्तु संस्कृत भाषा में प्राथमिक स्तर के लिए उपयुक्त बाल गीत बहुत कम प्राप्य हैं। अतएव इस प्रणाली का प्रयोग अधिक नहीं किया जा सकेगा।

भाषानुवाद प्रणाली परम्परागत प्रणाली है। इस प्रणाली में मातृभाषा का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है। कविता शिक्षण गद्य शिक्षण जैसा बन जाता है। कविता का सौन्दर्य भाषानुवाद के नीचे दब जाता है। इस प्रणाली द्वारा कविता शिक्षण नीरस बन जाता है। कविता-शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो पाती है।

दण्डान्वय प्रणाली मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल है क्योंकि इसमें विद्यार्थियों को सक्रिय रहने का बहुत कम अवसर मिलता है। पद्यांश से उन्हें कर्ता, कर्म, क्रिया का क्रम सुगमता से मिल जाता है। साथ ही अन्वय सम्बन्धी प्रश्न प्रायः व्याकरण सम्बन्धी होते हैं। इनसे रसानुभूति में बाधा पड़ती है। इसलिए यह विधि अधिक उपयोगी नहीं है। प्राथमिक स्तर पर इसका कुछ उपयोग किया जा सकता है।

खण्डान्वय प्रणाली दण्डान्वय प्रणाली की अपेक्षा अच्छी है। प्रश्नोत्तर द्वारा विद्यार्थी सक्रिय रहते हैं। इससे रोचकता बनी रहती है। इस प्रणाली द्वारा कविता के भावसौन्दर्य को सुगमता से ग्रहण किया जा सकता है। उच्च कक्षाओं को कविता-शिक्षण इस विधि से कराया जा सकता है। तुलना प्रणाली तथा समीक्षा प्रणाली महाविद्यालीय स्तर पर कविता-शिक्षण के लिए प्रयुक्त की जा सकती है।

व्याख्या प्रणाली कविता शिक्षण की सर्वोत्तम प्रणाली कही जा सकती है क्योंकि इस प्रणाली को किसी स्तर पर भी कविता शिक्षण के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। प्रारम्भिक, माध्यमिक तथा उच्च—सभी स्तरों पर इसका प्रयोग सुगमता से किया जा सकता है। शैक्षणिक स्तर तथा विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुसार इस प्रणाली के रूप को ढाला जा सकता है। व्याख्या संक्षिप्त से संक्षिप्त और सूक्ष्म से सूक्ष्म की जा सकती है। इस प्रणाली में व्याकरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रसंगों पर अधिक बल नहीं दिया जाता है। विद्यार्थियों को कविता का सौन्दर्य ग्रहण कराया जाता है। यही कविता शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है।

कविता शिक्षण को गद्य शिक्षण से भिन्न बनाने की आवश्यकता

विद्यार्थियों में कविता शिक्षण की वर्तमान स्थिति पूर्णतया सन्तोषजनक नहीं है। प्रायः देखा जाता है कि पद्य को गद्य की भाँति पढ़ाया जाता है। गद्य की भाँति पद्य में व्याकरण सम्बन्धी प्रश्न किए जाते हैं। भाषानुवाद पर अधिक बल दिया जाता है। कविता के सौन्दर्य से विद्यार्थियों को परिचित नहीं कराया जाता है। ऐसी स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण है।

कविता-शिक्षण व्याकरण अथवा शब्दार्थ शिक्षण के लिए नहीं है। यद्यपि शब्दों के अर्थ का स्पष्टीकरण भावार्थ के स्पष्टीकरण के लिए आवश्यक होता है तथापि शब्दार्थ अथवा सरलार्थ ही कविता शिक्षण का मुख्य उद्देश्य नहीं है। विद्यार्थी भावार्थ ग्रहण करें और उसी आधार पर कविता के सौन्दर्य की अनुभूति करें। साथ ही कविता रस का आस्वादन करें। एतदर्थ यह आवश्यक है कि पद्य शिक्षण को गद्य शिक्षण से भिन्न रखा जाए। कविता शिक्षण के लिए व्याख्या प्रणाली के कुशलतापूर्वक प्रयोग से इस उद्देश्य की प्राप्ति हो सकती है।

संस्कृत कविता शिक्षण के सोपान

संस्कृत कविता शिक्षण के लिए निम्नांकित सोपानों का अनुसरण किया जाना चाहिए :

1. प्रस्तावना

कविता शिक्षण में प्रस्तावना नामक सोपान का उद्देश्य काव्यमय वातावरण बनाना है। कविता की प्रस्तावना के लिए निम्नांकित में से किसी एक ढंग को अपनाया जा सकता है।

1. विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान से सम्बद्ध कुछ प्रश्नों द्वारा।
2. कविता अथवा कवि के सम्बन्ध में कुछ बातचीत द्वारा।
3. समान भाव वाली पूर्व पठित संस्कृत अथवा मातृभाषा की कविता के सम्बन्ध में चर्चा द्वारा।

2. उद्देश्य कथन

अध्यापक बताए कि विद्यार्थियों को कौनसी कविता पढ़नी है। वह पढ़ाई जाने वाली कविता के विषय के सम्बन्ध में कुछ संकेत कर सकता है।

3. प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य कथन के पश्चात् कविता पढ़ाने का कार्य आरम्भ होगा। इस सोपान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर पाठ की सफलता निर्भर करेगी। इस सोपान में अध्यापक को ये कार्य करने होंगे :

1. **आदर्श वाचन :** अध्यापक पढ़ाई जाने वाली कविता का शुद्ध तथा स्पष्ट वाचन करे। यदि कविता छोटी हो तो सारी कविता का वाचन एक ही बार में किया जा सकता है। यदि कविता बड़ी हो तो उसको खण्डों में विभाजित करके पहले एक खण्ड का वाचन किया जा सकता है। यदि पद्यांश श्लोक के रूप में अथवा फुटकर पद्यांशों के रूप में स्वतत्र हों तो केवल एक पद्यांश का वाचन किया जा सकता है।

2. **अनुवाचन :** अध्यापक के पश्चात् विद्यार्थियों से उसी पद्यांश को पढ़वाया जाए। अनुवाचन वैयक्तिक भी हो सकता है और सामूहिक भी। आवश्यकतानुसार दो तीन अथवा न्यूनाधिक विद्यार्थियों से पढ़वाया जा सकता है। विद्यार्थियों के वाचन के अशुद्ध होने पर ठीक किया जाए। अध्यापक प्रारम्भिक स्तर पर विद्यार्थियों से अपने साथ-साथ भी वाचन करवा सकता है।

3. **व्याख्या :** इस सोपान के अन्तर्गत अध्यापक कठिन शब्दों तथा वाक्यांशों की व्याख्या करे। व्याख्या के समय यदि आवश्यक हो तो शब्दों का पदच्छेद, समास विग्रह तथा अन्वय किया जाए। परन्तु इस कार्य को केवल उतना महत्त्व दिया जाए जितना आवश्यक हो। शब्दार्थ सम्बन्धी व्याख्या को सौन्दर्य बोध के लिए साधन मात्र माना जाए। इसे साध्य न समझ लिया जाए।

4. **सौन्दर्यबोध :** कविता का सौन्दर्यबोध कविता-शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है। अध्यापक को विद्यार्थियों का ध्यान कविता के भाव-सौन्दर्य, कल्पना-सौन्दर्य, तथा शैली सौन्दर्य की ओर आकर्षित करना चाहिए। यह कार्य अध्यापक विद्यार्थियों से प्रश्नोत्तर द्वारा अथवा बातचीत द्वारा कर सकता है।

5. **मौन वाचन :** बोधगम्यता तथा रस-प्राप्ति के लिए पठित पद्यांश का विद्यार्थी मौन वाचन करें।

6. **आवृत्ति :** अध्यापक पठित पद्यांश में से विद्यार्थियों से प्रश्न पूछे। इससे पठित पद्यांश की आवृत्ति हो जाएगी। यह भी ज्ञात हो जाएगा कि विद्यार्थी भाव ग्रहण तथा सौन्दर्यानुभूति कहाँ तक कर पाए हैं।

4. पुनरावृत्ति

सोपान क्रमांक 3 द्वारा प्रत्येक पद्यांश को पढ़ा लेने पर सम्पूर्ण पद्यपाठ की पुनरावृत्ति की जाए। इसके लिए विद्यार्थियों से कविता के भाव तथा शब्दार्थ के सम्बन्ध में प्रश्न किए जाने चाहिएँ।

5. कक्षा-कार्य तथा गृह-कार्य

पठित ज्ञान को और पुष्ट करने के लिए विद्यार्थियों को कक्षा में तथा घर पर करने के लिए कार्य दिया जा सकता है। यह कार्य ऐसा हो जिसको करने में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्यार्थियों को अपनी बुद्धि से काम लेना पड़े। वे एक दूसरे की नकल न करने पाएँ।

प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर कविता शिक्षण के लिए इन्हीं सोपानों का प्रयोग किया जाना चाहिए। आवश्यकतानुसार तथा विद्यार्थियों के मानसिक स्तरानुसार सोपानों पर बल को न्यूनाधिक किया जा सकता है।

संस्कृत कविता शिक्षण के सम्बन्ध में कुछ सुझाव

1. कविता का सम्बन्ध मानव के उदात्त भावों से है। संस्कृत कविता में और अधिक माधुर्य तथा सौन्दर्य है। यह कार्य अत्यन्त रुचि से किया जाना चाहिए। संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों को कविता रुचि तथा तन्मयता से पढ़ाएँ। कविता के प्रति जितनी रुचि और तन्मयता अध्यापक दिखाएँगे उतनी ही विद्यार्थी दिखाएँगे।

2. कविता शिक्षण को सरल बनाया जाए। व्याकरण सम्बन्धी व्याख्या को सौन्दर्य ग्रहण में न बाधक बनने दिया जाए। शब्दार्थ सम्बन्धी व्याख्या केवल उतनी की जाए जितनी सौन्दर्य ग्रहण में सहायक हो।

3. विद्यार्थियों को विशेष पद्यांशों एवं सुभाषितों को कण्ठस्थ करने के लिए कहा जाए। इससे विद्यार्थियों में कविता के प्रति रुचि उत्पन्न होगी।

4. अन्त्याक्षरी जैसे खेलों, कविता-पाठ जैसी प्रतियोगिताओं, कवि-जयन्तियों तथा कवि सम्मेलनों जैसे समारोहों का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थी कविता पठन में रुचि दिखाएँगे।

5. कविता का वाचन सस्वर करवाया जाए। इससे विद्यार्थियों के वाचन सम्बन्धी दोषों को दूर किया जा सकेगा।

6. कविता का वाचन कई बार किया जाना चाहिए। इससे भाव ग्रहण में सहायता मिलेगी।

7. परम्परागत अर्थ बोध प्रणाली के स्थान पर व्याख्या प्रणाली द्वारा संस्कृत कविता को पढ़ाया जाए। यह प्रणाली कविता के सौन्दर्यबोध में अधिक सहायक होगी।

8. कविता के संदेश का विद्यार्थियों के नैतिक विकास के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को अपने जीवन को कवितागत उच्च सन्देशों के अनुसार बनाने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए।

9. कविता को एक अखण्ड पाठ के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। बड़ी कविता हो तो उसमें से एक पूरे प्रसंग को एक साथ पढ़ाना चाहिए, एक-एक श्लोक अलग-अलग नहीं। हाँ, यदि श्लोक स्वतंत्र हों तो उन्हें अलग-अलग पढ़ाया जा सकता है।

10. संस्कृत अध्यापक का यह यत्न होना चाहिए कि वह छात्रों में उन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोमल भावों का आनन्द प्राप्त करने की क्षमता उत्पन्न करे जिनसे द्रवित होकर कवि ने कविता की रचना की है। तभी कविता शिक्षण सफल होगा।

11. कविता के भावों की व्याख्या विद्यार्थियों की योग्यता के स्तर के अनुरूप की जानी चाहिए। अध्यापक अपनी योग्यता का प्रदर्शन न करे।

12. कविता-शिक्षण गद्य शिक्षण की भाँति न किया जाए। विद्यार्थियों को कविता के भावों, कविता के सौन्दर्य तथा कवि की विचारधारा से परिचित करवाया जाए।

13. कविता शिक्षण-कविता शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किया जाए, परीक्षा पास करवाने की दृष्टि से नहीं। कविता शिक्षण के उद्देश्यों को सम्मुख रखकर यदि कविता पढ़ाई जाए तो विद्यार्थी परीक्षा पास करने के साथ-साथ कविता शिक्षण से दूसरे लाभ भी प्राप्त कर सकेंगे।

14. जो विद्यार्थी कविता में रुचि रखते हों उन्हें संस्कृत में कविता की रचना करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत कविता शिक्षण का महत्त्व स्पष्ट करें।
2. संस्कृत कविता के शिक्षण के उद्देश्य कौन-कौन से हैं ?
3. संस्कृत कविता शिक्षण की प्रमुख प्रणालियाँ कौन सी हैं ?
4. आप के विचार में कविता शिक्षण की सर्वोत्तम प्रणाली कौन सी है ?
5. संस्कृत कविता शिक्षण के सोपान कौन-कौन से हैं ?
6. संस्कृत कविता पढ़ाते समय प्रस्तुतीकरण के सोपान में आप कौन से भाग पर अधिक बल देंगे ?
7. कविता पाठ के अन्त में आप विद्यार्थियों को कैसा गृह-कार्य देंगे ?
8. संस्कृत कविता शिक्षण को त्रुटि रहित बनाने के लिए आप क्या सुझाव देंगे ?
9. कविता शिक्षण में सौन्दर्यानुभूति का क्या स्थान है ?
10. संस्कृत कविता शिक्षण को सरस बनाने के लिए आप क्या उपाय करेंगे ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 11

व्याकरण शिक्षण

संस्कृत व्याकरण शिक्षण की आवश्यकता

व्याकरण शब्द की व्युत्पत्ति वि+आ+कृ धातु+ल्युट् प्रत्यय के योग से है। व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः येन तत् व्याकरणम्—अर्थात् व्याकरण वह है जिस द्वारा शब्दों का निर्माण किया जाता है। व्याकरण शास्त्र को शब्द शास्त्र अर्थात् शब्दानुशासन कहा जाता है। व्याकरण भाषा के रूप को सुगठित बनाता है। व्याकरण भाषा में असाधु शब्दों के प्रवेश को रोकता है। व्याकरण भाषा का शासक है। व्याकरण के शासन के अभाव में भाषा उच्छृङ्खल हो जाती है। उच्छृङ्खलता कहीं भी हो सभी को अखरती है। भाषा में उच्छृङ्खलता के आने से भाषा का रूप विकृत हो जाने की आशंका रहती है। अतः आवश्यक है कि भाषा पर व्याकरण का शासन बना रहे। विद्यार्थी मातृभाषा का मौखिक प्रयोग विद्यालय में प्रवेश करने से पूर्व सीख जाते हैं। फिर भी उन्हें शिक्षा काल में मातृभाषा का व्याकरण पढ़ने की आवश्यकता होती है। बोलचाल की भाषा पूर्णतया व्याकरण संयत नहीं होती है। भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक होता है। संस्कृत भाषा मातृभाषा की भाँति बोलचाल की भाषा नहीं है। इसको विधिवत् सीखना पड़ता है। संस्कृत भाषा का ज्ञान संस्कृत व्याकरण के ज्ञान के बिना अधूरा रहेगा क्योंकि प्रत्येक भाषा का ज्ञान उसके व्याकरण के ज्ञान के अभाव में अपूर्ण रहता है। अतः विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण का ज्ञान कराना आवश्यक है।

संस्कृत संश्लेषणात्मक भाषा है। कारक तथा क्रिया प्रत्यय संज्ञा सर्वनाम शब्दों तथा धातुओं के साथ संश्लिष्ट होते हैं। सर्वनामों के पुलिंग, स्त्रीलिंग रूप भी अलग-अलग होते हैं। विशेषणों का प्रयोग पुलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग शब्दों के अनुरूप किया जाता है। ऐसी स्थिति में व्याकरण के ज्ञान के बिना विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण पढ़ाना आवश्यक है।

अति प्राचीन काल से ही संस्कृत ग्रन्थों के अध्ययन के लिए व्याकरण का अध्ययन आवश्यक माना गया है। व्याकरण के ज्ञान की आवश्यकता के सम्बन्ध में कहा गया है :

अव्याकरणमधीतं भिन्न द्रोण्या तरंगिणीतरणम्।
भेषजमपथ्यसहितं त्रयमिदमकृतं वरं न कृतम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् बिना व्याकरण के पढ़ना, टूटी हुई नाव द्वारा नदी पार करना, बिना पथ्य के औषधि का सेवन करना—इन तीनों के करने से इनका न करना अच्छा है।

संस्कृत व्याकरण संयत भाषा है। संस्कृत भाषा में व्याकरण के स्वेच्छा-पूर्वक प्रयोग के लिए छूट नहीं है। यही कारण है कि संस्कृत का रूप अब भी वही है जो प्राचीन काल में था। संस्कृत भाषा की इस एकरूपता को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण का ज्ञान कराया जाए।

संस्कृत भाषा में उच्चारण का विशेष महत्त्व है। शुद्ध उच्चारण सिखाने के लिए विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण का ज्ञान कराना अत्यावश्यक है। उच्चारण की अशुद्धता से अनर्थ की आशंका रहती है। इसी सम्बन्ध में एक उक्ति है :

यद्यपि बहुनाधीषे पठ तथापि पुत्र व्याकरणम् ।
स्वजनः श्वजनो माभूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत् ।।

स्वजन (सम्बन्धी) को श्वजन (चाण्डाल), सकल (पूर्ण) को शक्ल (खण्ड) सकृत् (एकबार) को शकृत् (विष्ठा) के रूप में उच्चारण करना व्याकरण के ज्ञान के अभाव से ही होगा। अतः संस्कृत शब्दों का शुद्ध प्रयोग तथा शुद्ध उच्चारण सिखाने के लिए विद्यार्थियों को व्याकरण का ज्ञान कराना आव-श्यक है।

भाषा पर किसी का अधिकार उतना होता है जितना उसके पास शब्द भण्डार होता है। व्याकरण के सामान्य एवं विशेष नियमों के आधार पर एक शब्द के अनेक रूपों का निर्माण किया जा सकता है। एक नियम के ज्ञात हो जाने से विद्यार्थी अपने आप मिलते-जुलते शब्द बना सकते हैं। जैसे कत्वा प्रत्यय को समझा दिए जाने पर विद्यार्थी पठित्वा, हसित्वा, रक्षित्वा जैसे रूप बना सकते हैं।

संस्कृत में सन्धि समास एवं क्रिया रूपों का विशेष महत्त्व है। इनके ज्ञान के बिना संस्कृत शब्दों तथा वाक्यों का अर्थ ग्रहण कठिन होगा। अर्थग्रहण सुगम बनाने की दृष्टि से भी विद्यार्थियों को व्याकरण का ज्ञान कराना आवश्यक है।

कुछ लोगों का विचार है कि संस्कृत व्याकरण को अलग से पढ़ाने की उप-योगिता नहीं है। उनका विचार है कि संस्कृत भाषा के ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर लेंगे। कुछ विद्वान् कहते हैं कि संस्कृत भाषा के पूर्ण ज्ञान के लिए संस्कृत व्याकरण को स्वतंत्र शास्त्र के रूप में पढ़ाया जाए और व्याकरण के माध्यम से संस्कृत पठनारम्भ किया जाए। ये दोनों विचार ठीक नहीं हैं। व्याकरण का नियमित रूप से पढ़ाया जाना आव-श्यक है परन्तु व्याकरण के स्वतंत्र अध्ययन पर अत्यधिक बल देना ठीक नहीं। भाषा और उसके व्याकरण का अध्ययन एक दूसरे को ज्ञान प्राप्त करने में सहा-यक होते हैं। अतः इन दोनों का शिक्षण साथ-साथ चलना चाहिए। व्याकरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का स्वतंत्र अध्ययन विश्व विद्यालीय स्तर पर उपयुक्त रहेगा। विद्यालीय स्तर पर प्रयोगों तथा रचना के माध्यम से ही व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाए।

अतः शुद्धोच्चारण, शुद्ध शब्द प्रयोग, अर्थज्ञान, अनुवाद, सन्देह निवृत्ति, शब्द भण्डार में वृद्धि, भाषा के शद्ध मौखिक तथा लिखित प्रयोग के लिए संस्कृत व्याकरण का नियमित शिक्षण आवश्यक है। सीखने की गति बाल्यकाल में तीव्र रहती है। बाल्यकाल में व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान करा देने से विद्यार्थियों में भाषा सम्बन्धी अशुद्ध संस्कार नहीं बनेंगे। इसलिए विद्यालीय स्तर से ही विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण शिक्षण कराया जाए। आरम्भिक स्तर पर विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण का व्यावहरिक ज्ञान कराया जाए। भाषा का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् ही व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाए। विद्यार्थियों में उदाहरणों के आधार पर स्वयं नियम ढूंढ़ने की क्षमता विकसित हो तो यह और भी अच्छा होगा।

संस्कृत व्याकरण शिक्षण की वर्तमान स्थिति

वर्तमान समय में संस्कृत व्याकरण शिक्षण दो रूपों में किया जा रहा है। संस्कृत पाठशालाओं में व्याकरण शिक्षण पर आवश्यकता से अधिक बल दिया जाता है। ऐसा यह सोचकर किया जाता है कि व्याकरण के ज्ञान के बिना भाषा ज्ञान हो ही नहीं सकता। इसलिए आरम्भ से ही अष्टाध्ययी, अमरकोष आदि व्याकरण ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है।

सामान्य विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण माध्यमिक स्तर पर आरम्भ होता है। अतः संस्कृत व्याकरण को प्रमुख स्थान प्राप्त नहीं है। माध्यमिक स्तर पर व्याकरण शिक्षण के लिए अलग पुस्तक निर्धारित नहीं होती है। विद्यार्थियो को पाठ्यपुस्तक के माध्यम से ही व्याकरण-ज्ञान कराया जाता है। विद्यालयों की उच्च कक्षाओं के लिए संस्कृत व्याकरण की अलग पुस्तक निर्धारित होती है। अधिकांश विद्यालयों में पाठ्य पुस्तक की भाँति व्याकरण पुस्तक को पढ़ाया जाता है।

विद्यालयों में व्याकरण शिक्षण की वर्तमान स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। विद्यार्थियों को व्याकरण-शिक्षण मुख्यतः परीक्षा की दृष्टि से करवाया जाता है। विद्यार्थी व्याकरण रूपों को पाठ्यपुस्तक अथवा व्याकरण की पुस्तक से रट लेते हैं। विद्यार्थी परीक्षा में बहुत अच्छे अंक प्राप्त कर लेते हैं परन्तु उन्हें व्याकरण का व्यावहारिक ज्ञान नहीं हो पाता है। विद्यार्थियों से यदि 'पितृ' शब्द के रूप लिखवाए जाएँ तो वे लिख देंगे परन्तु यदि उन्हें "पिता ने कहा" का अनुवाद करने को कहा जाए तो वे 'पिता ने' पद केलिए 'पिता' शब्द का प्रयोग शायद न कर सकें। विद्यार्थी "पठति पठतः पठन्ति" रूप तत्क्षण सुना देंगे परन्तु यदि उनसे पूछ लिया जाए 'वह पढ़ता है' का संस्कृत वाक्य क्या होगा, तो वे अटक जाएँगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्यार्थियों को सन्धि या समास के सभी उदाहरण तोते की रटन्त की भाँति याद होते हैं पर यदि कोई ऐसा सन्धिच्छेद या समास विग्रह जो उनकी पुस्तक में न हो पूछ लिया जाए, चाहे वह अपेक्षाकृत सरल ही हो वे नहीं बता सकेंगे अतः स्पष्ट है कि हमारे विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण का पर्याप्त ज्ञान रखने पर भी उसका प्रयोग नहीं कर पाते ।

वर्तमान समय में संस्कृत व्याकरण शिक्षण के असन्तोषजनक होने का मुख्य कारण यह है कि विद्यालयों में व्याकरण को संस्कृत शिक्षण सम्बन्धी शेष कार्यों से अलग करके पढ़ाया जाता है । संस्कृत व्याकरण का संस्कृत के सामान्य ज्ञान के साथ समवाय नहीं किया जाता । व्याकरण का व्यावहारिक ज्ञान विद्यार्थियों को नहीं हो पाता है जैसे किसी व्यक्ति के पास धन होने पर भी यदि उसे उसका उपयोग करना न आता हो तो उसके लिए वह धन व्यर्थ होता है वैसी ही स्थिति हमारे विद्यार्थियों की है । इस स्थिति के बदलने पर ही संस्कृत व्याकरण शिक्षण ठीक हो सकेगा ।

संस्कृत व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य

व्याकरण साधन है साध्य नहीं । इसी दृष्टि से संस्कृत व्याकरण का शिक्षण कराया जाना चाहिए । व्याकरण भाषा सीखने या उस पर अधिकार प्राप्त करने का एक साधन है । व्याकरण भाषा सीखने और उसका प्रयोग करने में पथ-प्रदर्शन करता है । यह कार्य सीमित अवधि में नहीं हो सकता । भाषा सीखने का कार्य जीवन पर्यन्त चलता रहता है । अतः व्याकरण का ज्ञानार्जन भी साथ-साथ चलता रहता है । औपचारिक रूप से व्याकरण शिक्षण भाषा के साथ-साथ चलता है । इस दृष्टि से व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य प्रारम्भिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर एक जैसे होंगे । केवल पक्ष विशेष पर बल की न्यूनाधिकता होगी । संस्कृत व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य निम्नांकित हैं :

1. विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के ध्वनि तत्त्व का परिचय कराना ।
2. विद्यार्थियों को संस्कृत शब्दों के विभिन्न रूपों से परिचित कराना ।
3. शुद्ध वाक्य रचना की योग्यता विकसित करना ।
4. भाषा के शुद्ध-अशुद्ध रूप को परखने की क्षमता प्रदान करना ।
5. मौखिक तथा लिखित रूप में शुद्ध भाषा का प्रयोग करना सिखाना ।
6. सैद्धान्तिक व्याकरण का ज्ञान कराना तथा उसका प्रयोग करने का अवसर प्रदान करना ।
7. संस्कृत भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करना ।

संस्कृत व्याकरण शिक्षण की विभिन्न प्रणालियाँ

संस्कृत व्याकरण शिक्षण की मुख्य प्रणालियाँ निम्नांकित हैं :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

1. सूत्र प्रणाली

संस्कृत व्याकरण शिक्षण की यह अत्यन्त प्राचीन प्रणाली है। इस प्रणाली के अन्तर्गत विद्यार्थियों को व्याकरण के सूत्र रटवा दिए जाते थे। इन रटे हुए सूत्रों के आधार पर विद्यार्थी भाषा का ज्ञान प्राप्त करते थे और भाषा का प्रयोग करते थे।

2. पाठ्य-पुस्तक प्रणाली

इस प्रणाली के अन्तर्गत अलग-अलग कक्षा के लिए व्याकरण की अलग-अलग पुस्तक निश्चित होती हैं। कई अध्यापक इस प्रणाली के अन्तर्गत व्याकरण की पुस्तक को पाठ्य-पुस्तक की भाँति पढ़ाते हैं। विद्यार्थियों को व्याकरण के नियमों को रटने के लिए कहा जाता है। विद्यार्थी नियमों को तोते की तरह रट लेते हैं।

3. अव्याकृति प्रणाली

इस प्रणाली के अन्तर्गत व्याकरण का औपचारिक ज्ञान नहीं दिया जाता व्याकरण की औपचारिक शिक्षा के बिना ही विद्यार्थी भाषा के प्रयोग द्वारा व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करता है। इस मत के पाषकों का विचार है कि जैसे बच्चा व्याकरण के औपचारिक अध्ययन के बिना मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है ऐसे ही संस्कृत भाषा का ज्ञान भी संस्कृत व्याकरण के औपचारिक अध्ययन के बिना प्राप्त किया जा सकता है। अतः व्याकरण को अलग से पढ़ाने की आवश्यकता नहीं है।

4. सहयोग प्रणाली

इस प्रणाली के पोषक भी स्वतंत्र रीति से व्याकरण की शिक्षा के विरोधी हैं पर इतने नहीं जितने अव्याकृति प्रणाली पोषक। सहयोग प्रणाली के समर्थकों का विचार है कि काव्य, साहित्य तथा रचना शिक्षण के साथ ही साथ आवश्यकतानुसार व्याकरण के नियम भी बताए जा सकते हैं।

5. प्रयोग प्रणाली

इस प्रणाली के अन्तर्गत व्याकरण के सूत्रों तथा नियमों को बिना रटवाए व्याकरण का ज्ञान कराया जाता है। विद्यार्थियों को शुद्ध भाषा के सुनने, अनुकरण करने तथा प्रयुक्त करने से ही व्याकरण का ज्ञान कराया जाता है। इस विधि से ही विद्यार्थियों को व्याकरण का व्यावहारिक ज्ञान हो जाता है। वे शुद्ध बोलना तथा लिखना सीख जाते हैं। प्रयोग के आधार पर वे नियम भी धीरे-धीरे समझने लग जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

6. निगमन प्रणाली

इस प्रणाली में पहले व्याकरण के नियम बताये जाते हैं और फिर उनके उदाहरण दिए जाते हैं। दीर्घ सन्धि समझाने के लिए पहले यह बता दिया जाता है कि दीर्घ सन्धि के नियम क्या हैं, फिर हिमालयः, गिरीशः जैसे उदाहरण बताए जाते हैं। यह एक प्रकार से सूत्र प्रणाली है।

7. आगमन प्रणाली

आगमन प्रणाली निगमन प्रणाली के पूर्णतया विपरीत है। आगमन प्रणाली के अन्तर्गत पहले कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं। तत्पश्चात् उन उदाहरणों में व्याप्त समानता के आधार पर नियम निकलवाया जाता है। इस नियम की परिपुष्टि के लिए पुनः उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं—

नराः+ऊचुः=नरा ऊचुः
जनाः+ईहन्ते=जना ईहन्ते
गजाः+धावन्ति=गजा धावन्ति

विद्यार्थियों को बताया जाएगा कि ये दोनों रूप शुद्ध हैं। दूसरे रूपों में विसर्ग हटने का कारण समझाया जाएगा। विद्यार्थियों को इन उदाहरणों के आधार पर यह नियम बताया जाएगा—विसर्ग से पूर्व यदि 'आ' हो और परे कोई 'सघोष' वर्ण हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

इस नियम की पुष्टि के लिए विद्यार्थियों के समक्ष कन्याः लज्जन्ते=कन्या लज्जन्ते जैसे और उदाहरण प्रस्तुत किए जाएंगे। नियम सम्बन्धी ज्ञान की पुनः पुष्टि के लिए विद्यार्थियों से उदाहरण पूछे जाएंगे।

संस्कृत व्याकरण शिक्षण के लिए कौनसी प्रणाली अधिक अच्छी है ?

उपर्युक्त प्रणालियों में से कोई भी प्रणाली सर्वतः पूर्ण नहीं है। परन्तु ये प्रणालियाँ त्याज्य भी नहीं हैं। आवश्यकतानुसार सभी प्रणालियों का उपयोग किया जा सकता है। माध्यमिक तथा उच्च स्तर के लिए आगमन तथा निगमन प्रणालियां अधिक उपयोगी हैं। पहले आगमन प्रणाली द्वारा नियम निकलवाए जाने चाहिएँ। तत्पश्चात् उस नियम की पुष्टि निगमन प्रणाली द्वारा की जानी चाहिए। आगमन तथा निगमन प्रणाली का मिश्रित प्रयोग किया जाना चाहिए। प्रारम्भिक स्तर पर अव्याकृति प्रणाली द्वारा व्याकरण का परोक्ष रूप से ज्ञान कराना श्रेयस्कर होगा। व्याकरण नियमों का शिक्षण इस स्तर पर अपेक्षित नहीं।

प्रयोग प्रणाली व्याकरण के व्यावहारिक ज्ञान के लिए सर्वोत्तम है। प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर यह प्रणाली बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी। व्याकरण के नियम, सिद्धान्त जान लेना ही पर्याप्त नहीं। उनका मौखिक तथा लिखित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभिव्यक्ति में उपयोग भी किया जाना चाहिए। अतः प्रारम्भिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर व्याकरण शिक्षण के लिए आगमन-निगमन प्रणालियों के साथ-साथ प्रयोग प्रणाली का भी प्रयोग लाभकारी होगा। सहयोग प्रणाली का उपयोग रचना-शिक्षण के माध्यम से व्याकरण-शिक्षण कराते समय किया जा सकता है।

विश्वविद्यालीय स्तर पर व्याकरण शिक्षण के लिए सूत्र प्रणाली उपयुक्त है। व्याकरण के गहन अध्ययन के लिए यह प्रणाली बड़ी उपयोगी है।

प्रारम्भिक तथा माध्यमिक कक्षाओं को व्याकरण शिक्षण के लिए पाठ्य पुस्तक प्रणाली का प्रयोग किया जाना चाहिए। उच्च कक्षाओं में व्याकरण की पुस्तक का उपयोग घर पर अभ्यास आदि के लिए किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालीय स्तर पर विद्यार्थी व्याकरण की पुस्तकों का उपयोग गहन अध्ययन के लिए कर सकते हैं।

संस्कृत व्याकरण शिक्षण के सोपान

व्याकरण पाठ पढ़ाने के लिए निम्नांकित सोपानों का प्रयोग किया जाना चाहिए :

1. प्रस्तावना

इस सोपान के अन्तर्गत विद्यार्थियों का व्याकरण सम्बन्धी पूर्व ज्ञान जाँचा जाना चाहिए। विद्यार्थी व्याकरण सम्बन्धी पहले भी जानकारी रखते होंगे। अतः इस सोपान के अन्तर्गत प्रश्न विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित होंगे। यदि विद्यार्थियों को व्यंजन सन्धि का ज्ञान कराना है तो पूर्व पठित स्वर सन्धि सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाएँ ये प्रश्न उदाहरणों के रूप में हों तो अधिक अच्छा होगा।

व्याकरण के पाठ में पूर्व ज्ञान परीक्षण के पश्चात् उद्देश्य कथन करने की आवश्यकता नहीं होती। नियम निर्धारण के सोपान के पश्चात् विद्यार्थी स्वयं समझ जाएँगे कि आज के पाठ का उद्देश्य क्या था। यदि आवश्यक हो तो इस स्थल पर उद्देश्य कथन किया जा सकता है।

2. प्रस्तुतीकरण

1. उदाहरण प्रस्तुतीकरण : विषय को आगमन प्रणाली द्वारा प्रस्तुत किया जाए। प्रस्तुत प्रकरण सम्बन्धी उदाहरण प्रस्तुत किए जाएँ।

2. नियम निर्धारण : उदाहरणों की प्रकरणानुसार व्याख्या की जाए। इस व्याख्या के आधार पर विद्यार्थियों से प्रकरण सम्बन्धी नियम निकलवाया जाए। यदि विद्यार्थी नियम निकालने में असमर्थ हों तो अध्यापक स्वयं नियम बता दे और परिभाषा को श्यामपट पर लिख दे।

3. उद्देश्य कथन : इस स्थल पर अध्यापक विद्यार्थियों को बताए कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आज उन्होंने क्या सीखा।

4. नियम पुष्टीकरण : बताए गए नियम की पुष्टि के लिए निगमन प्रणाली को अपनाया जाए। एतदर्थ नियम सम्बन्धी और उदाहरण प्रस्तुत किए जाएँ। इस क्रम को आवश्यकतानुसार एक से अधिक बार दुहराया जा सकता है।

3. पुनरावृत्ति

पुनारावृत्ति के रूप में पढ़ाए गए पाठ में से अध्यापक विद्यार्थियों से प्रश्न पूछे।

4. कक्षा-कार्य तथा गृह-कार्य

अभ्यासात्मक प्रयोग के लिए अध्यापक विद्यार्थियों को पढ़ाए गए पाठ से सम्बन्धित प्रश्न कक्षा-कार्य तथा गृह-कार्य के रूप में दें।

संस्कृत व्याकरण शिक्षण सम्बन्धी सुझाव

1. संस्कृत व्याकरण शिक्षण, संस्कृत व्याकरण शिक्षण के उद्देश्यों को सम्मुख रख कर किया जाए। विद्यार्थी परीक्षा की दृष्टि से नियमों को केवल रट न लें। उनका मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति में व्यावहारिक प्रयोग करना भी सीखें।

2. प्रारम्भिक स्तर पर विद्यार्थियों को व्याकरण के नियमों से परिचित करवाने की आवश्यकता नहीं है। अव्याकृति प्रणाली द्वारा अर्थात् सामान्य संस्कृत शिक्षण के माध्यम से ही व्याकरण का परोक्ष रूप से बोध करा दिया जाए।

3. माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर आगमन तथा निगमन विधि का मिश्रित प्रयोग किया जाए। प्रयोग तथा सहयोग प्रणालियों के माध्यम से विद्यार्थियों के व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान को व्यावहारिक बनाया जाए।

4. व्याकरण शिक्षण के लिए कक्षा में व्याकरण की पुस्तक का उपयोग न किया जाए। अध्यापक श्यामपट की सहायता से विद्यार्थियों को व्याकरण का ज्ञान कराए। विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक का प्रयोग पठित ज्ञान की पुष्टि के लिए तथा अभ्यास के लिए अपने घर पर करें।

5. संस्कृत अध्यापक को संस्कृत व्याकरण-शिक्षण विधि का तथा पढ़ाए जाने वाले व्याकरण सम्बन्धी प्रकरण का पूर्ण ज्ञान हो। यदि वह स्वयं विषय का स्पष्ट ज्ञान न रखता होगा तो वह विद्यार्थियों को पाठ सफलतापूर्वक न समझा सकेगा।

6. व्याकरण शिक्षण के लिए कक्षा में श्यामपट का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए। पुनरावृत्त्यात्मक पाठ के लिए भी श्यामपट का प्रयोग आवश्यक है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

7. विद्यार्थियों को पढ़ाए गए व्याकरण पाठ से सम्बन्धित लिखित कार्य कक्षा-कार्य तथा गृह-कार्य के रूप में अवश्य दिया जाना चाहिए अन्यथा पढ़ाया गया विषय परिपक्व नहीं हो सकेगा। जितना अभ्यास करवाया जाएगा विद्यार्थियों का ज्ञान उतना ही पुष्ट होगा।

8. व्याकरण पाठ की सफलता अध्यापक की अपनी तैयारी पर निर्भर करेगी। अध्यापक को पाठ विधि सम्बन्धी तैयारी करनी चाहिए। उसे विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुरूप पूर्व ज्ञान परीक्षण, प्रस्तुतीकरण तथा आवृत्ति सम्बन्धी उदाहरण तथा प्रश्न पहले से ही सोचने होंगे तभी वह विद्यार्थियों को सफलतापूर्वक नियम समझा सकेगा।

9. अध्यापक व्याकरण शिक्षण के लिए यदि किसी श्रव्य दृश्य सामग्री का उपयोग कर सके तो और अच्छा होगा।

10. विद्यार्थियों को पाठ रटवाया न जाए। पाठ को सुबोध बनाया जाए।

11. विद्यार्थी व्याकरण को शुष्क न समझें। व्याकरण शिक्षण को रोचक ढंग से पढ़ाया जाए।

12. व्याकरण शिक्षण को संस्कृत शिक्षण के लिए साधन समझा जाए। इसे साध्य न समझ लिया जाए।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत व्याकरण शिक्षण की आवश्यकता क्यों है ?
2. संस्कृत व्याकरण शिक्षण की वर्तमान स्थिति स्पष्ट करें।
3. संस्कृत व्याकरण शिक्षण किन उद्देश्यों को सम्मुख रखकर किया जाना चाहिए ?
4. संस्कृत व्याकरण शिक्षण की मुख्य प्रणालियाँ कौन-कौन सी हैं ?
5. आपके विचार में संस्कृत व्याकरण शिक्षण के लिए कौन सी प्रणाली सर्वोत्तम है ?
6. माध्यमिक स्तर पर व्याकरण शिक्षण के लिए आप कौन सी प्रणाली का प्रयोग करेंगें।
7. प्रारम्भिक स्तर पर किस प्रणाली द्वारा संस्कृत व्याकरण शिक्षण किया जाना चाहिए ?
8. विश्वविद्यालीय स्तर पर व्याकरण शिक्षण के लिए कौन सी प्रणाली उपयुक्त होगी ?
9. संस्कृत व्याकरण पाठ पढ़ाने के कौन-कौन से सोपान हैं ?
10. संस्कृत व्याकरण शिक्षण को अधिक सुचारु बनाने के लिए आप क्या सुझाव देंगे ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 12

रचना शिक्षण

रचना से अभिप्राय

बनाने की क्रिया को रचना कहा जाता है। रचना करने की इच्छा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। बचपन से ही यह प्रवृत्ति स्फुटित होने लगती है। इसी प्रवृत्ति से प्रेरित होकर बच्चे रेत और मिट्टी के खिलौने अथवा घरौंदे बनाते हैं। बच्चे के विकास के साथ-साथ यह प्रवृत्ति भी विकसित होती रहती है। बच्चा बड़ा होकर चित्रकारी तथा लेखन जैसे रचना कार्यों में रुचि दिखाने लगता है। मनुष्य अपने जीवन में इस प्रवृत्ति के कारण बहुत से रचना कार्य करना सीखता है। भाषा शिक्षण का आधार भी यही प्रवृत्ति है।

संस्कृत रचना शिक्षण की आवश्यकता

रचना प्रवृत्ति जन्मजात मूल प्रवृत्ति है। जन्मजात मूल प्रवृत्तियाँ विकासोन्मुखी होती हैं। यदि इनके स्वाभाविक विकास को अवरुद्ध किया जाता है तो ये अपना कुप्रभाव दिखाने लगती हैं। रचना प्रवृत्ति के अवरोध से व्यक्ति में आत्महीनता की भावना आ जाती है। उसका मानसिक तथा भावात्मक विकास पिछड़ जाता है। व्यक्ति आत्मविश्वास को खो बैठता है। व्यक्तित्व दोषपूर्ण बन जाता है। वह परमुखापेक्षी बन जाता है। इन सभी दोषों से बचने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि रचना प्रवृत्ति का सचमुच विकास किया जाए।

भाषा शिक्षण बहुत कुछ रचना प्रवृत्ति पर आधारित है। रचना प्रवृत्ति की उपेक्षा से भाषा शिक्षण कार्य सफलतापूर्वक नहीं किया जा सकता। किसी भी कार्य को सीखने के लिए तथा उसमें दक्षता प्राप्त करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। भाषा शिक्षण के लिए भी अभ्यास आपेक्षित है। अतः भाषा शिक्षण में रचना कार्य का अवलम्बन अनिवार्य है। रचना शिक्षण के अभाव में भाषा शिक्षण अपूर्ण ही नहीं, असम्भव होगा।

आजकल विद्यालय में संस्कृत रचना शिक्षण की ओर बहुत कम ध्यान दिया जा रहा है। परिणाम यह है कि विद्यार्थी भाषा ठीक प्रकार नहीं सीख पा रहे हैं। संस्कृत को कठिन एवं जटिल भाषा कहकर विद्यार्थियों को केवल उतना काम कराया जाता है जितना परीक्षोत्तीर्ण करने के लिए पर्याप्त हो। इस धारणा से संस्कृत रचना कार्य की प्रायः अवहेलना कर दी जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारे विद्यालयों में विषयों का शिक्षण प्रायः परीक्षा-पत्रों की दृष्टि से किया जाता है, शिक्षण उद्देश्य की दृष्टि से नहीं। संस्कृत परीक्षा-पत्रों में अधिकांश प्रश्न ऐसे होते हैं जिनका उत्तर रटी हुई सामग्री के आधार पर दिया जा सकता है। विद्यालयों की रचना क्षमता की जाँच नहीं हो पाती है। यही कारण है कि विद्यालयों में विद्यार्थियों को सामग्री को रटाने पर अधिक बल दिया जाता है और रचना कार्य पर कम। इसी कारण विद्यालयों में आजकल संस्कृत रचना कार्य बहुत कम कराया जा रहा है। ऐसी स्थिति शोचनीय है।

संस्कृत शिक्षण को सुचारु बनाने के लिए रचना शिक्षण परमावश्यक है। इसके अभाव में विद्यार्थी न ही संस्कृत भाषा सीख सकेंगे और न ही इसका व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे। प्रायः देखा जाता है कि उच्च कक्षाओं और विश्वविद्यालीय स्तर के विद्यार्थी भी संस्कृत में विचाराभिव्यक्ति नहीं कर पाते। इसका मुख्य कारण यही है कि हमारे विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में संस्कृत रचना कार्य को बहुत कम महत्त्व दिया जा रहा है। संस्कृत शिक्षण के स्तर को उन्नत करने के लिए रचना कार्य को वाञ्छनीय महत्त्व देना होगा

संस्कृत रचना शिक्षण के उद्देश्य

भाषा भावाभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन है। भावाभिव्यक्ति दो प्रकार से की जा सकती है—बोलकर और लिखकर। इसलिए भाषा में रचना कार्य दो प्रकार का होता है—मौखिक तथा लिखित। मातृभाषा द्वारा मौखिक अभिव्यक्ति बच्चा जन्म से ही सीख लेता है। परन्तु संस्कृत भाषा में मौखिक अभिव्यक्ति श्रमसाध्य है। इसके लिए अलग अभ्यास की आवश्यकता होगी। अतः संस्कृत भाषा में मौखिक रचना के सम्बन्ध में स्वतंत्र रूप से पृथक् अध्याय में चर्चा की गई है। यहाँ संस्कृत की **लिखित रचना** के उद्देश्यों के विषय में ही लिखा जाएगा। इस दृष्टि से संस्कृत रचना शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य हैं :

प्रारम्भिक स्तर पर संस्कृत रचना शिक्षण के उद्देश्य

प्रारम्भिक स्तर से अभिप्राय है—कक्षा 6, 7 और 8। इस स्तर पर संस्कृत रचना शिक्षण के उद्देश्य ये हैं :

1. विद्यार्थी शुद्ध तथा सरल संस्कृत में छोटे-छोटे वाक्य लिख सकें।
2. छोटे-छोटे प्रश्नों का शुद्ध तथा सरल संस्कृत में उत्तर लिख सकें।
3. लिखने में सुन्दरता, शुद्धता, गति तथा विरामचिह्नों का ध्यान रख सकें।

माध्यमिक स्तर पर संस्कृत रचना शिक्षण के उद्देश्य

माध्यमिक स्तर से भाव है कक्षा 9, 10 तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 11। इस स्तर पर संस्कृत रचना शिक्षण के उद्देश्य ये हैं :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

1. विद्यार्थी सरल एवं शुद्ध संस्कृत में लम्बे वाक्य लिख सकें।

2. सरल विषयों पर संस्कृत में एक दो अनुच्छेद लिख सकें। विद्यालयः, क्रीड़ाक्षेत्रम् आदि पर।

3. लम्बे संस्कृत अनुच्छेदों को संक्षेप में लिख सकें।

4. सरल विषयों पर संवाद लिख सकें।

5. सरल संस्कृत में कथा अथवा घटना का वर्णन कर सकें।

उच्च स्तर पर संस्कृत रचना शिक्षण के उद्देश्य

उच्च स्तर पर अर्थात् स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत रचना शिक्षण के उद्देश्य इस प्रकार हैं :

1. विद्यार्थी शुद्ध तथा प्रभावोत्पादक ढंग से अपने विचारों की लिखित अभिव्यक्ति कर सकें।

2. किसी भी विषय पर शुद्ध संस्कृत में निबन्ध रूप में अपने विचारों को लिख सकें।

3. संस्कृत में पत्र, टीका-टिप्पणी लिख सकें।

4. पुस्तक रचना द्वारा संस्कृत साहित्य में अभिवृद्धि कर सकें।

संस्कृत रचना कार्य के विविध रूप

विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में विद्यार्थियों को संस्कृत में लिखित रचना कार्य किस प्रकार करवाया जाए—यह बहुत कुछ संस्कृत अध्यापक पर निर्भर करेगा। रचना कार्य विद्यार्थियों के मानसिक स्तर तथा उनके संस्कृत ज्ञान के अनुरूप कराना होगा। विद्यार्थियों को लिखित रचना कार्य दो प्रकार का करवाया जा सकता है : (क) संस्कृत पाठ्यपुस्तक पर आधारित तथा (ख) सामान्य। इन शीर्षकों के अन्तर्गत रचना काय के कुछ रूप इस प्रकार के होंगे :

1. संस्कृत पाठ्यपुस्तक पर आधारित लिखित रचना कार्य

प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर संस्कृत पाठ्यपुस्तक पर आधारित लिखित रचना कार्य की मात्रा अधिक होगी। इन स्तरों पर पाठ्यपुस्तक की सामग्री के अवलम्बन से रचना कार्य करना विद्यार्थियों के लिए सुगम होगा। उच्च कक्षाओं में भी यथावश्यक ऐसा कार्य करवाया जा सकता है। पाठ्य-पुस्तक पर आधारित लिखित रचना कार्य की रूपरेखा इस प्रकार की हो सकती है :

1. पठित पाठ में आए कठिन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग। विद्यार्थियों को सुहृद्, जलाशयः, अनुग्रहेण, पादपः, उद्विग्नः, रजकः, बुभुक्षितः, अधुना जैसे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करने के लिए कहा जा सकता है। विद्यार्थी यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार्य कक्षा में या अपने घर पर कर सकते हैं।

2. पाठ के पाठ्य विषय पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखवाए जा सकते हैं। उदाहरणत :—

(क) विजयादशमी कस्मिन् मासे भवति ?

(ख) रामस्य पितुः किम् अभिधानम् आसीत् ?

(ग) आरोग्येण किम् भवति ?

(घ) आरोग्यं लब्धं के नियमाः पालनीयाः ?

विद्यार्थियों को पूरे वाक्य में उत्तर लिखने के लिए कहा जाए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करवाई जा सकती है। यथा—

(क) सिंहाः.....न भक्षयन्ति।

(ख) गर्दभः.....अभक्षयत्।

(ग) शृगालः.....अवदत्।

(घ) क्षेत्रपालाः.....रक्षन्ति।

इस प्रकार के प्रश्नों को सरल बनाना हो तो रिक्त वाक्यों के साथ ही कुछ मिश्रित शब्द दिए जा सकते हैं। विद्यार्थी उन्हीं शब्दों में से चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। ऐसा करना प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए ठीक रहता है। माध्यमिक कक्षाओं में शब्द देने की आवश्यकता नहीं है।

4. पठित कथा का सरल संस्कृत में सारांश लिखवाया जा सकता है।

5. व्याकरण सम्बन्धी प्रश्न भी लिखित रचना कार्य के रूप में करवाए जा सकते हैं। यथा—

(क) पद परिचय दें—राजा, सौन्दर्येण, शान्तेः, आवाम।

(ख) सन्धि विच्छेद, समास विग्रह सम्बन्धी प्रश्न भी दिये जा सकते हैं।

विद्यार्थियों को व्याकरण सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर लिखित रूप में देना होगा। अतः ऐसे कार्य को भी रचना कार्य के अन्तर्गत माना जा सकता है।

6. पठित पाठ को संवाद के रूप में लिखवाया जा सकता है।

2. सामान्य रचना कार्य

ज्यों-ज्यों विद्यार्थियों का संस्कृत भाषा के ज्ञान का स्तर बढ़ेगा त्यों-त्यों सामान्य लिखित रचना कार्य की मात्रा बढ़ती जाएगी। इस शीर्षक के अन्तर्गत इस प्रकार के कार्य करवाये जा सकते हैं :

1. चित्राश्रित वर्णन मौखिक प्रश्नोत्तर के पश्चात् करवाया जा सकता है।

2. किसी विषय पर संस्कृत में अनुच्छेद लिखवाया जा सकता है। यथा विद्यालयः, न्यायालयः, श्रीरामः।

3. किसी दृश्य, घटना अथवा मेले का वर्णन लिखवाया जा सकता है।

4. संक्षिप्तीकरण—बड़े अनुच्छेद अथवा पाठ का संक्षिप्त रूप सरल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत में लिखवाया जा सकता है।

5. किसी विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखवाना। यथा—श्री लाजपत-रायः, जवाहर लाल नेहरूः, विज्ञानस्य चमत्कारा:, भारत-स्वतन्त्रता।

6. संस्कृत में पत्र, कथा, टीका-टिप्पणी लिखवाना।

उपर्युक्त कार्यों में से कौन सा किस स्तर के लिए उपयुक्त है—यह अध्यापक को स्वयं निर्णय करना होगा। किसी भी रचना कार्य को विद्यार्थियों की योग्यता के स्तर के अनुसार ढाला जा सकता है। प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तक पर आधारित रचना कार्य की मात्रा अधिक होगी और सामान्य रचना कार्य कम। उच्च स्तर पर अधिकांश रचना कार्य सामान्य कोटि का होगा।

संस्कृत रचना शिक्षण की विभिन्न प्रणालियाँ

संस्कृत रचना शिक्षण की प्रमुख प्रणालियाँ अर्थात् विधियाँ ये हैं :

1. चित्र प्रणाली

रचना शिक्षण की इस प्रणाली के अन्तर्गत अध्यापक रचना के विषय से सम्बद्ध एक अथवा अधिक चित्र दिखाता है। चित्र अथवा चित्रों के सम्बन्ध में अध्यापक प्रश्न पूछता है। छात्र चित्र देखकर उत्तर देते हैं। उत्तर श्यामपट पर लिख दिए जाते हैं। विद्यार्थी इनकी सहायता से कथा, प्रस्ताव आदि लिख लेते है।

2. सूत्र प्रणाली

इस प्रणाली में अध्यापक श्यामपट पर वर्ण्य विषय के सूत्र क्रमबद्ध रूप में लिख देता है। इन सूत्रों के आधार पर विद्यार्थी निबन्ध रचना कर लेते हैं।

3. प्रबोधन प्रणाली

इस प्रणाली में अध्यापक को अधिक कार्य करना पड़ता है। अध्यापक मौखिक रूप से वर्ण्य विषय के सम्बन्ध में समग्र विषय सामग्री बता देता है। विद्यार्थियों को अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करने का अवसर नहीं मिलता। उन्हें बताई गई सामग्री के आधार पर प्रस्तावना को केवल लिखना होता है।

4. उद्बोधन प्रणाली

इस प्रणाली में विद्यार्थी सक्रिय रहते हैं। उन्हें अपनी कल्पना शक्ति के प्रयोग के लिए अवसर मिलता है। अध्यापक वर्ण्य विषय के सम्बन्ध में अपने आप नहीं बताता अपितु विद्यार्थियों से ही एक-एक वाक्य करके वर्ण्य विषय के सम्बन्ध में विषय सामग्री को निकलवाता हैं। तत्पश्चात् बताई हुई इस सामग्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के आधार पर विद्यार्थी रचना कार्य कर लेते हैं।

5. मंत्रणा प्रणाली

अध्यापक रचना विषय के सम्बन्ध में विषय सामग्री बताने की अपेक्षा विद्यार्थियों को यह बता देता है कि यह सामग्री किन लेखों, पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों में मिलेगी। विद्यार्थी पुस्तकालय अथवा अन्य स्रोतों से विषय सामग्री को देख लेते हैं। इस प्रणाली के अन्तर्गत विद्यार्थियों को स्वावलम्बन का अवसर प्राप्त होता है। अध्यापक केवल पथ-प्रदर्शन करता है। इस लिए इस प्रणाली को पथ-प्रदर्शन प्रणाली भी कहा जा सकता है।

6. विचार-विमर्श प्रणाली

इस रचना शिक्षण प्रणाली में विद्यार्थी स्वयं अथवा अध्यापक की देखरेख में विचार-विमर्श करते हैं। साथ-साथ विचार बिन्दुओं से सम्बद्ध संकेत लिखते जाते हैं। तत्पश्चात् इन्हीं संकेतों के आधार पर विद्यार्थी निबन्ध लिखते हैं।

7. अनुकरण प्रणाली

अध्यापक विद्यार्थियों को कोई निबन्ध या अन्य रचनाकृति देखने के लिए कहता है। तत्पश्चात् विद्यार्थियों को इस रचना शैली के अनुकरण पर वर्ण्य विषय पर मौलिक रचना के लिए आदेश दिया जाता हैं।

8. प्रश्नोत्तर प्रणाली

इस प्रणाली में अध्यापक विद्यार्थियों से रचना विषय के सम्बन्ध में प्रश्न करता है। विद्यार्थी उत्तर देते हैं। इसी क्रम से वर्ण्य विषय के सम्बन्ध में सामग्री एकत्र हो जाती है। विद्यार्थी इस सामग्री के आधार पर रचना कार्य करते हैं। 'श्री रामः' विषय पर अनुच्छेद अथवा प्रस्ताव लिखवाने के लिए इस प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं :

1. रामस्य पितुः किम् अभिधानम् आसीत् ?
2. रामस्य मातुः किम् अभिधानम् आसीत् ?
3. रामस्य भ्रातृणाम् कानि अभिधानानि आसन् ?
4. रामाय लक्ष्मणाय च कः शस्त्र-संचालनादिकीम् विद्याम् अयच्छत् ? आदि आदि।

9. निरीक्षण प्रणाली

इस प्रणाली से रचनाकार्य करवाने के लिए विद्यार्थियों को प्रकृति निरीक्षण अथवा भ्रमण का अवसर दिया जाता है। विद्यार्थियों की प्रकृति निरीक्षण तथा भ्रमण से स्वाभाविक रुचि होती है। विद्यार्थी वस्तुओं का निरीक्षण अध्यापक-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की देख-रेख में करते हैं। निरीक्षण के समय अध्यापक भी विद्यार्थियों को वस्तुओं के सम्बन्ध में जानकारी देता है। प्राप्त जानकारी तथा अनुभव के आधार पर विद्यार्थी रचनाकार्य करते हैं।

10. तर्क-वितर्क प्रणाली

इस प्रणाली का उपयोग ऐसी सामाजिक, राजनैतिक तथा शैक्षिक समस्याओं पर रचनाकार्य के लिए किया जाता है जिनके विषय में मतभेद हो। विद्यार्थी विषय के पक्ष तथा विपक्ष में अपने विचार प्रकट करते हैं। इसी तर्क-वितर्क के आधार पर सामग्री एकत्र हो जाती है। विद्यार्थी इस सामग्री को रचना का रूप देते हैं।

संस्कृत रचना शिक्षण के लिए कौनसी प्रणाली अच्छी है ?

लिखित रचना शिक्षण के लिए केवल कोई एक प्रणाली पर्याप्त अथवा पूर्ण नहीं है। विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा सम्बन्धी योग्यता तथा उनके मानसिक स्तर के अनुरूप रचना शिक्षण प्रणाली का प्रयोग करना होगा। प्रारम्भिक स्तर के विद्यार्थियों को संस्कृत रचना सिखाने के लिए चित्र प्रणाली तथा प्रश्नोत्तर प्रणाली अधिक उपयुक्त रहेगी। चित्र तथा विषय के सम्बन्ध में विद्यार्थियों से छोटे-छोटे प्रश्न किए जाने चाहिएँ। विद्यार्थियों को सरल संस्कृत में पूर्ण वाक्य में उत्तर देने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

माध्यमिक स्तर पर भी विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा का अधिक ज्ञान नहीं होता है। अतः रचनाकार्य में अध्यापक द्वारा पथ-प्रदर्शन आवश्यक होगा। इस स्तर पर रचनाकार्य सिखाने के लिए प्रश्नोत्तर प्रणाली के साथ उद्बोधन प्रणाली तथा निरीक्षण प्रणाली अधिक उपयोगी होंगी।

उच्च स्तर के विद्यार्थी कल्पना शक्ति तथा संस्कृत भाषा का स्वतन्त्रतापूर्वक प्रयोग करने के सक्षम हो जाते हैं। अतः विद्यार्थियों को स्वतन्त्र रूप से रचना कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस स्तर पर रचना शिक्षण के लिए सूत्र प्रणाली, विचार-विमर्श प्रणाली तथा मंत्रणा प्रणाली अधिक उपयोगी सिद्ध होंगी।

संस्कृत रचना शिक्षण के सोपान

बताया जा चुका है कि संस्कृत रचनाकार्य मुख्यतः दो प्रकार का होता है—पाठ्यपुस्तक पर आधारित तथा सामान्य। संस्कृत पाठ्यपुस्तक पर आधारित रचनाकार्य अभ्यास के रूप में होता है। इसका मुख्य लक्ष्य पुनरावृत्ति होता है। अतः इसके लिए अलग शिक्षण सोपान की आवश्यकता नहीं होगी। अध्यापक परस्पर बातचीत अथवा प्रश्नोत्तर के रूप में रचनाकार्य करने के लिए पथ-प्रदर्शन कर सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनुच्छेद, निबन्ध तथा पत्रादि लेखन के लिए निम्नलिखित शिक्षण सोपानों का उपयोग किया जाना चाहिए :

1. प्रस्तावना

रचना के लिए उपर्युक्त विषय के चयन के पश्चात् अध्यापक रचना विषय के सम्बन्ध में विद्यार्थियों से बातचीत करे अथवा प्रश्न पूछे। विषय सम्बन्धी प्रश्नोत्तर की इस प्रक्रिया से विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का स्तर ज्ञात हो जायेगा। उसी अनुसार रचनाकार्य करवाया जाना चाहिए। दूसरा लाभ यह होगा कि विद्यार्थी रचनाकार्य में रुचि दिखाएँगे और ध्यान देंगे।

2. उद्देश्य कथन

प्रस्तावना के पश्चात् उद्देश्य कथन किया जाए। विद्यार्थियों को बताया जाए कि उन्हें किस प्रकार का रचनाकार्य उस समय करवाया जाएगा।

3. प्रस्तुतीकरण

1. विषय का प्रस्तुतीकरण रचना शिक्षण प्रणाली के अनुरूप होगा। प्रश्नोत्तर प्रणाली तथा रूपरेखा प्रणाली के अन्तर्गत अध्यापक विद्यार्थियों से प्रसंगानुसार प्रश्न करे।

2. विद्यार्थियों के उत्तर को वह श्यामपट पर लिखता रहे। उत्तर ठीक न हो तो अध्यापक विद्यार्थियों का पथप्रदर्शन करे। श्यामपट पर रूपरेखा प्रणाली के अन्तर्गत केवल सूत्र अथवा मुख्य विचार बिन्दु ही लिखे जाएँ।

3. विषय के सभी पक्षों से सम्बद्ध विचार बिन्दु अथवा रूपरेखा श्यामपट पर लिख दी जाए।

4. इन संकेतों के आधार पर विद्यार्थियों को रचनाकार्य करने के लिए कहा जाए। समय हो तो वे लिखने का कार्य कक्षा में करें अन्यथा घर से करके लाएँ।

4. संशोधन

संशोधन के बिना रचना कार्य व्यर्थ होगा। जहाँ तक सम्भव हो रचना कार्य संशोधन कक्षा में ही किया जाए। संशोधन विधि के सम्बन्ध में आगामी अध्याय में लिखा गया है।

संस्कृत रचना शिक्षण सम्बन्धी सुझाव

1. संस्कृत रचनाकार्य को संस्कृत शिक्षण का महत्त्वपूर्ण अंग समझा जाए। इसके प्रति उपेक्षा न दिखाई जाए।

2. संस्कृत रचना शिक्षण को रोचक बनाया जाए। ऐसा तभी सम्भव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होगा जब संस्कृत अध्यापक स्वयं इस कार्य को रुचि से करेंगे।

3. रचनाकार्य के लिए ऐसे विषय चुने जाएँ जो विद्यार्थियों के अनुभव के हों। ऐसे विषयों के प्रति विद्यार्थी रुचि भी दिखाएँगे और प्रस्तुतीकरण के समय पूछे जाने वाले प्रश्नों का उत्तर भी सुगमता से दे पाएँगे।

4. रचना शिक्षण में 'सरल से कठिन की ओर', सूत्र का पालन करना आवश्यक होगा। प्रारम्भिक स्तर पर सरल संस्कृत वाक्यों के निर्माण को भी रचनाकार्य माना जाए। धीरे-धीरे विद्यार्थी अनुच्छेद लेखन तथा निबन्ध लेखन के योग्य बन सकेंगे।

5. लिखित रचना में अक्षर विन्यास तथा व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों की आशंका रहती है। अतः अध्यापक को रचनाकार्य बड़ी सावधानी से करवाना चाहिए।

6. रचनाकार्य का संशोधन बड़ा आवश्यक है। संशोधन के अभाव में रचनाकार्य निष्फल होगा। अतः संस्कृत अध्यापक रचना कार्य का संशोधन अवश्य करें। संशोधन यदि विद्यार्थी की उपस्थिति में किया जाएगा तो अधिक लाभकारी होगा।

7. शब्दों के संशोधित रूप का विद्यार्थी अपनी कापियों में अभ्यास अवश्य करें। अभ्यास द्वारा ही शब्द के अशुद्ध रूप के प्रयोग की आशका का निर्मूलन होगा।

8. विद्यार्थियों को रचना लेखन में पूर्णविराम, अर्धविराम आदि चिह्नों के प्रयोग का अभ्यास करवाया जाए।

9. आरम्भिक स्तर पर रचना शिक्षण के लिए श्रव्यदृश्य सामग्री का अधिकाधिक उपयोग किया जाए। इससे रचना शिक्षण न केवल रोचक बनेगा अपितु विद्यार्थियों के मुख से विषय सामग्री निकलवाने में भी सुविधा होगी।

10. कक्षा में रचना कार्य सम्बन्धी मौखिक चर्चा करने के पश्चात् ही लिखित रचना के लिए आदेश दिया जाए। प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर ऐसा करना और भी आवश्यक है क्योंकि इन स्तरों के विद्यार्थियों में संस्कृत सम्बन्धी इतनी योग्यता नहीं होती कि वे अपने आप रचना कार्य कर सकें। उच्च स्तर पर भी अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों का किसी न किसी रूप में पथ-प्रदर्शन आवश्यक होगा।

11. संस्कृत रचना शिक्षण की सफलता संस्कृत अध्यापक की रचना विषय सम्बन्धी अपनी जानकारी, रचना शिक्षण प्रणाली का पूर्ण ज्ञान तथा कक्षा में विद्यार्थियों को सक्रिय बनाने पर निर्भर करेगी।

12. संस्कृत रचना शिक्षण इस प्रकार करवाया जाए कि संस्कृत रचना शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति अवश्य हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. रचना से क्या अभिप्राय है ? संस्कृत रचना कार्य के विविध रूप क्या हैं ?
2. संस्कृत शिक्षण के लिए रचना शिक्षण क्यों आवश्यक है।
3. संस्कृत रचना शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट करें ?
4. संस्कृत रचना शिक्षण सम्बन्धी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आप क्या उपाय करेंगे ?
5. संस्कृत रचना शिक्षण की प्रमुख प्रणालियाँ कौन-सी हैं ?
6. प्रारम्भिक स्तर पर संस्कृत रचना शिक्षण के लिए आप कौन-सी प्रणाली का उपयोग करेंगे ?
7. माध्यमिक स्तर पर संस्कृत रचना शिक्षण के लिए कौन-सी प्रणाली का उपयोग ठीक रहेगा ?
8. संस्कृत रचना शिक्षण के सोपानों का सोदाहरण उल्लेख करें।
9. संस्कृत रचना शिक्षण को रोचक बनाने के लिए आप क्या उपाय सुझाएँगे ?
10. संस्कृत रचना शिक्षण की सफलता किन बातों पर निर्भर करेगी ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 13

अनुवाद शिक्षण

संस्कृत शिक्षण में अनुवाद का महत्त्व

किसी भाषा में अभिव्यक्त भावों तथा विचारों को किसी अन्य भाषा में ज्यों का त्यों परिवर्तित करने की प्रक्रिया को अनुवाद कहा जाता है। अनुवाद में वस्तुतः "नामूलं लिख्यते किञ्चत् नापेक्षितमुच्यते" का सिद्धान्त क्रियान्वित किया जाता है। मातृभाषा से अतिरिक्त भाषा में सीखने के लिए अन्य उपायों के साथ अनुवाद-प्रक्रिया का अवलम्बन करना पड़ता है। किसी एक भाषा के प्रयोग पर अधिकार होने के कारण उस भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में परिवर्तित करना सुगम हो जाता है। इसीलिए अनुवाद का मातृ-भाषा से अतिरिक्त भाषा शिक्षण में महत्त्व है। संस्कृत शिक्षण में अनुवाद का महत्त्व निम्नांकित कारणों से है :

1. विद्यार्थियों को मातृ-भाषा का ज्ञान आरम्भ से ही होता है। वे मातृ-भाषा में व्यक्त विचारों को सुगमता से समझ सकते हैं। साथ ही अपने विचारों को मातृभाषा के माध्यम से सुगमतापूर्वक व्यक्त भी कर सकते है। संस्कृत भाषा में व्यक्त विचारों को समझने के लिए यदि मातृ-भाषा का अवलम्बन किया जाएगा तो विद्यार्थी को संस्कृत भाषा में व्यक्त विचारों को ग्रहण करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। संस्कृत भाषा का संस्कृत माध्यम से सीखना विद्यार्थियों के लिए सुगम नहीं होगा जितना कि मातृभाषा के माध्यम से। इस दृष्टि से संस्कृत शिक्षण में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

2. संस्कृत सामान्य जनता में बोलचाल की भाषा नहीं है। संस्कृत का विद्वान् बोलचाल की भाषा से अनिभिज्ञ होने पर अपनी विद्वता से दूसरों को लाभ नहीं पहुँचा सकेगा। उसे दूसरों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए मातृभाषा का प्रयोग करना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि संस्कृत शिक्षण के साथ मातृ-भाषा के ज्ञान का समवाय किया जाए। अनुवाद भाषाओं का समीकरण है। अतः संस्कृत शिक्षण में अनुवाद की प्रक्रिया से संस्कृत और मातृभाषा में समीपता उत्पन्न होगी और ऐसा होने से संस्कृत शिक्षण की गति तीव्र होगी।

3. संस्कृत प्राचीन भाषा है। हिन्दी अपेक्षाकृत नवीन है। अनुवाद की प्रक्रिया से हिन्दी में उपलब्ध नवीन ज्ञान का संस्कृत में समावेश होगा। इस नवीनता के कारण संस्कृत भाषा का शिक्षण अधिक रोचक तथा सरल बनेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसलिए भी संस्कृत शिक्षण में अनुवाद की प्रक्रिया को अपनाना लाभकर होगा ।

4. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करना सरल से कठिन की ओर तथा ज्ञात से अज्ञात की ओर आदि मनोवैज्ञानिक सूत्रों के अनुरूप है । मातृभाषा के ज्ञान के आधार पर संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करना विद्यार्थियों के लिए सरल होगा । अनुवाद इस दृष्टि से बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा ।

5. अनुवाद करने के लिए दूसरी भाषा के उपयुक्त शब्दों, मुहावरों तथा व्याकरण पदों का ज्ञान आवश्यक होता है । अनुवाद की प्रक्रिया में शब्द भण्डार की वृद्धि होती रहती है । संस्कृत शिक्षण में विद्यार्थी हिन्दी शब्दों के संस्कृत पर्याय ढूंढ़ेंगे और इस प्रकार उनके शब्द भण्डार में वृद्धि होगी । इस दृष्टि से भी अनुवाद-शिक्षण लाभकारी होगा ।

6. हिन्दी भाषा का मूल स्रोत संस्कृत भाषा है । इन दोनों भाषाओं की शब्दावली तथा रूप रचना में अनेक समानताएँ हैं । संस्कृत तथा हिन्दी की समानताओं के आधार पर अनुवाद-प्रक्रिया द्वारा संस्कृत शिक्षण सुगम बनेगा ।

7. संस्कृत साहित्य उत्कृष्ट विचारों की अनुपम निधि है । इन विचारों से सामान्य जनता तभी लाभान्वित होगी जब इसका अनुवाद मातृभाषओं में होगा । इस दृष्टि से भी संस्कृत शिक्षण में अनुवाद शिक्षण महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा ।

8. संस्कृत ग्रन्थों, लेखों तथा व्याख्यानों का मातृभाषा में तथा मातृभाषा के ग्रन्थों, लेखों तथा व्याख्यानों का संस्कृत में अनुवाद होने से संस्कृत तथा मातृभाषा के साहित्य में अभिवृद्धि होगी । अनुवादों का ऐसा कार्यक्रम राजकीय तथा निजी क्षेत्रों में पहले से ही किया जा रहा है । आगामी जीवन में विद्यार्थी भी इस अनुवाद कार्य में सहयोग दें इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों को आरम्भ से ही ऐसा प्रशिक्षण दिया जाए ।

9. संस्कृत शिक्षण के समय अनुवाद सम्बन्धी प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त संस्कृत भाषा के ज्ञान के आधार पर विद्यार्थी आगामी जीवन में संस्कृत में मौलिक रचना भी कर सकेंगे ।

संस्कृत अनुवाद शिक्षण के उद्देश्य

संस्कृत शिक्षण के अन्तर्गत अनुवाद शिक्षण के उद्देश्य निम्नांकित हैं :

1. विद्यार्थियों को शुद्ध संस्कृत लिखने का अभ्यास कराना ।

2. विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के माध्यम से विचारों के आदान-प्रदान करने के योग्य बनाना ।

3. विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा का हिन्दी में अनुवाद करने की योग्यता उत्पन्न करना ।

4. हिन्दी एवं अन्य भाषाओं की शैली को समझाने तथा उस शैली के अनु-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सार भावों को संस्कृत में प्रयुक्त करने की क्षमता प्रदान करना।

5. हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के नवीन विचारों से अवगत होने तथा उनका संस्कृत भाषा में समावेश करने के योग्य बनाना।

6. विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं के साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता प्रदान करना।

7. अन्य भाषाओं के ग्रन्थों के अनुवाद से संस्कृत साहित्य की समृद्धि करना।

संस्कृत अनुवाद शिक्षण सम्बन्धी उपर्युक्त उद्देश्य किसी एक कक्षा अथवा किसी एक स्तर पर प्राप्त नहीं किए जा सकते। इनकी प्राप्ति के लिए संस्कृत शिक्षण के प्रारम्भिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर आदि सभी स्तरों पर प्रयास करना होगा। इन उद्देश्यों के रूप का निर्धारण तथा उनकी प्राप्ति के लिए प्रयास विद्यार्थियों के संस्कृत भाषा सम्बन्धी ज्ञान-स्तर को दृष्टि में रखकर करना होगा।

संस्कृत शिक्षण में अनुवाद-अभ्यास के प्रकार

संस्कृत शिक्षण में अनुवाद-अभ्यास के प्रमुख प्रकार निम्नांकित है :

1. संस्कृत से मातृ-भाषा में अनुवाद

विद्यार्थी के मानसिक स्तर के अनुसार ही वाक्यों तथा अनुच्छेदों का चयन किया जाना चाहिए। प्रारम्भिक स्तर पर विद्यार्थीयों की संस्कृत शब्दावली सीमित होती हैं। अत: इस स्तर पर मातृभाषा में अनुवाद के लिए संस्कृत के सरल वाक्य चुनने चाहिएँ। उत्तरोत्तर वाक्यों की कठिनता बढ़ती जाए। माध्यमिक कक्षाओं में कठिन वाक्यों के साथ-साथ सरल अनुच्छेदों का संस्कृत अनुवाद कराया जाए।

2. मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद

विद्यार्थी प्रारम्भिक स्तर पर भी पर्याप्त सामान्य ज्ञान रखते हैं। उन्हें इन विचारों को संस्कृत भाषा में परिवर्तित करने के लिए अभ्यास कराने की आवश्यकता होगी। आरम्भ में विद्यार्थियों को 'वह पढ़ता है'—के लिए 'पठति' जैसे प्रयोग सिखाना पर्याप्त होगा। विद्यार्थी ज्यों-ज्यों संस्कृत शब्दावली से परिचित होते जाएँ उन्हें संस्कृत भाषा में अनुवाद के लिए मातृभाषा के कठिन वाक्य तथा अनुच्छेद दिए जा सकते हैं।

3. पुनरनुवाद

संस्कृत से मातृभाषा में तथा फिर मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद को पुनरनुबाद कहा जा सकता है। पुनरनुवाद से लाभ यह है कि विद्यार्थी अपने द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत में किए हुए अनुवाद की तुलना संस्कृत के मौलिक अनुच्छेद से करते हैं तथा अपनी अशुद्धियों को ठीक करते हैं।

पुनरनुवाद उच्च कक्षाओं में अधिक उपयोगी रहता है।

अनुवाद की शैलियाँ

अनुवाद करने की प्रमुख शैलियाँ ये हैं :

. **अक्षरशः अनुवाद शैली :** अक्षरशः अनुवाद शैली में एक भाषा के शब्दों के स्थान पर दूसरी भाषा के समानार्थक शब्दों का प्रयोग किया जाता। इस शैली में अनुवाद की प्रक्रिया 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' जैसी होती है। इस रीति से प्राय: अर्थ का अनर्थ हो जाने की सम्भावना रहती है। विभिन्न भाषाओं के शब्दों के अर्थ तथा वाक्य रचना में अन्तर होता है। हिन्दी के 'खा कर' पद के अनुवाद के लिए 'कर' के स्थान पर 'भुजा' या उसके समानार्थक शब्द का प्रयोग 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' जैसा अनुवाद होगा।

2. **छायानुवाद शैली :** इस शैली को मर्मानुवाद शैली भी कहा जाता है। इस शैली में एक भाषा के प्रत्येक शब्द का शब्दशः अनुवाद नहीं किया जाता। शब्दों, वाक्यों अथवा अनुच्छेदों के सारांश को दूसरी भाषा में अनूदित कर दिया जाता है।

3. **तथ्यानुवाद शैली :** इस शैली के अन्तर्गत एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में अनूदित करते समय शब्दों के समानार्थक रूप देने के साथ-साथ मूल भाव एवं शैली की भी रक्षा की जाती है। अनुवाद इतना स्वाभाविक प्रतीत होता है जैसे लेखक स्वयं उस भाषा में रचना कर रहा हो।

अनुवाद करने की उपर्युक्त तीनों शैलियों में से अक्षरशः अर्थात् शब्दशः शैली त्याज्य है क्योंकि इसमें अर्थ के अनर्थ होने की सम्भावना रहती है। छायानुवाद शैली में सारांश का अनुवाद करने से बहुत सा भाग अनूदित होने से छूट जाता है। मूलभाव की उपेक्षा के साथ-साथ मूल भाषा एवं शैली की उपेक्षा हो जाती है। तथ्यानुवाद शैली सर्वोत्तम है। इस शैली द्वारा अनुवाद करते समय मूलभाव, भाषा और शैली की पूर्णरूपेण सुरक्षा होती है। भाषा भी दुरूह और कृत्रिम नही होने पाती।

संस्कृत अनुवाद शिक्षण की प्रणालियाँ

संस्कृत अनुवाद शिक्षण की प्रमुख प्रणालियाँ निम्नलिखित हैं :

1. पुस्तक प्रणाली

पुस्तक प्रणाली में विद्यार्थियों को अनुवाद का अभ्यास पुस्तक के माध्यम से कराया जाता है। प्रत्येक कक्षा के लिए संस्कृत की पाठ्यपुस्तक तथा व्याकरण पुस्तक की भाँति अनुवाद-पुस्तक होती है। अनुवाद-पुस्तक विद्यार्थियों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत-ज्ञान के स्तर के अनुरूप होती है। पुस्तक में अनुवाद सम्बन्धी नियम होते हैं। अनुवाद सम्बन्धी नियमों तथा शब्दावली को सरल से कठिन की ओर सूत्र के अनुसार क्रमबद्ध किया जाता है। नियमों तथा उदाहरणों के पश्चात् अभ्यासार्थ वाक्य अथवा अनुच्छेद दिए जाते है। विद्यार्थी संस्कृत अध्यापक के निर्देशन में अनुवाद का अभ्यास करते हैं। इस प्रणाली के अनुसार अनुवाद को संस्कृत शिक्षण का एक प्रमुख विषय माना जाता है।

2. तुलना एवं अनुकरण प्रणाली

इस प्रणाली द्वारा विद्यार्थी आदर्श अनुवाद का विश्लेषण करते हैं और उसकी मातृभाषा से तुलना करते हैं। सर्वप्रथम विद्यार्थी आदर्श अनुवाद को परखते हैं। उसी ढंग पर उसी अनुवाद से मिलते-जुलते अन्य अनुच्छेदों अथवा वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करते हैं। इसी प्रकार की तुलना तथा अनुकरण की प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थी अनुवाद करना सीखते हैं।

3. दुभाषिया प्रणाली

इस प्रणाली में एक व्यक्ति द्वारा मातृभाषा में व्यक्त विचारों को दूसरा व्यक्ति संस्कृत में साथ-साथ व्यक्त करता चलता है। इस प्रणाली का उपयोग प्रायः उन बड़े-बड़े सम्मेलनों तथा औपचारिक आयोजनों में किया जाता है जहाँ मातृभाषा में प्रकट विचारों को संस्कृत में रूपान्तरित करना आवश्यक हो। यह प्रणाली संस्कृत की प्रारम्भिक कक्षाओं में अधिक उपयोगी नहीं है क्योंकि विद्यार्थियों को इस स्तर पर संस्कृत का ज्ञान कम होता है। उच्च कक्षाओं में इसका उपयोग किया जा सकता है। कक्षा में विद्यार्थी एक-एक वाक्य का संस्कृत में अनुवाद करते जाएँ। ऐसे मौखिक अनुवाद से विद्यार्थियों को संस्कृत बोलने तथा समझने का अभ्यास होगा।

अनुवाद शिक्षण के लिए कौन-सी प्रणाली उत्तम है ?

अनुवाद शिक्षण के लिए दुभाषिया प्रणाली की उपयोगिता केवल उच्च कक्षाओं के लिए है। इसका उपयोग तभी सम्भव हो सकता है जब विद्यार्थी संस्कृत का पर्याप्त ज्ञान कर चुके हों।

'तुलना एवं अनुकरण प्रणाली का प्रयोग माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में किया जा सकता है।

प्रारम्भिक स्तर पर विद्यार्थी को अनुवाद का मौखिक अभ्यास अधिक करवाया जाए। अनुवाद शिक्षण के लिए पुस्तक प्रणाली भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है, यदि अनुवाद पुस्तकें उपयुक्त हों। अनुवाद के लिए पुस्तक प्रणाली का उपयोग संस्कृत शिक्षण के सभी स्तरों पर किया जा सकता है। परन्तु अनुवाद पुस्तकों को उतना ही महत्त्व दिया जाए जितना आवश्यक हो। संस्कृत अध्यापक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वारा पथप्रदर्शन प्रत्येक स्थिति में आवश्यक होगा ।

संस्कृत अनुवाद शिक्षण के सोपान

ऊपर लिखा जा चुका है कि संस्कृत शिक्षण में अनुवाद के अभ्यास के लिए निम्नलिखित तीन रूप हो सकते हैं :

(1) संस्कृत से मातृभाषा में अनुवाद, (2) मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद और (3) पुनरनुवाद । अनुवाद के इन तीनों रूपों के शिक्षण सोपानों में कुछ भिन्नता होगी । अतः इन दोनों रूपों के शिक्षण सोपानों को अलग-अलग लिखना ठीक होगा ।

1. संस्कृत से मातृभाषा में अनुवाद-शिक्षण के सोपान

1. प्रस्तावना

अध्यापक विद्यार्थियों से उनके पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न करे । ये प्रश्न विद्यार्थियों की अनुवाद करने की क्षमता के अनुरूप हों तथा पूर्वकृत कार्य पर आधारित हों ।

2. उद्देश्य कथन

अध्यापक विद्यार्थियों को बताए कि उन्हें अनुवाद सम्बन्धी क्या कार्य करवाया जाएगा ।

3. प्रस्तुतीकरण

(क) चुने हुए वाक्यों अथवा अनुच्छेद का सस्वर वाचन ।

(ख) अध्यापक द्वारा संस्कृत के नये शब्दों की व्याख्या । अध्यापक इस सम्बन्ध में विद्यार्थियों से प्रश्न पूछ सकता है ।

(ग) तत्पश्चात् अध्यापक की सहायता से विद्यार्थी संस्कृत के स्वतंत्र वाक्यों का अथवा अनुच्छेद के वाक्यों का एक-एक करके हिन्दी में अनुवाद करें ।

(घ) अध्यापक आवश्यकतानुसार श्यामपट का प्रयोग करें ।

(ङ) इसी क्रम से संस्कृत के वाक्यों अथवा अनुच्छेद का हिन्दी में अनुवाद करवा लिया जाए ।

(च) मौखिक कार्य के पश्चात् विद्यार्थी अपनी कापियों पर अनुवाद लिखें ।

4. संशोधन

संस्कृत से हिन्दी में अनूदित सामग्री का अध्यापक स्वयं संशोधन करें । यदि अनुवाद का मौखिक अभ्यास करवाया जा रहा हो तो साथ-साथ मौखिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूप से सशोधन किया जाए।

5. **कक्षा-कार्य अथवा गृह-कार्य**

विद्यार्थी के अनुवाद सम्बन्धी कार्य की परिपुष्टि के लिए विद्यार्थियों को कक्षा में अथवा घर पर करने के लिए कार्य दिया जाए।

2. मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद शिक्षण के सोपान

1. **प्रस्तावना**

ऊपर निर्दिष्ट 1 के उपक्रमांक 1 के अनुसार

2. **उद्देश्यकथन**

ऊपर निर्दिष्ट 1 के उपक्रमांक 2 के अनुसार

3. **प्रस्तुतीकरण**

(क) अनुवाद के लिए हिन्दी वाक्यों अथवा अनुच्छेद को श्यामपट पर लिखा जाए। यह सामग्री व्याकरण सम्बन्धी पूर्व पठित नियमों पर आधारित हो अथवा अनुवाद के अभ्यास से पूर्व अनुवाद सम्बन्धी नियम बता दिए जाएँ।

(ख) विद्यार्थियों से वाक्यों अथवा अनुच्छेद में प्रयुक्त हिन्दी शब्दों के लिए संस्कृत शब्द पूछे जाएँ और उन्हें श्यामपट पर लिख जाए।

(ग) अध्यापक अपने निर्देशन में विद्यार्थियों से वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करवाएँ।

(घ) विद्यार्थियों द्वारा बताए गए सस्कृत शब्दों का आवश्यकतानुसार मौखिक संशोधन किया जाए। यह संशोधन जहाँ तक सम्भव हो विद्यार्थियों से करवाया जाए। तत्पश्चात् लेखन कार्य किया जाए।

4. **संशोधन**

अध्यापक स्वयं अनूदित सामग्री का संशोधन करे।

5. **कक्षा-कार्य अथवा गृह-कार्य**

अभ्यास के लिए ऐसा और कार्य दिया जा सकता है।

3. पुनरनुवाद के शिक्षण सोपान

1. **प्रस्तावना तथा 2. उद्देश्य कथन**

ऊपर निर्दिष्ट 1 के उपक्रमांक 1 तथा 2 के अनुसार

3. **प्रस्तुतीकरण**

(क) अध्यापक पुनरनुवाद के लिए संस्कृत वाक्यों अथवा अनुच्छेद को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्यामपट पर लिखे। वाक्य अथवा अनुच्छेद पाठ्य सामग्री पर आधारित हो अथवा सामान्य ज्ञान पर, परन्तु वह विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप होना चाहिए।

(ख) विद्यार्थी अध्यापक के निर्देशन में संस्कृत वाक्यों अथवा अनुच्छेद का हिन्दी में अनुवाद करें। अध्यापक इस कार्य में विद्यार्थियों को यथोचित निर्देश करें।

(ग) कुछ समय के पश्चात् (अगले दिन या कुछ दिन के पश्चात्) जब विद्यार्थी इस अनुच्छेद के संस्कृत रूप को भूल जाएँ तब अध्यापक विद्यार्थियों से इसी अनुच्छेद को हिन्दी से संस्कृत में पुनः अनूदित करवाएँ।

(घ) पुनरनूदित सामग्री को विद्यार्थी अपनी कापी पर लिखें।

4. संशोधन

विद्यार्थी पुनरनूदित सामग्री की मूल सामग्री से तुलना करें तथा अपनी अशुद्धियों को ठीक करें अथवा अध्यापक विद्यार्थियों को उनकी अशुद्धियाँ बताएँ।

5. कक्षा-कार्य अथवा गृह-कार्य

पुनरनुवाद के और अधिक अभ्यास के लिए कक्षा में अथवा घर पर करने के लिए कार्य दिया जा सकता है।

संस्कृत अनुवाद शिक्षण सम्बन्धी उपयोगी सुझाव

1. अनुवाद को संस्कृत शिक्षण के लिए एक साधन माना जाए इसे साध्य न समझ लिया जाए।

2. अनुवाद शिक्षण सम्बन्धी जो पग उठाए जाएँ उनसे अनुवाद शिक्षण सम्बन्धी उद्देश्यों की पूर्ति अवश्य हो।

3. संस्कृत से हिन्दी, हिन्दी से संस्कृत तथा पुनरनुवाद सम्बन्धी अभ्यास के लिए जो वाक्य अथवा अनुच्छेद चुने जाएँ वे विद्यार्थियों के संस्कृत ज्ञान के स्तर पर मानसिक स्तर के अनुरूप हों।

4. अनुवाद के लिए चुने जाने वाले वाक्य विद्यार्थियों द्वारा पठित सामग्री अथवा पठित नियमों पर आधारित हों।

5. प्रारम्भिक स्तर पर कराया जाने वाला अनुवाद कार्य विद्यार्थियों की पाठ्य पुस्तक पर आधारित हो।

6. अनुवाद के लिए वाक्यों तथा अनुच्छेदों को ध्यान से चुना जाए। तभी विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

7. अनुवाद सम्बन्धी अभ्यास नियमित रूप से करवाया जाए, यदाकदा नहीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

8. अनुवाद शिक्षण में श्यामपट का प्रयोग अवश्य किया जाए।

9. अनुवाद शिक्षण कराते समय अध्यापक विद्यार्थियों से अधिकाधिक सामग्री निकलवाए। अपने आप ही उन्हें सब कुछ न बता दें। अध्यापक यथावश्यक केवल पथप्रदर्शन करे।

10. पुल्लिग तथा नपुंसकलिंग शब्दों के सम्बन्ध में प्राय: भ्रांति हो जाती है। पुल्लिग तथा नपुंसकलिंग शब्दों की ओर विद्यार्थियों का ध्यान-आकर्षित किया जाना चाहिए।

11. विद्यार्थियों को बताया जाए कि संस्कृत में विशेषणों का प्रयोग विशेष्यों के अनुरूप होता है जैसे प्रथमः पुरुषः, प्रथमा स्त्री, प्रथमम् पुस्तकम्।

12. विद्यार्थियों को बताया जाए कि क्रिया का अनुवाद करते समय धातु के पद, वाच्य, लकार, पुरुष और वचन का ध्यान रखा जाए।

13 अनुवाद में अर्थ के साथ-साथ मूल शैली की भी रक्षा की जाए।

14. अनुवाद मूल से दुरूह न हो। यह सुगमता से समझा जा सके।

15. संस्कृत अनुवाद के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। अतः विद्यार्थियों को अनुवाद से पूर्व व्याकरण के सम्बद्ध नियमों का अभ्यास कराया जाए।

16. विद्यार्थियों को शब्दशः अनुवाद और छायानुवाद का नहीं प्रत्युत तथ्यानुवाद का अभ्यास कराया जाए।

17. केवल उन्हीं अनुवाद पुस्तकों का प्रयोग किया जाए जो ज्ञात से अज्ञात की ओर तथा सरल से कठिन की ओर सूत्रों का अनुसरण करती हों तथा जो विद्यार्थियों के मानसिक स्तर तथा संस्कृत ज्ञान स्तर के अनुरूप हों।

18. अनुवाद में कुशलता अभ्यास से प्राप्त होती है। अतः अधिकाधिक अभ्यास कराया जाए।

19. अनुवाद सम्बन्धी अभ्यास के लिए संस्कृत अध्यापक द्वारा निर्देशन अपेक्षित है।

20. अनुवाद कार्य का संस्कृत अध्यापक द्वारा संशोधन परमावश्यक है।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत शिक्षण में अनुवाद का महत्त्व बताएँ।
2. संस्कृत अनुवाद शिक्षण के उद्देश्य क्या हैं ?
3. संस्कृत शिक्षण में अनुवाद के किन-किन रूपों का प्रयोग किया जा सकता है ?
4. अनुवाद की प्रमुख शैलियाँ कौन-सी हैं ?
5. संस्कृत अनुवाद शिक्षण की प्रमुख प्रणालियाँ बताएँ।
6. संस्कृत अनुवाद शिक्षण के लिए किन सोपानों का प्रयोग किया जाना चाहिए ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

7. पुनरनुवाद की क्या आवश्यकता है ? इसका उपयोग संस्कृत शिक्षण के किस स्तर पर किया जाना चाहिए ।
8. आपके विचार में संस्कृत अनुवाद शिक्षण की सर्वोत्तम प्रणाली कौन-सी है ?
9. अनुवाद शिक्षण के लिए दुभाषिया प्रणाली किस स्तर पर ठीक रहेगी ?
10. संस्कृत अनुवाद शिक्षण को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए आप क्या सुझाव देंगे ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 14

लिखित कार्य का संशोधन

लिखित कार्य के संशोधन का महत्त्व

संस्कृत शिक्षण में लिखित कार्य के कौन-कौन से रूप हो सकते हैं, इसकी चर्चा रचना शिक्षण, अनुवाद शिक्षण, तथा अन्य पूर्वगामी अध्यायों में की जा चुकी है। परन्तु यह लिखित कार्य तभी उपयोगी सिद्ध होगा जब इसका संशोधन भी सुचारु ढंग से किया जाएगा।

लिखित कार्य के संशोधन को अधिकांश अध्यापक अरुचिकर समझा करते हैं। इसलिए लिखित कार्य के संशोधन की प्रायः उपेक्षा कर दी जाती है। ऐसे अध्यापकों को यह स्मरण रखना होगा कि जितना महत्त्व लिखित कार्य कराने का है उससे कहीं अधिक महत्त्व संशोधन कार्य का है। सशोधन के अभाव में लिखित कार्य पर किया गया परिश्रम व्यर्थ होगा।

संस्कृत में लिखित कार्य का सशोधन और भी आवश्यक है। संस्कृत सामान्यतः बोलचाल की भाषा नहीं है। विद्यार्थी इसका ज्ञान केवल पठन-पाठन द्वारा प्राप्त करते हैं। किसी भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान जितना लिखित रूप से हो सकता है उतना मौखिक रूप से नहीं। विद्यार्थियों के लिखित कार्य का जब तक संशोधन नहीं किया जाएगा विद्यार्थी संस्कृत भाषा के लिखित रूप से परिचित नहीं हो सकेंगे। अतः संस्कृत अध्यापक के लिए यह अत्यावश्यक है कि वह विद्यार्थियों के लिखित कार्य का संशोधन करे।

संस्कृत में संज्ञा, सर्वनाम, शब्दों के रूपों की विविधता, धातुओं की अनेकरूपता, विशेषणों का संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों के लिंगों के अनुरूप प्रयोग तथा सन्धि युक्त और समास युक्त शब्दों के प्रयोग के कारण लिखित कार्य में अशुद्धियों की आशंका रहती है। जब तक संस्कृत के लिखित कार्य का संशोधन नहीं किया जाएगा तब तक विद्यार्थियों के लिखित कार्य से इन अशुद्धियों का निष्कासन नहीं हो सकेगा।

विद्यालय स्तर पर संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थी प्रायः संस्कृत शब्दकोश के प्रयोग से अपरिचित होते हैं। उनकी अक्षर-विन्यास सम्बन्धी अशुद्धियों का संशोधन संस्कृत अध्यापक को ही करना होगा।

विद्यार्थी मैट्रिक तथा हायर सैकेण्डरी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो जाते हैं पर फिर भी उनकी संस्कृत की लिखाई में अनेक अशुद्धियाँ होती हैं। इसका मुख्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कारण यही है कि उनके लिखित कार्य का संशोधन ठीक प्रकार से नहीं किया जाता है और शब्दों के संशोधित रूपों का विद्यार्थियों से अभ्यास नहीं कराया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि संस्कृत में लिखित कार्य का संशोधन कराया जाना अत्यावश्यक है। जब तक संस्कृत अध्यापक संशोधन कार्य को संस्कृत शिक्षण का एक मुख्य अंग नहीं समझेंगे संस्कृत शिक्षण का स्तर उन्नत नहीं हो पाएगा।

लिखित कार्य के संशोधन के उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के शुद्ध लिखित रूप से परिचित कराना।
2. विद्यार्थियों को शुद्ध एवं स्पष्ट रूप से संस्कृत लिखने के लिए प्रोत्साहित करना।
3. विद्यार्थियों में स्वावलम्बन की भावना जागृत करना जिससे कि वे स्वतन्त्र रूप से शुद्ध संस्कृत लिख सकें।
4. अक्षर-विन्यास, व्याकरण तथा भाषा रचना सम्बन्धी अशुद्धियों का परित्याग करना ताकि विद्यार्थी शुद्ध संस्कृत में अपने विचार व्यक्त कर सकें।

संस्कृत लेखन में सामान्य अशुद्धियाँ

विद्यार्थी संस्कृत के लिखित कार्य में प्रायः निम्नांकित प्रकार की अशुद्धियाँ करते हैं :

1. वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ।
2. व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियाँ—वचन, लिंग, काल, वाच्य, कारक, विशेषण-विशेष्य समायोजन, प्रत्यय, उपसर्ग तथा विभक्ति सम्बन्धी अशुद्धियाँ।
3. शब्द रचना सम्बन्धी अशुद्धियाँ।
4. सन्धि, समास सम्बन्धी अशुद्धियाँ।
5. विराम चिह्नों से सम्बन्धित भूलें।

लिखित कार्य के संशोधन को सरल कैसे बनाया जाए ?

विद्यार्थी संस्कृत लेखन में प्रायः दो प्रकार से अशुद्धियाँ किया करते हैं—प्रमादवश और अज्ञानवश। प्रमादवश अशुद्धियाँ विद्यार्थी असावधानी के कारण करते हैं। विद्यार्थियों का ध्यान उनकी इन भूलों की ओर आकर्षित कर दिए जाने से ऐसी अशुद्धियाँ दूर हो जाया करती हैं। जो अशुद्धियाँ विद्यार्थियों द्वारा अज्ञानवश की जाएँ उनका निराकरण प्रयास साध्य है।

1. संशोधन तीन विधियों से किया जा सकता है :

1. विद्यार्थियों द्वारा अपने-अपने कार्य का संशोधन : विद्यार्थियों द्वारा लेखन कार्य कर लिए जाने पर अध्यापक कठिन शब्दों के रूप श्यामपट पर लिख दो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दें। विद्यार्थी उनके शुद्ध रूपों को देखकर स्वयं अपने-अपने लेखन कार्य का संशोधन कर लेवें।

2. **चतुर विद्यार्थियों द्वारा संशोधन :** अध्यापक कक्षा के पाँच छः चतुर विद्यार्थियों के लिखित कार्य का संशोधन करें। ये विद्यार्थी इसी आधार पर अन्य विद्यार्थियों के लिखित कार्य का संशोधन करें।

3. **अध्यापक द्वारा संशोधन :** अध्यापक स्वयं विद्यार्थियों के लिखित कार्य का संशोधन करे।

संशोधन की उपर्युक्त इन तीनों विधियों में से अध्यापक द्वारा संशोधन सर्वोत्तम है। विद्यार्थियों का जितना पथ-प्रदर्शन अध्यापक स्वयं कर सकता है उतना चतुर विद्यार्थी नहीं। साथ ही सभी विद्यार्थी इस योग्य नहीं होते कि वे अपने कार्य का स्वयं संशोधन कर सकें।

संस्कृत अध्यापक प्रायः यह शिकायत किया करते हैं कि उनके पास कार्य अधिक होता है। वे कहते हैं कि उन्हें कई कक्षाओं को संस्कृत शिक्षण कराना होता है और एक कक्षा अथवा वर्ग में विद्यार्थियों की संख्या भी सामान्यतः अधिक होती है। संस्कृत को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा हो अथवा ऐच्छिक विषय के रूप में, विद्यार्थियों की संख्या अधिक हो अथवा न्यून, संशोधन कार्य अवश्य किया जाना चाहिए। प्रश्न है कि इस कार्य को सुगम कैसे बनाया जाए। एतदर्थ निम्नांकित कार्य किए जाने चाहिए :

1. लिखित कार्य से पूर्व मौखिक अभ्यास

संस्कृत लिखित कार्य अनुवाद के रूप में हो, पाठ्य पुस्तक पर आधारित हो अथवा व्याकरण सम्बन्धी हो, कापियों पर करवाने से पूर्व कक्षा में इसका मौखिक अभ्यास अवश्य करवाना चाहिए। ऐसे मौखिक कार्य के समय कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिख देने से विद्यार्थी शब्दों के लिखित रूप से परिचित हो जाएँगे और लिखित कार्य में वे इन शब्दों को अशुद्ध नहीं लिखेंगे। अध्यापक का संशोधन कार्य सुगम हो जाएगा।

2. संशोधन चिह्नों का प्रयोग

संशोधन करते समय संशोधन चिह्नों का प्रयोग करने से भी संशोधन कार्य सुगम होगा। निम्नांकित संशोधन चिह्न प्रयोग में लाए जा सकते हैं :

व=वर्तनी दोष (अशुद्ध शब्द के चारों ओर वृत्त O खींचकर 'व' लिख देना चाहिए।

व्या=व्याकरण दोष (अशुद्ध शब्द के चारों ओर वृत्त O खींचकर अथवा उसे रेखांकित करके 'व्या' लिख देना चाहिए।

व्याकरण में कारक, वचन, वाच्य, लिंग, उपसर्ग, प्रत्यय, काल सम्बन्धी दोषों की ओर यदि संकेत करना हो तो व्याकरण के साथ इन्हें जोड़कर लिखा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

जा सकता है, जैसे व्या /व (वचन दोष), व्या/वा (वाच्य दोष) व्या/का (कारक दोष) आदि आदि। इसी प्रकार

+ =सन्धि-दोष
+ + =समास-दोष
क्रम × =क्रमबद्धता का अभाव
ा =शब्द का लोप
? =तथ्य सम्बन्धी भूल
भाषा ? =भाषा की अस्पष्टता
विचार ? =विचार की अस्पष्टता

जहाँ विराम चिह्नों का अभाव हो वहाँ अध्यापक स्वयं विराम चिह्न लगा दे और विद्यार्थियों को भविष्य में सावधान रहने के लिए कहे।

अध्यापक विद्यार्थियों को उपर्युक्त चिह्नों के संक्षिप्त रूप समझा दे जिससे कि विद्यार्थी इन संकेतों के अनुरूप स्वयं संशोधन करें अथवा अध्यापक या शब्द-कोश से सहायता लें। संशोधन चिह्नों के प्रयोग से अध्यापक का संशोधन कार्य में कम समय लगेगा और साथ ही विद्यार्थी शुद्ध लेखन में स्वावलम्बी बन सकेंगे।

3. सामान्य त्रुटियों की सामूहिक चर्चा

कुछ अशुद्धियाँ ऐसी होती हैं जो सामान्यत: सभी विद्यार्थियों द्वारा की जाती हैं। संस्कृत अध्यापक प्रत्येक कक्षा में की जाने वाली ऐसी अशुद्धियों की सूची बना लें और उनकी सारी कक्षा के समक्ष चर्चा करे। श्यामपट की सहायता से इन शब्दों के शुद्ध रूप बता दिए जाएँ। ऐसी अशुद्धियों के दूर होने से अध्यापक का संशोधन कार्य पर्याप्त मात्रा में हलका हो जाएगा। उसे केवल विशेष-विशेष अशुद्धियों का संशोधन करना होगा।

4. लिखित कार्य का संशोधन अध्यापक स्वयं करे

जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है, लिखित कार्य का संशोधन करने की सर्वोत्तम विधि यही है कि अध्यापक स्वयं विद्यार्थियों के लिखित कार्य का संशोधन करे। ऐसा करने से विद्यार्थी लिखित कार्य को सावधानी से करेंगे और वे संशोधन के सम्बन्ध में पहले दिए गए निर्देशों का ध्यान रखते हुए अशुद्धियाँ कम करेंगे। अध्यापक को अधिक संशोधन नहीं करना पड़ेगा। साथ ही एक लाभ यह होगा कि अशुद्धियों का संशोधन करते समय अध्यापक शब्द-रूपों के निर्माण से सम्बद्ध नियमों की ओर भी निर्देश कर देगा। विद्यार्थियों की ज्ञान-वृद्धि होगी और साथ ही वे शुद्ध लेखन के लिए प्रेरित होंगे। विद्यार्थियों द्वारा संशोधन किए जाने से ये लाभ सम्भव नहीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

5. संशोधन तत्काल किया जाए

संस्कृत अध्यापक लिखित कार्य का संशोधन तत्काल करे। लिखित कार्य का संशोधन लेखन कार्य के तुरन्त पश्चात् किया जाना चाहिए। ढील करने से विद्यार्थियों को विषय तथा प्रसंग विस्मृत हो जाते हैं। तत्काल संशोधन का प्रभाव स्थायी होगा। विद्यार्थियों को शुद्ध लेखन का अभ्यास हो जाएगा और अध्यापक को संशोधन में कम श्रम करना पड़ेगा।

6. संशोधन कार्य रुचिपूर्वक किया जाए

संस्कृत अध्यापक लिखित कार्य का संशोधन रुचि से करे। इसे भार न समझे। अध्यापक द्वारा रुचि दिखाए जाने से विद्यार्थी भी लिखित कार्य को रुचि से करेंगे और अशुद्धियाँ कम होंगी। अध्यापक का संशोधन कार्य हलका हो जाएगा।

7. संशोधन निदान एवं उपचार की दृष्टि से किया जाए

संशोधन की आवश्यकता कम हो, इसके लिए एक और कार्य यह है कि संशोधन निदानात्मक एवं उपचारात्मक दृष्टि से किया जाए। विद्यार्थियों को उनकी त्रुटियों तथा दोषों की जानकारी हो। वे इन त्रुटियों को दूर करने के लिए सम्बद्ध विषयों का, पाठ्य सामग्री का अधिक ध्यान से अध्ययन करें। वे व्याकरण सम्बन्धी नियमों का मनन करें। अभ्यास करें। इस दृष्टि से किया गया संशोधन अपना स्थायी प्रभाव दिखाएगा और संस्कृत अध्यापक का संशोधन कार्य धीरे-धीरे घटता जाएगा। लिखित कार्य के संशोधन का उद्देश्य भी यही है।

लिखित कार्य में सुन्दरता का महत्त्व

संस्कृत में लिखित कार्य जहाँ शुद्ध और स्पष्ट हो वहाँ वह सुन्दर भी होना चाहिए। सुन्दर लेख पढ़ने वाले पर अच्छा प्रभाव डालता है। सुन्दर लेख जहाँ परीक्षा में परीक्षार्थी को अच्छे अंक दिलाने में सहायक होता है वहाँ यह सुरुचियों के विकास में भी सहायक होता है। संस्कृत लिखने के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग होता है। संस्कृत विद्यार्थियों की लिखाई को सुन्दर बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाने चाहिएँ:

1. जिन विद्यार्थियों का लेख अच्छा न हो उन्हें हिन्दी अक्षरों की शुद्ध आकृति बताकर इसका अभ्यास करवाना चाहिए। संस्कृत अध्यापक श्यामपट पर, कापी पर अथवा तख्ती पर विद्यार्थियों को अक्षरों को ठीक रूप से लिखना बताए।

2. विद्यार्थियों को अच्छे लेख का अभ्यास तख्ती अथवा कापी पर करवाना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

3. तख्ती पर कलम से तथा कापी पर पतली कलम अथवा मोटी निब से लिखवाया जाए।

4. सुन्दर लेख के लिए कलम अथवा पेन का ठीक पकड़ना आवश्यक है। कलम के ठीक पकड़ने से अक्षरों की आकृति आवश्यकतानुसार मोटी-पतली अपने आप बनती चलती है।

5. कलम की नोक तिरछी काटी जाए। तिरछापन 45° या 60° के आस-पास होना चाहिए। कलम की नोक फटी हो। लिखते समय कलम का गढ़ा हुआ भाग ऊपर की ओर हो परन्तु दायीं ओर कुछ झुका हो।*

6. सुन्दर लिखाई के लिए अभ्यास आवश्यक है। केवल नियमों का बता देना पर्याप्त नहीं। विद्यार्थियों को नियमित अभ्यास कराया जाए। विद्यार्थियों को उनकी लिखाई की त्रुटियों को बताया जाए, तभी वे अपनी त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

7. अध्यापक का अपना लेख अच्छा हो और वह इस कार्य में रुचि रखता हो अन्यथा वह विद्यार्थियों को सुन्दर लिखने के लिए प्रेरित नहीं कर पाएगा।

8. विद्यार्थियों को चार्ट बनाने के लिए कहा जाए। वे अच्छी लिखाई के लिए प्रेरित होंगे। ये चार्ट श्रेणी कक्ष में टँगे रहें। अन्य विद्यार्थी भी ऐसी लिखाई करना चाहेंगे।

संशोधन कार्य सम्बन्धी कुछ सुझाव

1. लिखित कार्य का संशोधन सोद्देश्य होना चाहिए अर्थात् जिस उद्देश्य से लिखित कार्य कराया गया हो उसी दृष्टि से संशोधन कार्य किया जाए। सिखाए जाने वाले व्याकरण अथवा अनुवाद सम्बन्धी नियमों को दृष्टि में रख कर संशोधन किया जाए। विद्यार्थियों का ध्यान उनकी त्रुटियों तथा बताए गए नियमों की ओर आकर्षित किया जाए। तभी सशोधन कार्य सार्थक होगा अन्यथा अशुद्धियाँ वहीं की वहीं बनी रहेंगी।

2. अध्यापक निकाली गई अशुद्धियों का शुद्ध रूप या तो स्वयं कापी पर लिख दे अथवा विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक अथवा शब्दकोश की सहायता से शुद्ध रूप लिखने को कहे। विद्यार्थी यदि प्रारम्भिक स्तर पर हों तो अध्यापक स्वयं ही शुद्ध रूप विद्यार्थियों की कापी पर लिख दे।

3. विद्यार्थी संशोधन के पश्चात् शुद्ध रूपों का अभ्यास अपनी कापियों पर अवश्य करें। अभ्यास के अभाव में विद्यार्थियों की लेखन सम्बन्धी त्रुटियाँ वहीं की वहीं बनी रहेंगी।

4. संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों के लिखित कार्य के संशोधन को बोझ

---

* विस्तार के लिए कृपया देखें—हिन्दी सुलेख, क्या, क्यों, कैसे ?—डॉ० प्रभाशंकर मिश्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न समझे। इसके प्रति उपेक्षा न बरते। अन्यथा विद्यार्थी भी लिखित कार्य को मन से नहीं करेंगे। उनके लिखित कार्य में अशुद्धियाँ अधिक होंगी। संशोधन के पश्चात् शब्दों के शुद्ध रूप का अभ्यास भी रुचि से नहीं करेंगे।

5. लिखित कार्य का संशोधन नियमित रूप से होना चाहिए। कभी करने और कभी न करने से विद्यार्थियों की शुद्ध लिखने में प्रगति बड़ी धीमी होगी।

6. जहाँ तक सम्भव हो संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों की उपस्थिति में संशोधन कार्य करे। प्रत्येक विद्यार्थी को क्रमशः बुलाया जाए और उसकी कापी देखी जाए। यदि समयाभाव के कारण ऐसा सम्भव न हो तो खाली पीरियड अथवा अवकाश के समय यह कार्य किया जाए। इस स्थिति में अध्यापक विद्यार्थियों को उनकी कापियाँ लौटाते समय उनकी त्रुटियों की ओर उनका ध्यान आकर्षित करे।

7. अगला लिखित कार्य करवाने से पूर्व पहले किए गए लिखित कार्य का संशोधन हो जाना चाहिए। अन्यथा संशोधन के लिए कार्य इकट्ठा होता जाएगा। देर से किया गया संशोधन कम प्रभावकारी होगा।

8. संशोधन लाल स्याही से किया जाए। विद्यार्थियों को उनकी गलतियाँ आसानी से दिखाई देंगी। इनके शुद्ध रूप का अभ्यास करने में विद्यार्थियों को सुविधा होगी।

9. संशोधन कार्य के लिए श्यामपट का प्रयोग लाभदायक होगा। अध्यापक अनुवाद सम्बन्धी वाक्यों तथा कठिन शब्दों के रूपों को श्यामपट पर लिख दे। विद्यार्थी अपने लिखित कार्य का स्वयं संशोधन कर लेवें। तत्पश्चात् अध्यापक भी विद्यार्थियों की कापियों पर दृष्टि डाले। जो त्रुटियाँ अभी भी रह गई हों उनकी ओर वह स्वयं विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करे।

10. संशोधन का उद्देश्य विद्यार्थियों को हतोत्साहित करना नहीं है। अतः संस्कृत अध्यापक को संशोधन का कार्य सहानुभूति से करना चाहिए।

11. सशोधन कार्य यदि अधिक हो तो भी संस्कृत अध्यापक को घबराना नहीं चाहिए। उसे इस कार्य को संस्कृत-शिक्षण का एक आवश्यक अंग समझना चाहिए और इसे सहर्ष करना चाहिए।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. लिखित कार्य का संशोधन क्यों आवश्यक है ?
2. लिखित कार्य के संशोधन के क्या उद्देश्य हैं ?
3. विद्यार्थी संस्कृत लेखन में सामान्यतः किस प्रकार की अशुद्धियाँ किया करते हैं ?
4. लिखित कार्य का संशोधन करने की कौन-सी विधियाँ हैं ?
5. आप संस्कृत के लिखित कार्य के संशोधन को कैसे सरल बनाएँगे ?
6. "संशोधन कार्य निदानात्मक एवं उपचारात्मक होना चाहिए।"—इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उक्ति से क्या भाव है ?

7. लिखित कार्य में सुन्दरता का क्या महत्त्व है ? विद्यार्थियों के लेख को सुन्दर बनाने के लिए आप क्या उपाय करेंगे ।
8. संशोधन चिह्नों का प्रयोग संशोधन कार्य में किस प्रकार सहायक होगा ?
9. लिखित काय से पूर्व मौखिक कार्य करवाने से क्या लाभ होगा ?
10. संस्कृत के लिखित कार्य के संशोधन को सुचारु बनाने के लिए संस्कृत अध्यापक को क्या करना चाहिए ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 15

संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य

संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य का महत्त्व

भाषा शिक्षण में मौखिक कार्य से अभिप्राय है वाणी के माध्यम से भाषा शिक्षण अर्थात् विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे भाषा को श्रवण द्वारा समझने तथा अपने विचारों को मुख द्वारा अभिव्यक्त करने में सक्षम हो सकें।

शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षण में मौखिक कार्य की उपयोगिता पर वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा यह सिद्ध किया है कि मौखिक कार्य के अभाव में शिक्षण की प्रक्रिया अपूर्ण रहती है। साथ ही विद्यार्थी धारा प्रवाह से अपने विचारों को व्यक्त करने में अभ्यस्त नहीं हो पाते हैं।

संस्कृत शिक्षण के मौखिक कार्य का महत्त्व आरम्भ से ही है। पुस्तकों के प्रचलन से पूर्व संस्कृत शिक्षण का रूप मुख्यतः मौखिक था। मौखिक वाचन, प्रवचन तथा श्रवण द्वारा ग्रहण पर विशेष बल दिया जाता था। आज भी संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य का महत्त्व अक्षुण्ण है। संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य का महत्त्व निम्नांकित दृष्टिकोणों से है :

1. मौखिक कार्य के माध्यम से विद्यार्थी संस्कृत ध्वनियों को सुनने और समझने में अभ्यस्त हो जाते हैं।

2. विद्यार्थी संस्कृत ध्वनियों तथा शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने में प्रशिक्षित हो जाते हैं।

3. मौखिक कार्य की सहायता से विद्यार्थी संस्कृत शब्दावली शीघ्रतापूर्वक ग्रहण कर लेते हैं।

4. मौखिक कार्य द्वारा संस्कृत विद्यार्थियों की शब्दावली में वृद्धि तीव्र गति से होती है।

5. मौखिक कार्य द्वारा विद्यार्थी संस्कृत शिक्षण के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित होते हैं।

6. मौखिक कार्य संस्कृत-शिक्षण की गति को तीव्र बनाता है।

7. मौखिक कार्य में भाषा विषयक संशोधन साथ-साथ होता चलता है। अतः संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य का लिखित कार्य की अपेक्षा अधिक अवलम्बन किया जा सकता है।

8. शिक्षण का माध्यम मुख्यतः मौखिक होता है। संस्कृत शिक्षण का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माध्यम भी मुख्यतः मौखिक है।

9. मौखिक कार्य पाठ्य पुस्तक के पठन में सहायक बनता है। सस्वर वाचन पढ़ने में शुद्धता और गति उत्पन्न करता है।

10. लिखित कार्य से पूर्व मौखिक कार्य आवश्यक होता है। संस्कृत शिक्षण में भी मौखिक कार्य लिखित कार्य का मूलाधार है।

11. पठित पाठ की पुनरावृत्ति के लिए मौखिक कार्य की आवश्यकता है।

संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य के उद्देश्य

संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य मुख्यतः निम्नांकित उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर किया जाता है :

1. विद्यार्थियों में संस्कृत ध्वनियों तथा शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने की योग्यता उत्पन्न करना।

2. विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा का श्रवण द्वारा ग्रहण करने तथा समझने की योग्यता उत्पन्न करना।

3. विद्यार्थियों को सरल संस्कृत में वार्तालाप करने के योग्य बनाना।

4. विद्यार्थियों को अपने विचारों को सरल संस्कृत में शुद्ध तथा स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के योग्य बनाना।

उपर्युक्त उद्देश्य किसी एक स्तर पर प्राप्त नहीं किए जा सकते। इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रारम्भिक स्तर पर प्रयास आरम्भ किया जाएगा और माध्यमिक तथा उच्च स्तरों पर भी यह प्रयास चलता रहेगा।

संस्कत शिक्षण में मौखिक कार्य के विविध रूप

संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य के अनेक रूप हो सकते हैं। इनमें से प्रमुख निम्नांकित हैं :

1. सरल वाक्य रचना

आरम्भिक स्तर पर मौखिक कार्य के रूप में संस्कृत शब्दों से सरल वाक्य बनवाए जा सकते हैं। एषः बालकः अस्ति, बालकः पुस्तकं पठति, बाला गच्छति– जैसे वाक्य संस्कृत पठनारम्भ कर्ताओं से बनवाए जाएँ। आगे की कक्षाओं में क्रीडकः, शावकः, अभिधानम्, विहाय, द्रष्टुम् जैसे शब्दों से वाक्य बनवाए जा सकते हैं। ज्यों-ज्यों स्तर बढ़े संस्कृत वाक्यों का स्तर बढ़ाया जा सकता है। विद्यार्थियों को मौखिक अभिव्यक्ति में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में वाक्य रचना का प्रथम स्थान है।

2. प्रश्नोत्तर

विद्यार्थी जब संस्कृत के छोटे-छोटे वाक्य बनाने लग जाएँ तब मौखिक कार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के रूप में प्रश्नोत्तर का अभ्यास कराया जा सकता है। जैसे :

प्र० एतत् किम् ?
उ० एतत् पुस्तकम् अस्ति।
प्र० एतत् कस्य पुस्तकम् ?
उ० एतत् मम पुस्तकम् अस्ति।
प्र० बालकाः कुत्र क्रीडन्ति ?
उ० बालकाः क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति।
प्र० तुभ्यं का क्रीडा रोचते ?
उ० मह्यम् हस्तकन्दुक-क्रीडा रोचते।

आरम्भ में विद्यार्थियों से संस्कृत में ऐसे प्रश्नोत्तर किए जाएँ। धीरे-धीरे प्रश्नोत्तर के विषयों तथा स्तर को उन्नत किया जा सकता है।

3. वार्त्तालाप

अध्यापक छात्रों से अथवा छात्र परस्पर संस्कृत में वार्त्तालाप करें। वार्त्तालाप का विषय विद्यार्थियों की रुचि पर आधारित होना चाहिए। अथवा अध्यापक विद्यार्थियों की ज्ञानवृद्धि की दृष्टि से कोई भी विषय प्रस्तुत कर सकता है। जैसे :

अध्यापक :— कुतः आगतः ?
छात्र :— गृहात् आगतः।
अध्यापक :— किमिच्छसि त्वम् ?
छात्र :— व्याकरण पठितुम् इच्छामि।
अध्यापक :— व्याकरणे किम् पठिष्यसि ?
छात्र : — संज्ञा प्रकरणम् पठिष्यामि।

इसी प्रकार वार्त्तालाप के क्रम को और आगे बढ़ाया जा सकता है। वार्त्तालाप द्वारा विद्यार्थी संस्कृत में मौखिक अभिव्यक्ति के लिए प्रशिक्षित होंगे।

4. चित्र-वर्णन

आरम्भिक स्तर पर मौखिक कार्य के लिए विद्यार्थियों को चित्र दिखाकर चित्र के सम्बन्ध में प्रश्न किए जा सकते हैं। जैसे :

अध्यापक :— कस्य इदम् चित्रम् ?
छात्र :— क्रीडाक्षेत्रस्य।
अध्यापक :— त्वम् चित्रे किम् पश्यसि ?
छात्र :— अहम् चित्रे क्रीडकान् पश्यामि।
अध्यापक : — क्रीडकाः कुत्र तिष्ठन्ति ?
छात्र :— क्रीडकाः स्वेषु स्थानेषु सावधानाः तिष्ठन्ति।

चित्र के आधार पर इसी प्रकार प्रश्नोत्तर को आगे बढ़ाया जा सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

5. दृश्य वर्णन

इसी प्रकार वाटिका वर्णनम्, शालागृह वर्णनम्, उत्सव वर्णनम्, ग्राम-वर्णनम् आदि दृश्यों के मौखिक वर्णन के लिए प्रश्नोत्तर किए जा सकते हैं।

6. घटना विवरण तथा कथा वर्णन

विद्यार्थियों को द्विचक्रिका-दुर्घटना, नाव दुर्घटना जैसी घटनाओं का विवरण तथा 'मूढा बकः' 'गर्दभ गीतम्' जैसी कथाओं का वर्णन मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है। इस सम्बन्ध में संस्कृत अध्यापक को विद्यार्थियों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करने होंगे।

7. सस्वर वाचन

संस्कृत श्लोकों, पद्यांशों तथा मन्त्रों के सस्वर वाचन द्वारा विद्यार्थियों को संस्कृत ध्वनियों तथा शब्दों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जा सकता है। सस्वर वाचन वैयक्तिक भी कराया जा सकता है और सामूहिक भी। विद्यार्थी सस्वर वाचन में रुचि रखते हैं। वे सामूहिक सस्वर वाचन में विशेष आनन्द का अनुभव करते हैं।

8. भाषण तथा वादविवाद

उच्च कक्षाओं में संस्कृत में मौखिक कार्य के लिए भाषण तथा वादविवाद का उपयोग किया जा सकता है। भाषण तथा वादविवाद के विषय विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप हों। अनुभवगत विषयों पर विद्यार्थी सुगमता से विचार प्रकाशन कर सकेंगे। विषयों के चयन के सम्बन्ध में विद्यार्थियों से सुझाव मांगे जा सकते हैं। विज्ञानस्य चमत्काराः, आरोग्यम्, शिक्षायाः महत्त्वम्, भारत देशस्य महिमा आदि विषयों पर भाषण देने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। स्त्री शिक्षा, पाश्चात्य संस्कृति, विश्वश्यान्त्युपायाः आदि सामान्य प्रकरणों पर संस्कृत में वादविवाद करवाया जा सकता है। संस्कृत अध्यापक के समुचित निर्देशन से ही विद्यार्थी इस मौखिक कार्य को सुचारु रूप से कर सकेंगे।

9. नाटक अभिनय

माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों को संस्कृत नाटकों के रोचक दृश्यों तथा एकांकी नाटकों का अभिनय करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। अभिनय करने से पूर्व नाटक अथवा नाटक के दृश्य विद्यार्थियों द्वारा पढ़ लिए गए होंगे तो और अच्छा होगा। यह सामग्री ऐसी होनी चाहिए कि श्रोता विद्यार्थी इसे समझ सकें। अभिनय के लिए उन विद्यार्थियों को चुना जाए जिनका संस्कृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उच्चारण शुद्ध हो। वेशभूषा रंगमंच आदि के आयोजन से यह कार्य अधिक रोचक बन सकेगा। इस कार्य में संस्कृत अध्यापक की अपनी रुचि तथा उस द्वारा निर्देशन आवश्यक होगा।

मौखिक कार्य की प्रक्रिया

संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य के कौन-कौन से विविध रूप हो सकते हैं, इसकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है। अब प्रश्न है कि कक्षा में संस्कृत का मौखिक कार्य किस प्रकार करवाना है अर्थात् इसके लिए किन सोपानों का अवलम्बन करना है।

मौखिक कार्य का रूप अति व्यापक है। मौखिक कार्य को कृत्रिम रूप न दिया जाए। कक्षा में प्रत्येक अवसर पर इसका नियमित उपयोग किया जा सकता है। पाठ्य पुस्तक पढ़ाते समय अथवा संस्कृत शिक्षण सम्बन्धी अन्य कार्य करवाते समय कितने ही ऐसे अवसर आएँगे जहाँ संस्कृत अध्यापक संस्कृत में मौखिक कार्य करवा सकता है। ऐसे प्रश्नोत्तरों, शब्द प्रयोगों, कथा वर्णनों के लिए औपचारिक शिक्षण-सोपानों की आवश्यकता नहीं होगी। संस्कृत अध्यापक को अवसर के अनुकूल सूझ-बूझ से कार्य करना होगा।

हाँ यदि वार्त्तालाप किसी प्रकार का क्रमबद्ध वर्णन, भाषण, वाद-विवाद, नाटक अभिनय आदि का अभ्यास विद्यार्थियों को कराना हो तो उसके लिए आवश्यकतानुसार निम्नांकित सोपानों का उपयोग किया जा सकता है :

1. **प्रस्तावना**

संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों से मौखिक विषय से सम्बन्धित प्रश्न करे।

2. **उद्देश्य कथन**

प्रस्तावना के सोपान में विद्यार्थियों की विषय की ओर रुचि हो जाने पर अध्यापक छात्रों को बताए कि वह उन्हें क्या कराना चाहता है।

3. **प्रस्तुतीकरण**

दृश्य वर्णन, घटना विवरण, वाद-विवाद, भाषण अथवा मौखिक कार्य के सम्बन्ध में अध्यापक विद्यार्थियों को संस्कृत में उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करे। विद्यार्थी जहाँ अशुद्धियाँ करें उनका संशोधन वह साथ-साथ करता जाए। प्रश्नोत्तर में सारी कक्षा को सक्रिय रखा जाए। अध्यापक विद्यार्थियों का उच्चारण भी, जहाँ आवश्यक हो शुद्ध कराए। कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखा जा सकता है।

4. **आवृत्ति**

यदि आवश्यक हो तो कराए गए मौखिक कार्य के सम्बन्ध में आवृत्त्यात्मक प्रश्न पूछे जाएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

5. प्रयोगात्मक अभ्यास

कराए गए मौखिक कार्य से मिलता-जुलता और अभ्यास कराया जा सकता है।

मौखिक कार्य सम्बन्धी कुछ उपयोगी सुझाव

संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य के सम्बन्ध में निम्नांकित सुझाव उपयोगी सिद्ध होंगे :

1. संस्कृत में मौखिक कार्य के लिए पाठ योजना के कृत्रिम बन्धन में न पड़ा जाए। पाठ योजना का उपयोग वहीं किया जाए जहाँ विद्यार्थियों को नये मौखिक कार्य के सम्बन्ध में प्रशिक्षण दिया जा रहा हो।

2. मौखिक कार्य यदि विशेष प्रकार का हो जैसे चित्र वर्णन, दृश्य वर्णन, वाद-विवाद आदि, तो इसके लिए अलग पीरियड में कार्य कराया जा सकता है। यह कार्य संस्कृत अध्यापक को सुबद्ध पाठ योजना के सोपानों के अनुसार कराना होगा। पाठ्य पुस्तक को पढ़ाते समय तथा अन्य सामान्य विषय पढ़ाते समय प्रश्नोत्तर के माध्यम से भी मौखिक कार्य के उद्देश्यों की पर्याप्त प्राप्ति हो सकती है।

3. मौखिक कार्य के लिए सर्वोत्तम साधन प्रश्नोत्तर है। संस्कृत अध्यापक को इस साधन का अधिकाधिक अवलम्बन करना चाहिए।

4. मौखिक कार्य के लिए यह आवश्यक है कि संस्कृत अध्यापक का अपना उच्चारण शुद्ध हो। तभी वह विद्यार्थियों के उच्चारण का संशोधन कर सकेगा।

5. मौखिक कार्य सम्बन्धी प्रश्नोत्तर का स्तर विद्यार्थियों के संस्कृत ज्ञान के अनुरूप होना चाहिए।

6. मौखिक कार्य की अधिक आवश्यकता आरम्भिक स्तर पर होती है। आरम्भिक स्तर पर मौखिक अभ्यास से आगामी स्तरों का कार्य सुगम बनेगा। अतः संस्कृत अध्यापक को चाहिए कि वह पाठ्य पुस्तक पढ़ाते समय विद्यार्थियों से अधिकाधिक प्रश्नोत्तर करे।

7. संस्कृत विद्यार्थियों की बोलचाल की भाषा नहीं है। वे इसका प्रयोग इतनी सुविधा से नहीं कर सकते जितनी सुविधा से मातृभाषा का। अतः संस्कृत में मौखिक कार्य श्रमसाध्य होगा। संस्कृत अध्यापक को इस ओर रुचि दिखानी होगी।

8. संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों को मौखिक कार्य का अभ्यास सहानुभूति-पूर्वक कराए।

9. मौखिक कार्य के लिए विषय विद्यार्थियों के निजी अनुभवों तथा समीपस्थ वातावरण से सम्बन्धित होने चाहिएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य का क्या महत्त्व है ?
2. संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य किन उद्देश्यों से करवाया जाना चाहिए ?
3. संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य के कौन-कौन से रूप हो सकते हैं ?
4. नाटक-अभिनय संस्कृत मौखिक कार्य में किस प्रकार सहायक होगा ?
5. संस्कृत मौखिक कार्य के लिए औपचारिक प्रक्रिया कहाँ तक आवश्यक है ?
6. मौखिक कार्य प्रक्रिया के लिए आप कौन-से सोपान आवश्यक समझते हैं ?
7. मौखिक कार्य में प्रश्नोत्तर का क्या महत्त्व है ?
8. संस्कृत मौखिक कार्य में सस्वर वाचन का महत्त्व बताएँ।
9. संस्कृत पाठ्य पुस्तक पढ़ाते समय आप किस प्रकार का मौखिक कार्य करवाएँगे ?
10. संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य को सुचारु बनाने के लिए संस्कृत अध्यापक को क्या करना होगा ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 16

संस्कृत की पाठ्य पुस्तकें

संस्कृत शिक्षण में पाठ्य पुस्तक का महत्त्व

प्राचीन काल में मौखिक शिक्षण की परम्परा थी। पाठ्य पुस्तकों का स्थान गौण था। अब स्थिति इसके विपरीत है। पाठ्य पुस्तकें आधुनिक शिक्षण प्रणाली का मुख्य आधार बनी हुई हैं। प्रारम्भिक स्तर स लेकर उच्च स्तर तक पाठ्य पुस्तक का ही अवलम्बन किया जाता है। पाठ्य पुस्तकों को रट कर विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं। पाठ्य पुस्तकों पर निर्भरता के कारण शिक्षण के अन्य साधनों की उपेक्षा तक कर दी जाती है।

शिक्षण में पाठ्य पुस्तक का निःसन्देह महत्त्व है। परन्तु पाठ्य पुस्तक को ही शिक्षण का प्रथम तथा अन्तिम साधन मान लेना ठीक नहीं है। पाठ्य पुस्तक पर अत्यधिक निर्भरता से विद्यार्थी आत्म विश्वास खो बैठते हैं। अध्यापक विद्यार्थियों के ज्ञान को क्रियात्मक नहीं बना पाते। अतः पाठ्य पुस्तकों का प्रयोग उसी रूप में किया जाए जितना आवश्यक हो। पाठ्य पुस्तकों के साथ-साथ शिक्षण के अन्य साधनों का भी प्रयोग किया जाए।

पाठ्य पुस्तक की उपादेयता विद्यार्थियों तथा अध्यापकों—दोनों के लिए है। विद्यार्थी पठित ज्ञान को पाठ्य पुस्तक के माध्यम से परिपुष्ट करते हैं। अध्यापक पाठ्य सामग्री में पाठ्य पुस्तक के माध्यम से क्रमिकता लाते हैं। इस प्रकार पाठ्य पुस्तक विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए एक अनिवार्य अवलम्बन है। परन्तु एकमात्र अवलम्बन नहीं।

भाषा शिक्षण में पाठ्य पुस्तकों का अवलम्बन आवश्यक है क्योंकि विद्यार्थियों को विषय वस्तु के साथ-साथ भाषा का रूप भी सिखाना होता है। संस्कृत भाषा प्रायः विद्यार्थियों की मातृभाषा नहीं है। अतः संस्कृत शिक्षण में पाठ्य पुस्तक का अवलम्बन और भी आवश्यक है। विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के रूप से परिचित कराने के लिए आरम्भ से ही पाठ्य पुस्तक का अवलम्बन आवश्यक है। पाठ्य विषय के उत्तरोत्तर शिक्षण के लिए तथा संस्कृत शैक्षणिक स्तर में समरूपता लाने के लिए भी पाठ्य पुस्तक का प्रयोग आवश्यक है।

संस्कृत पाठ्य पुस्तकों के प्रकार

1. संस्कृत पाठ्य पुस्तकें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

1. संस्कृत प्रवेशिका—आरम्भिक विद्यार्थियों के लिए।
2. संस्कृत संग्रह—गद्य-पद्य मिश्रित—माध्यमिक कक्षाओं के लिए।
3. संस्कृत संग्रह—गद्य-पद्यमय मौलिक सामग्री—उच्च कक्षाओं के लिए।

2. संस्कृत व्याकरण की पुस्तकें
3. संस्कृत अनुवाद सम्बन्धी पुस्तकें।

संस्कृत पाठ्य पुस्तकों के आवश्यक गुण

संस्कृत पाठ्य पुस्तकें किसी भी स्तर की हों उनमें निम्नलिखित गुण होने आवश्यक हैं :

(क) आन्तरिक पक्ष

1. पाठ्य सामग्री

1. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों की पाठ्य सामग्री विद्यार्थियों के मानसिक एवं शारीरिक विकास के अनुरूप हो। छोटे बच्चों की कहानियों में रुचि होती है। अतः आरम्भिक स्तर के लिए पाठ्य पुस्तकों में कहानियों की संख्या अधिक होनी चाहिए। किशोरावस्था के विद्यार्थी प्रकृति वर्णन, यात्रा वर्णन और जीवनियाँ पसंद करते है। अतः इस स्तर के लिए पाठ्य पुस्तकों में ऐसे ही विषय होने चाहिएँ।

2. पाठ्य सामग्री विद्यार्थियों के निकटवर्ती वातावरण से सम्बन्धित होनी चाहिए। ऐसे विषयों को पढ़ने में विद्यार्थी अधिक रुचि दिखाएँगे।

3. पाठ्य सामग्री विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप हो। बालकों की खेल तमाशों, सैर और प्रकृति सम्बन्धी दृश्यों में रुचि होती है। अतः संस्कृत पाठ्य पुस्तकों में ऐसे विषय अवश्य होने चाहिएँ। उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक तथा सामाजिक विषयों में रुचि होती है। उनके लिए ऐसे विषय होने चाहिएँ। बालक हास्य विनोद में भी रुचि रखते हैं। अतः संस्कृत पाठ्य पुस्तकों में ऐसी सामग्री भी होनी चाहिए।

4. पाठ्य पुस्तक में एक जैसी पाठ्य सामग्री से विद्यार्थी ऊब जाते हैं। अतः पाठ्य सामग्री में विविधता होनी चाहिए। संस्कृत संग्रहों में गद्य-पद्य दोनों प्रकार के पाठ हों। गद्य पाठों में भी लघु कथा, प्रकृति वर्णन तथा जीवनी सम्बन्धी पाठों के मिश्रण से पाठ्य पुस्तक में विविधता लाई जाए। विविधता से रोचकता बढ़ेगी।

5. पाठ अधिक लम्बे न हों। अधिक लम्बे पाठों से बालक ऊब जाते हैं। विषय में तारतम्यता नहीं रहती। आरम्भिक स्तर पर संस्कृत पाठ ऐसे हों जो एक अथवा दो दिन में समाप्त हो जाएँ। माध्यमिक कक्षाओं में भी अधिक लम्बे पाठ नहीं होने चाहिएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

6. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों में ऐसे पाठ आवश्य हों जिनमें विद्यार्थियों का नैतिक विकास सम्भव हो। संस्कृत संग्रह में नीतिपरक लघु कथाएँ तथा शिक्षाप्रद सुभाषित हों।

7. प्रायः कह दिया जाता है कि संस्कृत पुरानी भाषा है। संस्कृत पाठ्य पुस्तकों की प्राचीन कथाओं के आधार पर ऐसा कह दिया जाता है। प्राचीन कथाओं का होना भी आवश्यक है क्यों कि वे हमारी संस्कृति की सूचक हैं। परन्तु साथ ही वैज्ञानिक आविष्कार, प्रजातन्त्र, पंचायत, नगरपालिका, वर्तमान नेताओं की जीवनियाँ जैसे आधुनिक विषयों का समावेश भी संस्कृत पाठ्य पुस्तकों में किया जाना चाहिए।

2. विषय प्रतिपादन एवं प्रस्तुतीकरण

1. पाठ्य पुस्तक में समाविष्ट विषय प्रतिपादन की दृष्टि से उपयुक्त हों। विषय प्रतिपादन प्रकरणानुकूल हो। प्रसंग विरुद्ध निरूपण न हो। पाठ्य सामग्री का प्रतिपादन विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो। एक ही विषय का सरल ढंग से भी निरूपण किया जा सकता है और जटिल ढंग से भी। संस्कृत पाठ्य पुस्तक में विद्यार्थियों के लिए विषय का निरूपण सरल ढंग से किया हुआ हो।

2. पाठ्य पुस्तक की पाठ्य सामग्री व्यवस्थित हो। सभी गद्य पाठ एक साथ न रखे जाएँ। बीच-बीच में पद्य पाठ भी हों। एक जैसे गद्य पाठों को एक साथ न रखा जाए। पाठ्य पुस्तक में ऋतुओं तथा उत्सवों से सम्बद्ध पाठ यथास्थान रखे जाएँ। ग्रीष्म ऋतु का वर्णन पुस्तक के आरम्भ में हो। होलिकोत्सव सम्बन्धी पाठ पाठ्य पुस्तक के अन्त में हों।

3. अभ्यास

संस्कृत पाठ्य पुस्तक में प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास अवश्य दिया गया हो। अभ्यास निम्नांकित विषयों पर होने चाहिएँ :

1. शब्दार्थ
2. शब्दों का वाक्यों में प्रयोग
3. अर्थ ग्रहण
4. व्याकरण—सन्धि, समास, आदि पर
5. रिक्त स्थान पूर्ति
6. गद्यांशों, पद्यांशों की व्याख्या
7. अनुवाद—संस्कृत से हिन्दी में तथा हिन्दी से संस्कृत में
8. अन्य यथावश्यक प्रश्न।

अभ्यास सम्बन्धी प्रश्न मौखिक तथा लिखित दोनों प्रकार के हों। प्रश्न विद्यार्थियों की भाषा के अनुकूल हों। प्रश्न ऐसे हों जिनसे पाठ की पुनरावृत्ति पूर्णरूपेण हो सके।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

4. शब्दार्थ

विद्यार्थियों की सुविधा के लिए तथा शब्दार्थ की समरूपता के लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में उस पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ अवश्य दिए जाने चाहिएँ। पाठ्य पुस्तक के अन्त में एक ही स्थान पर शब्दार्थ देना विद्यार्थियों को अधिक सुविधाजनक नहीं होता।

5. भाषा और शैली

1. संस्कृत पाठ्य पुस्तक की भाषा विद्यार्थियों के योग्य स्तर के अनुरूप हो। दुरूह भाषा से विद्यार्थी ऊब जाते हैं। संस्कृत पाठ्य पुस्तकों में भाषा का सुबोध होना और भी आवश्यक है जिससे कि लोगों को संस्कृत भाषा को दुरूह कहकर कटु आलोचना करने का अवसर न मिले।

2. पाठ्य पुस्तक में पाठ्य विषयों के साथ-साथ भाषा का भी वर्गीकरण हो। पाठ्य पुस्तक के पाठों का वर्गीकरण करते समय सरल से कठिन की ओर नामक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त का ध्यान रखना चाहिए। प्रारम्भिक कक्षाओं में सन्धि और समास से रहित छोटे-छोटे सरल वाक्य हों। भाषा की कठिनता के स्तर को धीरे-धीरे बढ़ाया जाए।

3. पाठ्य पुस्तक में शब्दावली नियन्त्रित हो। शब्दावली का नियन्त्रण विद्यार्थियों द्वारा ग्रहण की गई सामग्री के आधार पर होना चाहिए। नवीन शब्दावली का सभी पाठों में वितरण सम हो। पाठ्य पुस्तक में नवीन शब्दों की पर्याप्त आवृत्ति हो।

4. पाठ्य पुस्तक में उन संस्कृत शब्दों की बहुलता होनी चाहिए जो मातृ-भाषा में तत्सम रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं जैसे रुचि, कन्या, सागर, गति, भ्रमर, नृत्य, गृह, क्षेत्र आदि।

5. पाठ्य पुस्तक में ऐसे शब्दों का प्रयोग अधिक होना चाहिए जिनका विद्यार्थियों के निकटवर्ती वातावरण से सम्बन्ध हो जैसे वायुयान, आग, ध्वज, द्वार, शिक्षा, छात्र, श्यामपट आदि।

6. पाठ्य पुस्तक के पाठों में व्याकरण रूपों का प्रयोग भी नियन्त्रित हो। आरम्भिक पुस्तकों में सन्धि तथा समास का अभाव होना चाहिए। पाठ के अन्त-र्गत व्याकरण के एक अथवा दो से अधिक नवीन रूपों का परिचय न हो। नवीन व्याकरण रूपों की पाठ में पर्याप्त आवृत्ति की गई हो। इस पर आधारित पाठ के अन्त में अभ्यासात्मक प्रश्न भी हों।

7. धातुओं, पदों तथा कालों का प्रयोग क्रमिक होना चाहिए जिससे कि संस्कृत पाठ्य पुस्तक की भाषा बोझिल एवं दुरूह न बने।

8. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों की शैली विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर के अनुकूल हो। विद्यालयों में प्रयुक्त की जाने वाली संस्कृत पुस्तकों की शैली जटिल न हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ख) बाह्य पक्ष

1. प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर और उच्च स्तर पर भी संस्कृत शिक्षण के लिए प्रायः संस्कृत संग्रहों का प्रयोग किया जाता है। अतः इनका सम्पादन ध्यानपूर्वक किया जाना चाहिए। कक्षा के स्तर के अनुरूप पाठों का आकार रखा जाए। जो सामग्री प्रसंग विरुद्ध एवं अवाञ्छनीय हो उसे सम्पादन के समय पाठ्य पुस्तक में न रखा जाए। परन्तु सम्पादन में विषय की क्रमिकता भंग न हो।

2. पुस्तक का आकार उचित हो। पुस्तक का आकार आवश्यकतानुकूल बड़ा तथा छोटा हो। आरम्भिक स्तर पर पुस्तक का आकार 6″×4″ की अपेक्षा बड़ा हो। परन्तु पृष्ठों की संख्या की दृष्टि से यह अधिक मोटी न हो।

3. छपाई के लिए बढ़िया कागज़ प्रयुक्त किया जाए। चित्रों के लिए आर्ट पेपर प्रयुक्त किया जाए।

4. चित्र आकर्षक तथा रंगीन हों। चित्रों को यथोचित स्थान पर रखा जाए।

5. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों की छपाई—
   1. सुन्दर हो।
   2. आरम्भिक स्तर के लिए पाठ्य पुस्तकों में 16 बिन्दु के अक्षर तथा आगे के स्तरों पर पाठ्य पुस्तकों में 12 बिन्दु के अक्षर प्रयुक्त किए जाएँ। पाठों के शीर्षक 20 से 32 बिन्दु के अक्षरों में होने चाहिएँ।
   3. मुद्रण के समय दो शब्दों के मध्य $\frac{1}{8}$″ तथा दो पंक्तियों के बीच $\frac{1}{4}$″ स्थान छोड़ा जाए।
   4. छपाई शुद्ध एव उच्च स्तर की हो। मुद्रण में अशुद्धियाँ न आने पाएँ।

6. संस्कृत पाठ्य पुस्तक की जिल्द सुदृढ़ और बाह्य आवरण आकर्षक हो।

7. संस्कृत पाठ्य पुस्तक का मूल्य थोड़ा हो।

संस्कृत पाठ्य पुस्तकों के प्रयोग से सम्बद्ध कुछ उपयोगी सुझाव

1. संस्कृत अध्यापक पाठ्य पुस्तक का प्रयोग संस्कृत शिक्षण के समय अपने पथप्रदर्शन के लिए करे। वह पाठ्य पुस्तक की रूपरेखा के अन्तर्गत विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाए।
2. वह पाठ्य पुस्तकगत पाठ्य सामग्री की अपनी योग्यता के आधार पर यथावश्यक व्याख्या करे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

3. संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों को पठित ज्ञान की पुष्टि के लिए पाठ्य पुस्तक को घर पर पढ़ने के लिए प्रेरित करे।
4. वह विद्यार्थियों को घर पर करने के लिए ऐसा काम दे जिसके लिए पाठ्य पुस्तक का पठन आवश्यक हो।
5. पाठ्य पुस्तक की उत्तमता उसके प्रयोग पर निर्भर करेगी। अतः संस्कृत अध्यापक को पाठ्य पुस्तक का समुचित प्रयोग करना चाहिए। समुचित प्रयोग तब होगा जब संस्कृत अध्यापक संस्कृत शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति संस्कृत पाठ्य पुस्तक के माध्यम से कर पाएगा।
6. संस्कृत अध्यापक पाठ्य पुस्तक का प्रयोग इतनी उत्तमता से करे कि विद्यार्थी संस्कृत पाठ्य पुस्तक को बार-बार पढ़ने के लिए उत्सुक हों।
7. पाठ्य पुस्तक का प्रयोग इतनी रोचकता से किया जाए कि विद्यार्थी संस्कृत की अतिरिक्त सहायक पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित हों।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. शिक्षण में पाठ्य पुस्तक की क्या आवश्यकता है ?
2. संस्कृत शिक्षण में पाठ्य पुस्तक का क्या महत्त्व है ?
3. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों के लिए कौन-से गुण अपेक्षित है ?
4. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों की पाठ्य सामग्री कैसी होनी चाहिए ?
5. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों में पाठों के अन्त में अभ्यास किस प्रकार के होने चाहिएँ ?
6. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों में शब्दार्थ देना क्यों आवश्यक है ?
7. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों की भाषा कैसी होनी चाहिए।
8. पाठ्य पुस्तकों के बाह्य पक्ष से आप क्या समझते हैं ?
9. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों का मुद्रण, छपाई के लिए कागज तथा बाह्य आवरण कैसा होना चाहिए ?
10. संस्कृत पाठ्य पुस्तकों के प्रयोग के सम्बन्ध में संस्कृत अध्यापक के लिए कौन-सी बातें जानना आवश्यक है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 17

संस्कृत शिक्षण में श्रव्य-दृश्य साधनों का उपयोग

संस्कृत शिक्षण में श्रव्य-दृश्य साधनों का महत्त्व

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि हमारी अनुभूति स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर बढ़ती है। इसलिए बालकों को सूक्ष्म अनुभूति कराने के लिए स्थूल अनुभूति के माध्यम को अपनाना आवश्यक है। स्थूल अनुभूति के माध्यम के रूप में स्थूल साधनों की आवश्यकता होगी। ये स्थूल साधन ही श्रव्य-दृश्य साधन हैं।

श्रव्य-दृश्य साधनों का महत्त्व निम्नांकित दृष्टिकोणों से है :

1. शिक्षण के समय विद्यार्थियों की श्रवण एवं दर्शन इन्द्रियों के आकर्षण के लिए।
2. पाठ्य वस्तु को सार्थक तथा सुग्राह्य बनाने के लिए।
3. विषयवस्तु को रोचक बनाने के लिए।
4. पठित ज्ञान को परिपुष्ट करने के लिए।

उपर्युक्त दृष्टिकोणों से किसी भी विषय को पढ़ाने के लिए श्रव्य-दृश्य साधनों का महत्त्व है। अतः संस्कृत शिक्षण के लिए भी इन्हीं दृष्टिकोणों से इन साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इन साधनों के प्रयोग से संस्कृत शिक्षण रोचक बनेगा। अधिकाधिक विद्यार्थी इस विषय की ओर आकर्षित होंगे।

संस्कृत शिक्षण के लिए उपयोगी श्रव्य-दृश्य साधन

संस्कृत शिक्षण के लिए निम्नांकित श्रव्य-दृश्य साधनों का उपयोग किया जा सकता है :

दृश्य साधन—

1. श्यामपट
2. चित्र
3. मानचित्र
4. चार्ट
5. मॉडल
6. प्रोजेक्टर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रव्य-दृश्य — 7. रेडियो
8. ग्रामोफोन
श्रव्य-दृश्य साधन — 9. नाटक
10. टेलीविज़न

संस्कृत शिक्षण में विभिन्न श्रव्य-दृश्य साधनों का प्रयोग

1. **श्यामपट** : संस्कृत शिक्षण में श्यामपट का महत्त्व अन्य सभी दृश्य साधनों से अधिक है क्योंकि इसके बिना संस्कृत शिक्षण सफल नहीं हो सकता। श्यामपट के अभाव में विद्यार्थियों के समक्ष विषय-वस्तु का स्पष्टीकरण करना कठिन होता है। श्यामपट का प्रयोग पाठ पढ़ाने के लिए प्रत्येक सोपान पर आवश्यक होता है। सस्कृत शिक्षण में श्यामपट का प्रयोग मुख्यत: निम्नांकित कार्यों के लिए किया जा सकता है :

1. कठिन शब्दों की व्याख्या
2. सन्धिच्छेद
3. समास विग्रह
4. अक्षर विन्यास की व्याख्या
5. व्याकरण नियमों की व्याख्या
6. पाठ्य विषय का स्पष्टीकरण
7. अन्य विविध कार्य

प्राय: देखने में आता है कि संस्कृत अध्यापक श्यामपट के प्रयोग के प्रति उपेक्षा बरतते हैं। इसलिए विद्यार्थियों को संस्कृत पाठ कठिन लगते हैं। बार-बार पढ़ाए जाने पर भी पाठ्य विषय अस्पष्ट बने रहते हैं। अत: पढ़ाते समय संस्कृत अध्यापक को श्यामपट का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए।

आजकल श्यामपट को चाक बोर्ड भी कहा जाने लगा है क्योंकि आजकल बोर्ड कई रगों के प्रयुक्त किए जाने लगे हैं, विशेषतया हरे। बोर्ड काले हों अथवा हरे, दीवार पर बने हुए हों अथवा तख्ते के हों, इनका प्रयोग ध्यान से किया जाना चाहिए। बोर्ड पर अक्षर स्पष्ट तथा सुपाठ्य हों। कक्षा के सभी विद्यार्थी बोर्ड को सुगमता से पढ़ सकें। आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों से बोर्ड का प्रयोग करवाया जा सकता है।

2. **चित्र** : संस्कृत शिक्षण में चित्रों का प्रयोग पाठ को आरम्भ करते समय तथा पाठ को प्रस्तुत करते समय किया जा सकता है। चित्र महापुरुषों, नेताओं, पशु-पक्षियों, वस्तुओं, प्राकृतिक दृश्यों तथा ऐतिहासिक भवनों के हो सकते हैं। प्रारम्भिक कक्षाओं में विद्यार्थियों के संस्कृत शब्द भण्डार को बढ़ाने के लिए चित्रों का प्रयोग किया जा सकता है।

यह आवश्यक नहीं कि चित्र बहुमूल्य अथवा कलाकार द्वारा बनाए हुए हों। अध्यापक स्वयं साधारण चित्रों का निर्माण कर सकता है। चित्र स्पष्ट तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषयानुकूल हों। चित्र शिक्षण की प्रक्रिया में सहायक हों। एक पाठ में आवश्यकता से अधिक चित्रों का प्रयोग पाठ को बोझिल बना देगा। विद्यार्थी ऊब जाएँगे। अतः चित्रों का प्रयोग सूझ-बूझ से किया जाना चाहिए।

3. **मानचित्र** : अध्यापक संस्कृत शिक्षण में ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा वैज्ञानिक प्रसंगों की व्याख्या के लिए मानचित्रों का प्रयोग कर सकता है। मानचित्रों का प्रयोग लाभदायक तभी होगा जब संस्कृत अध्यापक इनकी व्याख्या स्पष्टता से करेगा।

4. **चार्ट** : संस्कृत शिक्षण में मौखिक कार्य के लिए तथा पाठ्य-वस्तु एवं व्याकरण प्रसंगों की व्याख्या हेतु चार्टों का प्रयोग किया जाना चाहिए। कहानी आदि रचना कार्यों के लिए भी चार्टों का प्रयोग किया जा सकता है। संस्कृत शिक्षण के लिए बने-बनाये चार्ट बाजार में उपलब्ध न हों तो संस्कृत अध्यापक स्वयं चार्ट बनाए। चार्ट विषयानुसार हों तथा विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुरूप हों।

5. **मॉडल** : मॉडल अर्थात् प्रति-मूर्तियों का प्रयोग भी पाठ्य वस्तु की व्याख्या के लिए किया जा सकता है। मॉडलों का प्रयोग चित्रों की अपेक्षा अधिक प्रभावोत्पादक होता है क्योंकि ये यथार्थता के अधिक निकट होते हैं। भाखड़ा नंगल जैसी परियोजनाओं, उद्योग-धन्धों, भवनों, यन्त्रों, अस्त्र-शस्त्रों के मॉडल का प्रयोग किया जा सकता है। संस्कृत अध्यापक मॉडलों के निर्माण में यदि विद्यार्थियों का सहयोग ले तो विद्यार्थियों की और अधिक ज्ञान-वृद्धि होगी।

6. **प्रोजेक्टर** : विज्ञान के इस आविष्कार का प्रयोग शिक्षण के विभिन्न क्षेत्रों में विशेषकर विज्ञान शिक्षण के लिए किया जा रहा है। यदि शिक्षण संस्थाएँ तथा संस्कृत अध्यापक संस्कृत पाठ्य विषयों से सम्बद्ध स्लाइड तथा छोटी फिल्में बना लें तो संस्कृत शिक्षण के लिए प्रोजेक्टर का प्रयोग भी किया जा सकता है। विद्यार्थी चलचित्रों को देखने में रुचि रखते हैं। यदि प्रोजेक्टर का प्रयोग शिक्षण के लिए किया जाएगा तो विद्यार्थियों का ध्यान गन्दे चित्रों को देखने की ओर से हटेगा और वे ऐसे चलचित्र देखना पसन्द करेंगे जिनसे उन्हें शैक्षणिक लाभ हो।

7. **रेडियो** : शिक्षण के लिए रेडियो का प्रयोग पहले से ही किया जा रहा है। विदेशों में इस दिशा में बड़ी प्रगति हो चुकी है। हर्ष का विषय है कि भारत में भी रेडियो का प्रयोग शिक्षण के लिए किया जा रहा है। विद्यार्थियों के लिए संस्कृत शिक्षण सम्बन्धी पाठ रेडियो पर प्रसारित किए जाते हैं। रेडियो सम्बन्धी कार्यक्रम जब अधिकाधिक विद्यार्थियों के लिए सुलभ होंगे तभी रेडियो की सार्थकता पूर्ण समझी जाएगी। इसकी सहायता से संस्कृत शिक्षण को और अधिक रोचक बनाया जा सकेगा।

8. **ग्रामोफोन** : ग्रामोफोन का प्रयोग अंग्रेजी शिक्षण के लिए पर्याप्त रूप में किया जा रहा है। संस्कृत शिक्षण के लिए भी ग्रामोफोन का प्रयोग किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जा सकता है। आदर्श वाचन तथा संस्कृत ध्वनियों एवं शब्दों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराने के लिए ग्रामोफोन का प्रयोग किया जा सकता है। संस्कृत पद्यांशों तथा वन्दे मातरम् जैसे गीत विद्यार्थियों को ग्रामोफोन पर सुनवाए जाने चाहिएँ। विद्वानों तथा शिक्षाशास्त्रियों के संस्कृत व्याख्यान भी ग्रामोफोन पर सुनवाए जा सकते हैं।

9. **नाटक :** संस्कृत शिक्षण में नाटकों का भी महत्त्व है। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के अलग-अलग अंकों अथवा दृश्यों का अभिनय करवाया जा सकता है। नाटक के अभिनेता तथा दर्शक दोनों लाभान्वित होंगे। विद्यार्थियों की संस्कृत में मौखिक अभिव्यक्ति सुधरेगी तथा वे संस्कृत के व्यावहारिक प्रयोग में कुशल बनेंगे।

10. **टेलीविजन :** रेडियो की भाँति टेलीविज़न का भी संस्कृत शिक्षण में उपयोग किया जा सकता है। इससे सुनने के साथ-साथ देखने का कार्य भी हो सकेगा। परन्तु टेलीविज़न की भी पूर्ण सार्थकता तभी होगी जब इसका उपयोग अधिकाधिक विद्यार्थियों के लिए किया जाएगा।

संस्कृत शिक्षण में श्रव्य-दृश्य साधनों के प्रयोग से सम्बद्ध कुछ उपयोगी सुझाव

1. किसी वस्तु के प्रयोग से पूर्व उस वस्तु का महत्त्व समझना आवश्यक होता है। अतः श्रव्य-दृश्य साधनों के प्रयोग से पूर्व संस्कृत अध्यापक इनका महत्त्व समझें तभी वे इनका उद्देश्यपूर्ण प्रयोग कर सकेंगे।

2. श्रव्य-दृश्य साधनों को साधन ही समझा जाए साध्य नहीं। तभी इनका संस्कृत शिक्षण के लिए सदुपयोग किया जा सकता है।

3. श्रव्य-दृश्य साधनों के प्रयोग के प्रति संस्कृत अध्यापक उत्साह दिखाएँ। तभी वे इनको विद्यालय से, बाज़ार से अथवा निर्माण द्वारा उपलब्ध कर सकेंगे। केवल विचार मात्र इस दिशा में सहायक सिद्ध न हो सकेगा।

4. चित्र/मानचित्र ऐसे हों जिन्हें सारी कक्षा सुविधा से देख सके।

5. यदि चित्र, मानचित्र तथा मॉडल छोटे हों तो ये वस्तुएँ विद्यार्थियों को निकट बुलाकर दिखायी जानी चाहिएँ।

6. अलग चित्र न मिलें तो पाठ्य पुस्तकगत चित्रों का ही दृश्य सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए।

7. चित्रों अथवा अन्य दृश्य सामग्री का दिखाना मात्र उपयोगी नहीं। इसकी व्याख्या एवं स्पष्टीकरण करना आवश्यक है। यह कार्य विद्यार्थियों की सहायता से किया जाना चाहिए जिससे कि विद्यार्थी पाठ के प्रति अधिक जागरूक हों।

8. संस्कृत शिक्षण के लिए विषयानुकूल चित्र विविध पत्र-पत्रिकाओं से लिए जा सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

9. रेडियो पर संस्कृत विषयक सामग्री को सुनवाने से पूर्व तथा सुनवाने के पश्चात् संस्कृत अध्यापक द्वारा विषय सम्बन्धी बातचीत आवश्यक होगी। रेडियो पर संस्कृत पाठ्य-वस्तु की समाप्ति पर विषय ग्रहण की जाँच के लिए तथा विषय के स्पष्टीकरण के लिए संस्कृत अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों से प्रश्नोत्तर करना आवश्यक होगा।

10. श्रव्य-दृश्य साधनों की उपयोगिता उनके समुचित प्रयोग पर निर्भर करेगी, साधनों के बहुमूल्य पर नहीं।

11. यदि बहुमूल्य श्रव्य-दृश्य साधन उपलब्ध न हों तो सस्ते और उपलब्ध साधनों का ही प्रयोग कर लिया जाना चाहिए। बहुमूल्य साधनों की प्रतीक्षा करना शिक्षण हितों के लिए घातक होगा।

12. श्यामपट का प्रयोग सबसे सस्ता और सबसे सुलभ साधन है। साथ ही यह अत्यावश्यक तथा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भी है। अतः इसका प्रयोग संस्कृत शिक्षण में अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत शिक्षण में श्रव्य-दृश्य साधनों की क्या उपयोगिता है।
2. संस्कृत शिक्षण के लिए किन-किन श्रव्य-दृश्य साधनों का उपयोग किया जा सकता है ?
3. संस्कृत शिक्षण में श्यामपट का प्रयोग आप किस प्रकार करेंगे।
4. संस्कृत शिक्षण में चित्रों के प्रयोग का महत्त्व बताएँ।
5. संस्कृत शिक्षण में मानचित्रों का प्रयोग आप किस दृष्टिकोण से करेंगे।
6. संस्कृत शिक्षण में चार्टों के प्रयोग की सार्थकता स्पष्ट करें।
7. संस्कृत शिक्षण में आप प्रोजेक्टर का प्रयोग किस उद्देश्य से करेंगे ?
8. सस्कृत शिक्षण में रेडियो तथा टेलीविज़न का महत्त्व बताएँ।
9. ग्रामोफोन का प्रयोग संस्कृत शिक्षण में किस प्रकार सहायक सिद्ध होगा ?
10. संस्कृत शिक्षण में नाटकों के अभिनय से क्या प्रयोजन सिद्ध होगा ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 18

संस्कृत शिक्षण में सहायक साधन

किसी भी भाषा का शिक्षण केवल पाठ्य पुस्तक के माध्यम से पूर्ण नहीं हो जाता है। भाषा के समुचित शिक्षण के लिए नाना प्रकार के साधन जुटाने पड़ते हैं। इसी दृष्टि से सफल संस्कृत शिक्षण के लिए पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त कई अन्य साधनों से सहायता लेनी पड़ेगी। इस अध्याय में उन साधनों के सम्बन्ध में चर्चा की जाएगी जो संस्कृत शिक्षण में सहायक हो सकते हैं।

1. पुस्तकालय

महत्त्व एवं उपयोगिता

विद्यार्थी केवल कुछ पाठ्य पुस्तकों से पाठ्य विषयों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। अपने ज्ञान को व्यापक और गहन बनाने के लिए उन्हें अन्य पुस्तकों का भी अध्ययन करना होगा। इसके लिए पुस्तकालय की आवश्यकता होगी क्योंकि व्यक्तिगत स्तर पर बड़ी संख्या में पुस्तकों का खरीदना कठिन है। पुस्तकों का महत्त्व केवल परीक्षा की दृष्टि से और केवल विद्यार्थी-जीवन में ही नहीं होता, ज्ञान-वर्धन तथा स्वाध्याय के लिए भी पुस्तकों की आवश्यकता आजीवन होती है। पुस्तकों को सबसे अच्छा मित्र कहा जाता है। विद्यार्थी जीवन में निश्चित रूप से पुस्तकों का अधिक महत्त्व है क्योंकि इसी अवस्था में स्वाध्याय के लिए रुचि विकसित की जा सकती है। इन सभी दृष्टिकोणों से यह आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यालय और महाविद्यालय में पुस्तकालय हो।

पुस्तकालय ही विद्यालय का वास्तविक ज्ञान स्रोत है। पुस्तकालय को विद्यालय की आत्मा कहना और अधिक युक्तिसंगत होगा। विद्यार्थी ही नहीं अध्यापक अपने ज्ञान का संवर्धन पुस्तकालय के माध्यम से करते हैं। पुस्तकालय के उपयोग से अध्यापकों की कार्य-कुशलता बढ़ती है। अध्यापकों के ज्ञान संवर्धन से विद्यार्थियों की ज्ञान परिधि बढ़ती है। इस प्रकार विद्यार्थियों तथा अध्यापकों—दोनों वर्गों के लिए पुस्तकालय का महत्त्व है। परन्तु महत्त्व पुस्तकालय के प्रयोग पर निर्भर करेगा, इसकी केवल विद्यमानता पर नहीं।

पुस्तकालय के लिए संस्कृत पुस्तकों का चयन

विद्यालय के पुस्तकालय में विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों से सम्बद्ध पुस्तकें होंगी। सस्कृत महत्त्वपूर्ण विषय है। इसलिए भी पुस्तकालय में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत पुस्तकों की व्यवस्था होनी चाहिए। पुस्तकालय में संस्कृत की निम्न-लिखित पुस्तकों का होना आवश्यक है :

1. निर्धारित पाठ्य पुस्तकें
2. सम्पूरक पुस्तकें
3. द्रुत-पाठ्य-पुस्तकें
4. 'पंच-तंत्र', 'हितोपदेश' जैसी कहानी पुस्तकें
5. कालिदास, माघ जैसे संस्कृत साहित्यकारों की रचनाएँ
6. रामायण, महाभारत तथा भगवद्गीता जैसी संस्कृत की उत्कृष्ट कृतियाँ
7. शब्दकोश
8. व्याकरण ग्रन्थ
9. संस्कृत शिक्षण विधि पर पुस्तकें
10. नैतिक विषयों से सम्बद्ध पुस्तकें
11. अन्य मनोरञ्जक पुस्तकें
12. विविध

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि पुस्तकालय में संस्कृत की ऐसी वे सभी पुस्तकें होनी चाहिएँ जिनका विद्यार्थी तथा अध्यापक दोनों उपयोग कर सकें।

विद्यालयों के लिए संस्कृत पुस्तकों के चयन के सम्बन्ध में इन बातों का ध्यान रखना चाहिए :

1. पुस्तकें रुचिकर हों।
2. जो पुस्तकें विद्यार्थियों के लिए चुनी जाएँ वे उनके योग्यता-स्तर के अनुरूप हों।
3. विषय प्रतिपादन सरल हो।
4. पुस्तकें विचारशीलता को प्रोत्साहित करने वाली हों।
5. पुस्तकें ऐसी हों जो ज्ञान वृद्धि में सहायक होने के साथ-साथ विद्यार्थियों के नैतिक विकास में भी सहायक हों।
6. पुस्तकों की साज-सज्जा आकर्षक हो।

पुस्तकालय का प्रबन्ध

विद्यालय के पुस्तकालय का प्रबन्ध ऐसे व्यक्ति के हाथ में होना चाहिए जिसने पुस्तकालय विज्ञान का समुचित प्रशिक्षण प्राप्त कर रखा हो। यदि ऐसे व्यक्ति की सेवाएँ उपलब्ध न हो सकें तो विद्यालय के ही किसी ऐसे अध्यापक को पुस्तकालय का प्रबन्ध सौंपा जाए जो इस कार्य में रुचि रखता हो। यदि उसकी इस कार्य में रुचि न होगी तो पुस्तकालय स्थापन के उद्देश्य ही समाप्त हो जाएँगे। वह विद्यार्थियों को पुस्तकालय के समुचित प्रयोग के लिए उत्साहित नहीं कर पाएगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुस्तकालय के कार्यभारी अध्यापक में यह क्षमता हो कि वह विद्यार्थियों को पुस्तकों के चयन में संदर्शन दे सके। वह विद्यार्थियों को नयी पुस्तकों के पठन के लिए प्रेरित कर सके। वह पुस्तकों को देने या वापिस लेने में हिचकिचाहट अथवा विलम्ब न करे। पुस्तकों का लेनदेन नियमित होना चाहिए।

कक्षा पुस्तकालय

विद्यालय के बड़े पुस्तकालय के साथ यदि प्रत्येक कक्षा के लिए अलग-अलग पुस्तकालय की स्थापना की जाए तो और अच्छा होगा। यह पुस्तकालय श्रेणी कक्षा में स्थित हो और इसमें उस कक्षा को पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों की पुस्तकें हों। ये पुस्तकें कक्षा के स्तर के अनुरूप हों। कक्षा पुस्तकालय का प्रबन्ध श्रेणी अध्यापक अथवा मानीटर (श्रेणी के मुखिया) के पास हो।

कक्षा पुस्तकालय में कक्षा की संस्कृत पाठ्य-पुस्तक की कुछ प्रतियाँ, व्याकरण पुस्तकें, स्तरानुकूल सहायक पुस्तकें तथा द्रुत पाठ्य पुस्तकें होनी चाहिएँ। कक्षा पुस्तकालय के अभाव में संस्कृत अध्यापक अपने पास संस्कृत की ऐसी पुस्तकें रख सकता है जो विद्यार्थियों को आवश्कतानुसार संस्कृत के कालांश में अथवा पुस्तकालय सम्बन्धी कलांश में दी जा सकती हैं।

विद्यार्थियों द्वारा पुस्तकालय की संस्कृत पुस्तकों का प्रयोग संस्कृत अध्यापक की इस दिशा में रुचि तथा उस द्वारा विद्यार्थियों को पुस्तकें पढ़ने के लिए उत्साहित करने पर निर्भर करेगा।

2. वाचनालय

वाचनालय से भाव है वह स्थान जहाँ बैठकर विद्यार्थी पुस्तकालय की पुस्तकों अथवा पत्र-पत्रिकाओं का वाचन कर सकें अर्थात् उन्हें पढ़ सकें। वाचनालय को चाहे पुस्तकालय के आधे भाग में स्थापित किया जाये अथवा स्वतन्त्र स्थान पर, परन्तु वाचनालय स्थापित अवश्य किया जाना चाहिए। वाचनालय में दैनिक पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध हों प्रारम्भिक तथा माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थी मातृ-भाषा की पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ें। उच्च कक्षाओं के विद्यार्थी संस्कृत की पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ सकते हैं। पत्र-पत्रिकाओं के पठन से संस्कृत विद्यार्थिओं का सामान्य ज्ञान विकसित होगा। इससे रचना कार्य में सहायता मिलेगी।

वाचनालय का वातावरण शान्त हो और इसके लिए समय निश्चित हो। विद्यार्थी वाचनालय नियमों का पालन करें।

3. संग्रहालय

संस्कृत शिक्षण में संग्रहालय का भी महत्त्व है। संस्कृत शिक्षण में कोकिल, चातक, सारिका, हंस तथा क्रौंच जैसे पक्षियों; वीणा, मृदंग, भेरी जैसे वाद्य यंत्रों; नाना प्रकार के फलों एवं पुष्पों और विभिन्न अस्त्रों-शस्त्रों का संकेत आता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। विद्यालय में इन वस्तुओं के उपलब्ध न होने से संस्कृत अध्यापक इन वस्तुओं की केवल सांकेतिक चर्चा करता है। विद्यार्थियों के लिए ये वस्तुएँ अमूर्त्त बनी रहती हैं ऐसी सभी। वस्तुएँ विद्यालय के संग्रहालय में होनी चाहिएँ। संग्रहालय में कवियों और साहित्यकारों के चित्र तथा प्रतिमूर्तियाँ होनी चाहिएँ। संकृत शिक्षण से सम्बन्ध विभिन्न विषयों पर चार्ट भी सभी प्रकार की ऐसी सामग्री केवल संग्रहालय में ही सुरक्षित रह सकती है। संग्रहालय का प्रबन्ध इस विषय में रुचि रखने वाले अध्यापक के पास होना चाहिए। विद्यालय में संग्रहालय की स्थापना यदि सम्भव न हो तो भी संस्कृत अध्यापक को संस्कृत शिक्षण में काम आने वाली सामग्री—चार्ट, चित्र, प्रतिमूर्तियाँ तथा अन्य वस्तुएँ अपने पास रखनी चाहिएँ तथा उनका यथावश्यक उपयोग करना चाहिए।

4. विद्यालय-पत्रिका

प्रत्येक विद्यालय की अपनी एक पत्रिका होनी चाहिए। यह मुद्रित करवाई जाए अथवा हस्तलिखित हो; वार्षिक हो, षाण्मासिक हो, त्रैमासिक हो अथवा मासिक—यह सब कुछ विद्यालय की अपनी परिस्थितियों पर निर्भर करेगा, विशेषकर आर्थिक परिस्थितियों पर। विद्यालय पत्रिका का संचालन अधिकतर मुख्याध्यापक तथा अध्यापकों के उत्साह पर निर्भर करेगा। उन्हीं के उत्साह से विद्यार्थी विद्यालय-पत्रिका के लिए लेख लिखने के लिए उत्साहित होंगे।

प्रायः देखने में आता है कि विद्यालय की पत्रिका में संस्कृत के लिए पृष्ठ नहीं होते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। जब संस्कृत को एक अलग भाषा के रूप में पढ़ाया जा रहा है तो इसके लिए भी विद्यालय की पत्रिका में स्थान होना चाहिए। संस्कृत में लिखने के लिए विद्यार्थियों का पथप्रदर्शन संस्कृत अध्यापक को करना होगा। आरम्भ में विद्यार्थी चाहे सूक्तियों का संकलन ही करें अथवा किसी पठित विषय-वस्तु का सारांश ही लिखें परन्तु संस्कृत में लिखें अवश्य। धीरे-धीरे विद्यार्थी छोटे-छोटे विषयों पर अपने विचार संस्कृत में लिखने लगेंगे। ऐसा करने से विद्यार्थी संस्कृत में शुद्ध लिखना सीखेंगे और आगे चलकर संस्कृत साहित्य में लेखन द्वारा वृद्धि कर सकेंगे।

परन्तु यह प्रयास तभी सफल होगा जब संस्कृत अध्यापक इस दिशा में अतिरिक्त श्रम करने से संकोच न करेंगे।

5. दैनिकी

विद्यार्थियों को प्रायः मातृभाषा तथा अंग्रेजी में दैनिकी लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। संस्कृत विद्यार्थियों को भी दैनिकी लिखने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए। लाभ यह होगा कि विद्यार्थी संस्कृत में शुद्ध लिखना सीखेंगे। सतत अभ्यास से विद्यार्थी लिखित अभिव्यक्ति में स्वावलम्बी बन सकेंगे। इससे रचना कार्य में भी सहायता मिलेगी। संस्कृत विद्यार्थियों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपनी दैनिकी में निम्नांकित बातें लिखने के लिए कहा जा सकता है :

1. संस्कृत के नवीन शब्द तथा उनके अर्थ
2. पढ़ी हुई पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं के नाम
3. पढ़ी हुई सहायक पुस्तकों तथा द्रुत पाठ्य पुस्तकों पर टिप्पणियाँ
4. प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ, सुभाषित, श्लोक आदि
5. व्यक्तिगत दैनिक अनुभव

संस्कृत शिक्षण में दैनिकी-लेखन तभी सहायक होगा जब संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों का पथ-प्रदर्शन करेंगे और समय-समय पर दैनिकी का निरीक्षण करेंगे तथा परामर्श देंगे। निरीक्षण तथा परामर्श सम्बन्धी कार्य वैयक्तिक रूप से किया जाना चाहिए क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी दैनिकी को अपने ढंग से लिखेगा। संस्कृत अध्यापक इस कार्य को भार न समझे प्रत्युत इसे संस्कृत शिक्षण का ही एक अंग माने।

6. साहित्यिक तथा शैक्षणिक सभाएँ

विद्यालयों में प्रायः साहित्यिक तथा शैक्षणिक सभाएँ नियमित रूप से कार्य करती हैं। इनका संचालन प्रायः हिन्दी अथवा अन्य मातृभाषाओं में होता है। इन सभाओं का विद्यालयों में सस्कृत शिक्षण के लिए बहुत ही कम उपयोग किया जाता है। वास्तव में इनका उपयोग संस्कृत शिक्षण के लिए भी उसी प्रकार किया जा सकता है जैसा कि दूसरी भाषाओं के लिए।

संस्कृत शिक्षण प्रायः कक्षा छः से आरम्भ होता है। अतः माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं के लिए जो साहित्यिक तथा शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ उनमें विद्यार्थियों को सरल सुभाषित श्लोक, लघु कथाओं का सारांश तथा संक्षिप्त संवाद प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। आरम्भ में विद्यार्थी संकोच करेंगे परन्तु धीरे-धीरे यह संकोच हट जाएगा। संस्कृत अध्यापक की ओर से इस दिशा में विद्यार्थियों का प्रोत्साहन तथा पथप्रदर्शन आवश्यक होगा।

विद्यालय में संस्कृत पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों की यदि एक अलग परिषद् बनाई जाए तो यह प्रयास संस्कृत शिक्षण में और अधिक सहायक होगा। ऐसी परिषद् में विद्यार्थी आत्माभिव्यक्ति अधिक स्वतन्त्रता से कर सकेंगे और फल-स्वरूप ग्रहण भी अधिक करेंगे।

7. शब्दकोश

किसी भी भाषा को सीखने में उस भाषा का शब्दकोश महत्त्वपूर्ण साधन है। भाषा शिक्षणार्थियों के लिए इसका प्रयोग अत्यावश्यक है। किसी का भी भाषा-ज्ञान इतना पूर्ण नहीं होता कि शब्दकोश की कभी आवश्यकता ही न पड़े। अध्यापकों को भी अपने लिए शब्दकोश का प्रयोग करना पड़ता है क्यों-कि यही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा शब्दों के उच्चारण तथा अर्थ से सम्बद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शंकाओं का निवारण हो सकता है।

संस्कृत अध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को भी संस्कृत के संक्षिप्त शब्दकोश का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें। विद्यार्थियों को शब्दकोश के प्रयोग की विधि बताई जाए। उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों को अमरकोश जैसे शब्दकोश देखने की विधि बताई जानी चाहिए। संस्कृत में शब्दों के लिंग तथा धातुओं के गुण आदि के विषय में प्रायः शंका हो जाया करती है। अतः विद्यार्थियों को शब्दकोश के प्रयोग का अभ्यास अवश्यमेव कराया जाए।

शब्दकोश के प्रयोग का अभ्यास हो जाने पर संस्कृत विद्यार्थी स्वयमेव शब्दों के शुद्ध रूप तथा उच्चारण देख सकेंगे। विद्यार्थी लिखित कार्य में अशुद्धियाँ कम करेंगे। अध्यापक का संशोधन-कार्य घटेगा।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत शिक्षण में सहायक साधनों की क्या आवश्यकता है ?
2. संस्कृत शिक्षण में कौन-से साधनों से सहायता ली जा सकती है ?
3. संस्कृत शिक्षण में पुस्तकालय से किस प्रकार सहायता मिलेगी ?
4. संस्कृत शिक्षण में पुस्तकालय का आप कैसे उपयोग करेंगे ?
5. वाचनालय से क्या अभिप्राय है ? संस्कृत शिक्षण में इसकी क्या उपयोगिता है।
6. संस्कृत शिक्षण में संग्रहालय का क्या महत्त्व है ?
7. आप विद्यालय-पत्रिका का संस्कृत शिक्षण में कैसे उपयोग करेंगे ?
8. दैनिकी से क्या भाव है ? इसके प्रयोग से संस्कृत विद्यार्थियों को क्या लाभ होगा ?
9. संस्कृत शिक्षण में साहित्यिक तथा शैक्षणिक सभाओं का क्या महत्त्व है ?
10. भाषा शिक्षण में शब्दकोश का क्या महत्त्व है ? आप संस्कृत विद्यार्थियों को शब्दकोश का प्रयोग कैसे सिखाएँगे ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 19

संस्कृत अध्यापक

संस्कृत अध्यापक की परम्परागत प्रतिष्ठा

संस्कृत भारत की आदिकालीन भाषा है। भारतवर्ष में संस्कृत अध्यापक का पद आरम्भ से ही प्रतिष्ठित माना जाता रहा है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

इस देश में अध्यापक की ब्रह्मा, विष्णु, महेश के समान पूजा होती रही है। अध्यापक की यह प्रतिष्ठा उसके त्यागमय तथा आदर्शमय जीवन के कारण थी। अध्यापक का जीवन सन्तोषमय होता था। उसका जीवन लक्ष्य अपने शिष्यों के जीवन को उच्च बनाना होता था। वह परोपकार के लिए जीता था। वह निःशुल्क शिक्षण करता था। वह शिष्यों द्वारा श्रद्धा एवं भक्तिभाव प्रदर्शन से ही सन्तुष्ट रहता था।

संस्कृत अध्यापक को आज भी अपने प्रति इस परम्परागत प्रतिष्ठा को बनाए रखना है। उसे अपने जीवन को वैसा ही उच्च एवं आदर्श बनाना है जैसा पूर्वकालीन संस्कृत अध्यापकों का था। उसे भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने में अपना सहयोग देना है। उसे भारत का नवनिर्माण करना है। यह तभी सम्भव होगा जब वह अपने पद की परम्परागत प्रतिष्ठा के अनुरूप अपने कर्त्तव्य को पूरा करेगा।

संस्कृत अध्यापक के कर्त्तव्य

संस्कृत अध्यापक के कर्त्तव्य अनेक हैं। उसे वह सभी कुछ करना चाहिए जिससे उसके शिष्यों का अधिकाधिक हित हो। संस्कृत अयाध्पक का मुख्यकार्य है सस्कृत शिक्षण सुचारु रूप से करना। उसे यह कार्य पूरी निष्ठा से करना चाहिए। इस दृष्टि से संस्कृत अध्यापक के निम्नांकित कर्त्तव्य हैं :

1. वर्ष में किए जाने वाले संस्कृत शिक्षण सम्बन्धी कार्य को इकाइयों में विभाजित करना। ऐसा करने से उसका दैनिक कार्य स्पष्ट एवं सुनिश्चित हो जाएगा।

2. दैनिक संस्कृत पाठों को उपयुक्त शिक्षण विधि के अनुसार सोपानों में क्रमबद्ध करना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

3. संस्कृत पाठ्य सामग्री का इस ढंग से प्रस्तुतीकरण करना कि पाठ विद्यार्थियों के लिए सुबोध बन जाए।

4. विद्यार्थियों के ज्ञान को पुष्ट करने के लिए उन्हें कक्षा-कार्य तथा गृह-कार्य के रूप में अभ्यास कराना।

5. संस्कृत पाठ के लिए उपयुक्त श्रव्य-दृश्य सामग्री का आयोजन करना।

6. समय-समय पर संस्कृत विद्यार्थियों की ज्ञानोपलब्धि का मूल्यांकन करना।

7. संस्कृत विद्यार्थियों की प्रगति का अभिलेख रखना।

8. संस्कृत विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय सम्बन्धी सुविधाओं का आयोजन करना।

9. संस्कृत विद्यार्थियों का साहित्यिक आयोजनों के लिए पथप्रदर्शन करना।

10. संस्कृत विद्यार्थियों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को दूर कर उनके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होना।

सामान्य अध्यापक के गुण

1. शारीरिक स्वास्थ्य
2. मानसिक स्वास्थ्य एवं भावात्मक सन्तुलन
3. शिक्षा
4. शैक्षणिक प्रशिक्षण
5. चिन्तन-शक्ति
6. कर्त्तव्यशीलता
7. प्रवाहमयी अभिव्यक्ति
8. सहानुभूति
9. सच्चरित्रता।

संस्कृत अध्यापक के गुण

संस्कृत अध्यापक में सामान्य अध्यापक के उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त निम्नांकित विशेष गुण भी होने चाहिएँ तभी वह एक आदर्श संस्कृत अध्यापक बन सकेगा :

1. विद्वता तथा प्रशिक्षण

संस्कृत अध्यापक को संस्कृत का पूर्ण ज्ञान हो। अपरिपक्व ज्ञान से संस्कृत शिक्षण विकृत होगा। संस्कृत अध्यापक को संस्कृत शब्दावली, व्याकरण एवं रचना का पूर्ण ज्ञान हो। उसका संस्कृत साहित्य का अध्ययन गहन एवं प्रगाढ़ हो। उसकी मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति निर्दोष हो। विषय के पूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्ञान के साथ-साथ वह संस्कृत शिक्षण की विधियों में पूर्णतया प्रशिक्षित हो। संस्कृत शिक्षण के लिए संस्कृत अध्यापक को अपनी विद्वत्ता का स्तर छोड़कर विद्यार्थियों के स्तर पर आना होगा। ऐसा वही अध्यापक कर सकेगा जो प्रशिक्षित होगा। अतः संस्कृत अध्यापक को प्रशिक्षण विद्यालय अथवा महाविद्यालय से संस्कृत शिक्षण का विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए।

2. शुद्ध उच्चारण

संस्कृत अध्यापक को संस्कृत ध्वनियों का पूर्ण ज्ञान हो और वह उनका उच्चारण शुद्ध कर सकता हो। उसका संस्कृत शब्दों का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। तभी वह विद्यार्थियों के उच्चारण को शुद्ध कर सकेगा। वह सकल को शकल और शठ को सठ न बोले। जिन संस्कृत अध्यापकों का उच्चारण अशुद्ध हो वे शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करें। जिन संस्कृत अध्यापकों का उच्चारण प्रादेशिक प्रभाव के कारण विकृत हो वे अपनी कक्षा में सुविधानुसार किसी दूसरे संस्कृत अध्यापक से आदर्श उच्चारण प्रस्तुत कराने में संकोच का अनुभव न करें।

3. अनुभव

संस्कृत अध्यापक को संस्कृत शिक्षण का जितना अधिक अनुभव होगा वह उतनी ही अधिक कुशलता से विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ा सकेगा। केवल पाठ्य पुस्तक को पढ़ा देने से ही कार्य न चलेगा। विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण, अनुवाद एवं रचना कार्य का अभ्यास कराना होगा। इन कार्यों को एक अनुभवी सस्कृत अध्यापक अधिक कुशलता से कर सकेगा।

4. संस्कृत शिक्षण में रुचि

संस्कृत अध्यापक संस्कृत शिक्षण में रुचि रखता हो। वह संस्कृत शिक्षण कार्य को रुचि और उत्साह से करे। इसे भार न समझे। तभी वह विद्यार्थियों के मन में संस्कृत के प्रति रुचि विकसित कर सकेगा। रुचि के बढ़ने पर ही संस्कृत भाषा का पठन-पाठन बढ़ेगा, नहीं तो यह कार्य और अधिक सीमित होता जाएगा। संस्कृत अध्यापक संस्कृत शिक्षण को अपने जीवन का मुख्य ध्येय समझे।

5. साहित्यिक एवं शैक्षणिक क्रियाओं में रुचि

विद्यार्थियों को संस्कृत का पुस्तकीय ज्ञान देना ही प्रर्याप्त नहीं होगा। उन्हें मौखिक अभिव्यक्ति में कुशल बनाने के लिए संवाद, वादविवाद तथा भाषण का भी अभ्यास कराना होगा। यह तभी सम्भव होगा जब संस्कृत अध्यापक स्वयं इन साहित्यिक एवं शैक्षणिक क्रियाओं में रुचि रखता होगा। संस्कृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्यापक विद्यार्थियों का साहित्यिक एवं शैक्षणिक प्रतियोगिताओं के लिए पथप्रदर्शन करे।

6. स्वाध्यायशील

कुछ लोग संस्कृत को पुरानी भाषा कहकर संस्कृत अध्यापकों के ज्ञान को भी पुराना बता दिया करते हैं। लोगों की ऐसी धारणा मिथ्या है फिर भी संस्कृत अध्यापक अपने ज्ञान को समय की गति के साथ समीचीन बनाता रहे। वह स्वाध्यायशील हो। वह संस्कृत भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं एवं विषयों से अधिकाधिक परिचित होने का यत्न करे। उसमें संस्कृत के अधिकाधिक ज्ञान के लिए पिपासा बनी रहे।

7. अन्य विषयों का ज्ञान

संस्कृत अध्यापक को संस्कृत के अतिरिक्त हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का तथा सामाजिक अध्ययन जैसे विषयों का भी सामान्य ज्ञान होना चाहिए। ऐसा होने पर संस्कृत अध्यापक संस्कृत शिक्षण के कार्य को और अधिक सुगम एवं रोचक बना सकेगा। रचना सम्बन्धी विषयों को अधिक व्यापक बना सकेगा। विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान को और अधिक बढ़ा सकेगा। अन्य भाषाओं का ज्ञान होने पर वह संस्कृत भाषा की ध्वनियों तथा शब्दों के उच्चारण की अन्य भाषाओं के उच्चारण के साथ तुलना कर सकेगा और विद्यार्थियों के ज्ञान को व्यापक बना सकेगा। वह विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग भी सुगमता से कर सकेगा।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. एक सामान्य अध्यापक के लिए कौन-से गुण आवश्यक हैं ?
2. एक आदर्श संस्कृत अध्यापक में कौन-से विशेष गुण होने चाहिएँ ?
3. संस्कृत अध्यापक के प्रमुख कर्त्तव्यों का उल्लेख करें।
4. आपके विचारानुसार संस्कृत अध्यापक में सबसे बड़ा गुण कौन-सा होना चाहिए ?
5. संस्कृत अध्यापक का संस्कृत शिक्षण में रुचि रखना क्यों अत्यावश्यक है ?
6. संस्कृत अध्यापक को स्वाध्ययाशील होने से क्या लाभ होंगे ?
7. संस्कृत अध्यापक अपनी परम्परागत प्रतिष्ठा को कैसे सुरक्षित रख सकता है ?
8. संस्कृत अध्यापक विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में किस प्रकार सहायक हो सकता है ?
9. अध्यापक का कर्त्तव्यशील होना क्यों आवश्यक है ?
10. संस्कृत अध्यापक का स्वाध्यायशील होना क्यों आवश्यक हैं ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 20

संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के उपाय

संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में यदाकदा सुनने को मिलता है कि संस्कृत शुष्क भाषा है। ऐसी मिथ्या धारणा का प्रतिवाद करना परमावश्यक है। ऐसे अनर्गल कथन वे किया करते हैं जो संस्कृत भाषा की सरसता से अपरिचित होते हैं। सुभाषितों एवं श्लोकों का जो माधुर्य संस्कृत भाषा में विद्यमान है वह किसी भी अन्य भाषा में नहीं है।

विद्यार्थी संस्कृत पढ़ना प्राय: छठी कक्षा से आरम्भ करते हैं। इससे पूर्व वे मातृभाषा पढ़ चुके होते हैं। इन दो भाषाओं के साथ-साथ उन्हें तीसरी भाषा अंग्रेज़ी भी पढ़नी पड़ती है। तीन-तीन भाषाओं का एक साथ पढ़ना और साथ ही गणित, सामाजिक अध्ययन- जैसे अनिवार्य विषयों का पढ़ना विद्यार्थियों के लिए कम भार नहीं है। इस भार को विद्यार्थी सुगमता से वहन कर सकें, इसके लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों के लिए सभी विषयों का पठन रोचक बनाया जाए। यहाँ हमारा सम्बन्ध केवल संस्कृत शिक्षण से है। संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए निम्नांकित उपाय किए जाने चाहिएँ :

1. श्रव्य-दृश्य साधनों का प्रयोग

ग्रामोफोन, रेडियो, टेलीविज़न, टेपरिकार्डर, चित्र, मानचित्र, मूर्ति, प्रतिमूर्ति, प्रोजेक्टर आदि साधनों का न केवल शैक्षणिक महत्त्व है अपितु इनका मनोरञ्जन की दृष्टि से भी महत्त्व है। ये साधन पाठ्य विषय को रोचक बनाने में सहायक होते हैं। इन सभी साधनों का संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए उपयोग किया जा सकता है। परन्तु संस्कृत अध्यापक को यह भलीभाँति समझ लेना होगा कि इनका उपयोग शैक्षणिक दृष्टि से करना है, तमाशे के लिए नहीं। साथ ही इनका प्रयोग इस प्रकार किया जाए कि इनसे संस्कृत शिक्षण रोचक बने। इनका प्रयोग संस्कृत शिक्षण में सहायक बने, बाधक नहीं। संस्कृत शिक्षण में श्रव्य-दृश्य साधनों का प्रयोग किस प्रकार किया जाए ? इस विषय पर अलग से अध्याय 17 में लिखा जा चुका है अत: यहाँ इसका पुन: विवरण देने की आवश्यकता नहीं है।

पाठ के प्रस्तुतीकरण के समय चार्टों, चित्रों, मानचित्रों, मॉडलों के प्रयोग से पाठ में सरसता आएगी। टेपरिकार्डर की सहायता से ध्वनियों को सरस ढंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से प्रस्तुत किया जा सकता है। रेडियो द्वारा सरस वार्ताएँ सुनवाई जा सकती हैं। टेलीविज़न तथा प्रोजेक्टर के माध्यम से नाटकों तथा अन्य पाठ्य विषयों की झांकियाँ प्रस्तुत की जा सकती हैं।

2. कविता पाठ

संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए कविता पाठ कराया जा सकता है। कविता पाठ विद्यार्थियों द्वारा पढ़ी हुई कविताओं का करवाया जाए। कविता पाठ लक्ष्य से किया जाए। इससे कविता पाठ करने वालों तथा सुनने वालों को संगीत की आनन्दानुभूति होगी। कविता पाठ कक्षा में भी करवाया जा सकता है और साहित्यिक सभाओं में भी। कविता पाठ के समय विद्यार्थी संस्कृत शब्दों का शुद्ध उच्चारण करें।

3. अन्त्याक्षरी

संस्कृत विद्यार्थियों को संस्कृत श्लोकों, पद्यांशों एवं सुभाषितों का कण्ठस्थ कराना भी आवश्यक है। अन्त्याक्षरी के माध्यम से इन कार्यों को प्रोत्साहन मिलेगा। अन्त्याक्षरी में विद्यार्थियों को दो दलों में विभाजित किया जाता है। एक दल का कोई सदस्य एक श्लोक सुनाता है। दूसरे दल का कोई सदस्य उत्तर में ऐसा श्लोक सुनाता है जिसका प्रथम अक्षर पहले बोले गए श्लोक का अन्तिम अक्षर होता है। इसी प्रकार यह क्रम चलता रहता है। जब एक दल निश्चित अक्षर से आरम्भ होने वाला कोई श्लोक अथवा पद्यांश बोलने में असमर्थ रहता है तो दूसरा दल उसी अक्षर से आरम्भ होने वाला श्लोक अथवा सुभाषित बोल कर विजयी हो जाता है। अन्त्याक्षरी प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों की रुचि को संस्कृत शिक्षण की ओर आकर्षित करने में सफल होंगी।

4. कवि सम्मेलन

प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में इतनी क्षमता नहीं होती कि वे संस्कृत में मौखिक कविताएँ लिख सकें। हाँ उच्च स्तर के विद्यार्थियों से ऐसी आशा की जा सकती है। ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थियों को अन्य कवियों की कविताएँ सुनने का अवसर मिलना चाहिए। इस दृष्टि से कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जाए। जो कवि-सम्मेलन विद्यार्थियों के लिए आयोजित किए जाएँ उनमें कवि ऐसी कविताएँ सुनाएँ जो विद्यार्थियों के लिए बोधगम्य हों। कवि-सम्मेलनों से विद्यार्थियों में संस्कृत शिक्षण के प्रति रुचि विकसित होगी।

5. भाषण तथा वादविवाद प्रतियोगिताएँ

संस्कृत शिक्षण को श्रेणी कक्ष तक सीमित रखने से उद्देश्य-पूर्ति नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होगी। मौखिक अभिव्यक्ति में कुशलता उत्पन्न करना संस्कृत शिक्षण का एक उद्देश्य है। अतः संस्कृत विद्यार्थियों के लिए भाषण तथा वादविवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन करना चाहिए। ऐसी प्रतियोगिताओं का आयोजन केवल उच्च स्तर के विद्यार्थियों के लिए ही उपयोगी होगा। ऐसी प्रतियोगितओं के विषय विद्यार्थियों की रुचि तथा उनके स्तर के अनुकूल होने चाहिएँ इन प्रतियोगिताओं के लिए तैयारी करने से विद्यार्थियों का ज्ञान स्तर बढ़ेगा और स्पर्धा की स्वाभाविक भावना के कारण वे संस्कृत शिक्षण के लिए अधिकाधिक रुचि दिखाएँगे।

6. नाटक अभिनय

संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने का यह एक और उपाय है। प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को पठित विषय-वस्तु के नाटकीकरण के लिए तथा उच्च स्तर के विद्यार्थियों को एकांकी एवं लघु नाटकों के अभिनय के लिए प्रोत्साहित किया जाए। संस्कृत नाटकों में रोचक दृश्यों की प्रचुरता है। नाटकीकरण तथा अभिनय के माध्यम से पाठ्य सामग्री विद्यार्थियों के लिए रोचक एवं सुबोध बनेगी। प्राप्त ज्ञान स्थायी होगा। संस्कृत अध्यापक का यह कर्त्तव्य है कि वह अभिनय के लिए संवादों का विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार सरलीकरण करे। साथ ही अभिनय करने में उनका पथप्रदर्शन करे।

यदि रंगमंच आदि के अभाव में नाटकों का अभिनय सम्भव न हो तो कक्षा-अभिनय विधि को अपनाया जा सकता है। विद्यार्थी कक्षा में ही बिना रंगमंच और बिना वेशभूषा के पठित सामग्री अथवा नाटक का अभिनय करें। अध्यापक विभिन्न पात्रों को उनका भाग (पार्ट) वितरित करे। विद्यार्थी अपने-अपने भाग को कण्ठस्थ करके उसका अभिनय करें। इस प्रकार के अभिनय में व्यय बिल्कुल नहीं होगा। विद्यार्थी ऐसे कार्य में रुचि दिखाएँगे और आनन्दानुभव करेंगे।

7. संस्कृत अध्यापक की अपनी रुचि

संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए सबसे बड़ा उपाय यह है कि संस्कृत अध्यापक की अपनी रुचि संस्कृत शिक्षण में हो। यदि संस्कृत अध्यापक की अपनी रुचि इस ओर न होगी तो वह उपर्युक्त 1—6 क्रमांकों का उपयोग नहीं कर पायेगा। यदि संस्कृत शिक्षण में उसकी अपनी रुचि होगी तो वह उपर्युक्त छः उपायों को ही पूर्ण सफलता से नहीं अपनायेगा प्रत्युत अपनी ओर से भी संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए उपाय सोचेगा।

विद्यार्थी जब संस्कृत अध्यापक को अध्यापन-कार्य रुचिपूर्वक करते देखेंगे, तो वे भी संस्कृत पढ़ने में रुचि दिखाएँगे। अध्यापक की ओर से संस्कृत शिक्षण के प्रति उपेक्षा विद्यार्थियों को संस्कृत अध्ययन की ओर से विमुख बनायेगी। संस्कृत शिक्षण में रुचि रखने वाला अध्यापक अपने शिक्षण को श्रव्य-दृश्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामग्री के प्रयोग तथा अन्य उपायों से अधिकाधिक रोचक एवं सरस बनाना चाहेगा।

8. संस्कृत अध्यापक का संस्कृत शिक्षण के प्रति उपयुक्त दृष्टिकोण

जो संस्कृत अध्यापक संस्कृत शिक्षण के प्रति उपयुक्त दृष्टिकोण रखता होगा वह अवश्य ही संस्कृत शिक्षण को रोचक बना सकेगा। संस्कृत शिक्षण को भार समझने वाला अध्यापक विद्यार्थियों को केवल परीक्षा उत्तीर्ण कराने की दृष्टि से पढ़ायेगा। वह यह कभी नहीं सोचेगा कि संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने से न केवल विद्यार्थियों को और समाज को लाभ होगा प्रत्युत उसका अपना भी नाम होगा। संस्कृत शिक्षण के प्रति सही दृष्टिकोण न रखने वाला अध्यापक संस्कृत शिक्षण को जीवकोपार्जन का साधन मात्र समझता है। उसे संस्कृत भाषा के प्रति लगाव नहीं होता।

यदि संस्कृत अध्यापक संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाना चाहते हैं तो उन्हें अपने दृष्टिकोण को ठीक बनाना होगा। वे अधिकाधिक ऐसे उपाय अपनाएँ जिनसे संस्कृत शिक्षण रोचक बने और विद्यार्थी अधिकाधिक संख्या में संस्कृत पढ़ें। जो विद्यार्थी संस्कृत पढ़ने में पिछड़े हुए हों उनके प्रति संस्कृत अध्यापक को विशेष सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण रखना होगा। ऐसे विद्यार्थियों के लिए संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाना और भी आवश्यक है।

विद्यालयों में संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या दूसरे विषयों के विद्यार्थियों की संख्या की अपेक्षा कम होती है। महाविद्यालय स्तर पर यह संख्या और भी कम हो जाती है। यदि हम चाहते हैं कि संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़े तो हम सभी को संस्कृत शिक्षण के प्रति उपयुक्त दृष्टिकोण अपनाना होगा और संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए सभी सम्भव उपाय करने होंगे।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के सम्बन्ध में आप अपने दृष्टिकोण का उल्लेख करें।
2. संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए आप क्या करेंगे ?
3. संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए आप श्रव्य-दृश्य साधनों का किस प्रकार उपयोग करेंगे।
4. संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए आप कविता पाठ का किस प्रकार उपयोग करेंगे ?
5. संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए अन्त्याक्षरियों तथा कवि-सम्मेलनों का किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है।
6. संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने में भाषण तथा वादविवाद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतियोगिता का क्या महत्त्व है ?

7. नाटक अभिनय का सस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने की दृष्टि से महत्त्व स्पष्ट करें।
8. कक्षा-अभिनय विधि से क्या भाव है ? संस्कृत शिक्षण में आप इसका किस प्रकार उपयोग करेंगे।
9. संस्कृत शिक्षण को रोचक बनाने के लिए संस्कृत अध्यापक की संस्कृत शिक्षण में अपनी रुचि क्यों आवश्यक है ?
10. संस्कृत अध्यापक का संस्कृत शिक्षण के प्रति किस प्रकार का दृष्टि-कोण अपेक्षित है ?
11. विद्यार्थियों की संस्कृत पढ़ने में रुचि को विकसित करने के लिए आप क्या उपाय सुझाएँगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 21

संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग

संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा के प्रयोग की आवश्यकता

भारतवर्ष की अधिकतर भाषाओं का जन्म संस्कृत से हुआ है। इसलिए संस्कृत को हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगला, असमिया आदि भाषाओं की जननी कहा जाता है। तमिल, मलयालम, कन्नड़, तेलगू, आदि आर्येतर द्राविड़ भाषाएँ भी संस्कृत द्वारा प्रभावित हैं। भारतवर्ष की आर्य एवं आर्येतर भाषाएँ भी संस्कृत विचाराधारा से प्रभावित हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतवर्ष की सभी भाषाएँ रूप तथा विचारधारा की दृष्टि से संस्कृत भाषा से उत्पन्न हैं अथवा इस द्वारा समृद्ध हैं। भारत की सभी भाषाओं में संस्कृत के अधिकांश शब्द तत्सम अथवा तद्भव रूप में प्रयुक्त होते हैं। हिन्दी भाषा में संस्कृत भाषा की शब्दावली मूल रूप में प्रयुक्त की जाती है। संस्कृत तथा भारतीय भाषाओं में व्याकरण की दृष्टि से भी पर्याप्त साम्य है। इसलिए संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग सहायक सिद्ध होगा बाधक नहीं।

संस्कृत को निर्बाध विधि अथवा प्रत्यक्ष विधि द्वारा पढ़ाए जाने के समर्थक चाहेंगे कि संस्कृत शिक्षण मातृभाषा के माध्यम से न होकर संस्कृत के माध्यम से हो। वे कहते हैं कि संस्कृत को मातृभाषा अथवा किसी अन्य भाषा के माध्यम से पढ़ाने से शब्द और अर्थ का सीधा सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकेगा। परन्तु वास्तविकता यह है कि निर्बाध अथवा प्रत्यक्ष विधि द्वारा संस्कृत के सभी पक्षों का ज्ञान नहीं कराया जा सकेगा। व्याख्या के लिए मातृभाषा का अवलम्बन करना ही होगा।

संस्कृत भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा नहीं है। इसका शिक्षण प्रायः छटी कक्षा से आरम्भ होता है। इससे पूर्व विद्यार्थी मातृभाषा का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर चुके होते हैं। संस्कृत का शिक्षण द्वितीय भाषा के रूप में कराया जाता है। अतः संस्कृत वाक्यों एवं सन्दर्भों की व्याख्या करने तथा व्याकरण के नियम समझने में मातृभाषा का प्रयोग आवश्यक होगा। मातृभाषा तथा संस्कृत भाषा की शब्दावली में पर्याप्त समता की दृष्टि से भी मातृभाषा के समकक्ष संस्कृत शब्दों को समझना सुगम होगा।

इन सभी बातों से स्पष्ट है कि संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा का यथावश्यक प्रयोग किया जाना चाहिए। परन्तु इससे यह न समझा जाए कि संस्कृत शिक्षण के लिए संस्कृत भाषा का माध्यम के रूप में बहिष्कार कर दिया जाए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रारम्भिक स्तर पर मौखिक कार्य तथा उच्च स्तर पर व्याख्या तथा रचना कार्यों के लिए संस्कृत का माध्यम के रूप में प्रयोग लाभकारी होगा।

संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा के प्रयोग के क्षेत्र

ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग आवश्यकतानुर किया जा सकता है। प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण के मातृभाषा का प्रयोग आवश्यक होगा। उच्चस्तर के विद्यार्थी संस्कृत में विचारों के आदान-प्रदान में सक्षम होते हैं। अतः इस स्तर पर संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग न्यूनातिन्यून किया जाना चाहिए। विद्यालयों में मातृभाषा का प्रयोग संस्कृत शिक्षण के निम्नलिखित क्षेत्रों में किया जा सकता है :

1. प्रस्तावना के लिए।
2. अनुकरण वाचन के सम्बन्ध में निर्देश के लिए।
3. कठिन शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों की व्याख्या के लिए।
4. संस्कृत गद्य, पद्य के अनुवाद के लिए।
5. मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद के लिए।
6. व्याकरण सम्बन्धी नियमों की व्याख्या के लिए।
7. रचना कार्यों के लिए।
8. अक्षरविन्यास तथा लिखित कार्य के संशोधन के समय।
9. मौखिक कार्य के समय।
10. अन्य सामान्य कार्यों के लिए।

संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा के प्रयोग का स्वरूप

संस्कृत शिक्षण के उपर्युक्त क्षेत्रों में मातृभाषा के प्रयोग का स्वरूप इस प्रकार हो सकता है :

1. संस्कृत पाठ प्रस्तुत करने से पूर्व प्रस्तावना कार्य के लिए मातृभाषा का प्रयोग प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर आवश्यक होगा। प्रस्तावना में विद्यार्थियों से उनके पूर्वज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। इन प्रश्नों द्वारा विद्यार्थियों की जिज्ञासा को जाग्रत् किया जाता है। साथ ही पूर्व पठित ज्ञान को नवीन पाठ के साथ सम्बन्धित किया जाता है। संस्कृत गद्य, पद्य अथवा अन्य किसी पाठ के लिए यदि प्रस्तावना सम्बन्धी प्रश्न संस्कृत में किए जाएँ और विद्यार्थी उनका उत्तर संस्कृत में दे सकें तो इससे बढ़कर अच्छी बात और क्या होगी। परन्तु यदि विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा सम्बन्धी योग्यता इतनी न हो तो उस स्थिति में प्रस्तावना के सोपान में मातृभाषा का प्रयोग किया जा सकता है।

2. अध्यापक द्वारा गद्यांश, पद्यांश का आदर्श वाचन, प्रस्तुत किए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाने के पश्चात् विद्यार्थियों द्वारा अनुकरण वाचन किया जाता है। अनुकरण वाचन के समय विद्यार्थी उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियाँ करेंगे। संस्कृत अध्यापक का उस समय मातृभाषा में निर्देश देना आवश्यक होगा अन्यथा विद्यार्थी इन्हें ठीक प्रकार समझ नहीं पाएँगे।

3. संस्कृत गद्यांश, पद्यांश शिक्षण के समय कठिन शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों की व्याख्या के लिए मातृभाषा का अवलम्बन आवश्यक होगा। प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी संस्कृत भाषा में व्याख्या को ग्रहण नहीं कर सकेंगे। आयतनम् का शब्दार्थ स्थान, धौतम् का शब्दार्थ धुला हुआ, अपत्यम् का शब्दार्थ सन्तान समझाने के लिए मातृभाषा का प्रयोग परमावश्यक है। ऐसे शब्द प्रत्येक पाठ में बहुत से होंगे।

इसी प्रकार वाक्यांशों की व्याख्या के लिए भी मातृभाषा का प्रयोग आवश्यक होगा। "ते मृत्युलोके भुवि भारभूताः मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति," जैसे वाक्यांशों की व्याख्या मातृभाषा के बिना विद्यार्थी स्पष्टरूपेण ग्रहण नहीं कर सकेंगे।

4. प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का संस्कृत ज्ञान अत्यल्प होता है। सरल से सरल वाक्य को भी मातृभाषा के अवलम्बन के बिना समझना उनके लिए कठिन होता है। अतः विद्यार्थियों को संस्कृत गद्य, पद्य मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाना होगा अन्यथा वे अर्थग्रहण नहीं कर पाएँगे।

5. संस्कृत बोलचाल की भाषा नहीं है। विद्यार्थियों को संस्कृत सिखाने के लिए मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद करना सिखाना होगा। अतः इस दृष्टि से भी संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग करना आवश्यक होगा।

6. प्रभूक्तिः, नोन्नतिकारकः जैसे शब्दों का सन्धिच्छेद समझाने के लिए 'निधाय' तथा आकर्ण्य के व्याकरण रूपों को समझाने के लिए तथा व्याकरण सम्बन्धी अन्य नियमों को समझाने के लिए मातृभाषा का प्रयोग आवश्यक होगा। विद्यार्थी मातृभाषा के माध्यम के बिना व्याकरण के नियमों को ग्रहण नहीं कर पाएँगे।

7. संस्कृत रचनाकार्य के लिए मातृभाषा के प्रयोग की आवश्यकता होगी। प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर दृश्य वर्णन, कथा और निबन्ध लेखन के समय विद्यार्थी पहले मातृभाषा में वाक्य सोचेंगे और फिर उन्हें संस्कृत में परिणत करेंगे। निर्बाध विधि के माध्यम से संस्कृत में ही सोचना और लिखना संस्कृत सीखने वाले विद्यार्थियों को कठिन कार्य प्रतीत होगा। इसके लिए पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता होगी। जब तक विद्यार्थी इस दिशा में दक्ष नहीं हो जाते तब तक संस्कृत रचना कार्यों के लिए मातृभाषा का प्रयोग करना पड़ेगा।

8. प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी संस्कृत लिखने में अक्षरविन्यास, भाषा, तथा व्याकरण सम्बन्धी अनेक अशुद्धियाँ करते हैं। इन अशुद्धियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को समझाने के लिए तथा इनसे सम्बद्ध नियमों को समझाने के लिए मातृभाषा का अवलम्बन करना आवश्यक होगा।

9. संस्कृत शिक्षण के अन्तर्गत मौखिक कार्य संस्कृत में ही होना चाहिए। परन्तु आरम्भ में विद्यार्थी ऐसा न कर पाएँगे। इसलिए मातृभाषा का प्रयोग आवश्यक होगा। हाँ धीरे-धीरे मातृभाषा का प्रयोग घटता जाना चाहिए।

10. आरम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर संस्कृत पद्यांशों की व्याख्या, सौन्दर्यबोध तथा परीक्षा पत्रों के निर्माण में भी मातृभाषा का प्रयोग करना होगा। संस्कृत शिक्षण सम्बन्धी अन्य कार्यों में भी मातृभाषा के प्रयोग की आवश्यकता हो शकती है।

निष्कर्ष यह है कि संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग आवश्यक है। आरम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर तो यह अनिवार्य है। फिर भी यत्न यह होना चाहिए कि विद्यार्थी संस्कृत भाषा में विचारों का आदान-प्रदान करने में समर्थ हों।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा के प्रयोग की क्या आवश्यकता है ?
2. संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा के प्रयोग की आवश्यकता किन-किन क्षेत्रों में होगी ?
3. संस्कृत गद्य पढ़ाने में मातृभाषा के प्रयोग की आवश्यकता किस रूप में होगी ?
4. संस्कृत पद्य शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग किस लिए आवश्यक होगा ?
5. व्याकरण शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग क्यों आवश्यक है।
6. संस्कृत रचना कार्य में मातृभाषा का प्रयोग क्यों आवश्यक है।
7. प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण के लिए मातृभाषा का प्रयोग क्यों आवश्यक है ?
8. उच्चस्तर पर संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग किस रूप में करना पड़ेगा ?
9. संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा का न्यूनातिन्यून प्रयोग किन परिस्थितियों में सम्भव हो सकता है ?
10. संस्कृत शिक्षण में मातृभाषा के प्रयोग से क्या लाभ तथा क्या हानियाँ होंगी ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 22

संस्कृत शिक्षण में मूल्यांकन का नया दृष्टिकोण

मूल्यांकन से अभिप्राय

शिक्षा और परीक्षा का अटूट सम्बन्ध है। शिक्षा में प्रारम्भ से ही परीक्षा का क्रम किसी न किसी रूप में चलता रहा है। परीक्षाओं द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञानस्तर, बुद्धि कौशल तथा कार्य-शक्ति की जाँच की जाती रही है। प्रत्येक देश में विद्यार्थियों की योग्यता के स्तर को जाँचने के लिए किसी न किसी प्रकार की परीक्षा-प्रणाली प्रचलित है।

गत वर्षों में मनोवैज्ञानिकों और शिक्षा-शास्त्रियों का ध्यान परीक्षा प्रणाली के सुधार की ओर गया और परिणामतः मूल्यांकन का नया दृष्टिकोण सामने आया। मूल्यांकन में इवैल्यूएटिंग और एप्रेजिंग दोनों कार्य किए जाते हैं अर्थात् विद्यार्थियों की योग्यता का परीक्षण करने के साथ-साथ छात्रों की प्रगति का लेखा भी बनाया जाता है। अवनति के कारणों की जाँच की जाती है। इसी आधार पर यह ज्ञात किया जाता है कि शिक्षा विषयक उद्देश्यों की कहाँ तक प्राप्ति हुई है। परीक्षा विद्यार्थियों के योग्यता-स्तर को जाँचती है परन्तु मूल्यांकन में ऐसी जाँच के साथ-साथ यह भी देखा जाता है कि शिक्षण सम्बन्धी उद्देश्य कहाँ तक पूरे हुए हैं।

मूल्यांकन की आवश्यकता

किसी कार्य का कर लेना ही पर्याप्त नहीं होता। यह भी जानना आवश्यक होता है कि वह कार्य कहां तक सफल हुआ है। जिस उद्देश्य को लेकर वह कार्य किया गया था उसको प्राप्त किया जा सका है अथवा नहीं। अध्यापकों को शिक्षण में कहाँ तक सफलता मिली है ? विद्यार्थियों ने कहाँ तक विषय ग्रहण किया है ? यह सब कुछ परम्परागत परीक्षाओं द्वारा सम्भव नहीं। इसके लिए मूल्यांकन का अवलम्बन आवश्यक है ?

मूल्यांकन शिक्षण विधि को सुधारने और शिक्षा स्तर को उन्नत करने में सहायक बनता है ?

मूल्यांकन के प्रकार

मूल्यांकन दो प्रकार का होता है :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

1. आन्तरिक मूल्यांकन

आन्तरिक मूल्यांकन से अभिप्राय है विद्यार्थियों द्वारा शैक्षणिक सत्र में किए गये समस्त कार्यों तथा दैनिक गतिविधियों का परीक्षण। इस प्रकार का मूल्यांकन अत्युत्तम है क्योंकि वर्ष भर के कार्य को केवल एक परीक्षा द्वारा नहीं जाँचा जा सकता। आन्तरिक मूल्यांकन विद्यार्थी की दैनिक प्रगति, उस द्वारा किए गये गृह-कार्य, विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों में लिए गये भाग तथा आवधिक परीक्षाओं के परिणाम पर आधारित होना चाहिए।

2. बाह्य मूल्यांकन

बाह्य मूल्यांकन विद्यालयों, शिक्षा-बोर्डों तथा विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित परीक्षाओं के रूप में किया जाता है। परीक्षा में लिखित उत्तर अथवा किए गये कार्य के आधार पर अंक वितरित किए जाते हैं।

वर्तमान संस्कृत परीक्षा प्रणाली के दोष

आजकल समस्त परीक्षा प्रणाली दूषित है। परिणामतः वर्तमान संस्कृत परीक्षा प्रणाली भी दोषपूर्ण है। इसके कुछ दोष निम्नांकित हैं :

1. वर्तमान संस्कृत परीक्षाओं से विद्यार्थियों की वास्तविक योग्यता की ठीक जाँच नहीं हो पाती। केवल पाँच छः अथवा कुछ प्रश्नों के आधार पर परीक्षार्थियों को उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण घोषित कर दिया जाता है।

2. भाषा के चार प्रमुख कौशल हैं : (क) सुनना, (ख) बोलना, (ग) पढ़ना और (घ) लिखना। संस्कृत शिक्षण की सफलता इन चारों कौशलों पर आधारित है किन्तु वर्तमान परीक्षा प्रणाली में केवल लिखित कौशल का परीक्षण हो पाता है।

3. वर्तमान संस्कृत परीक्षाएँ रटने की प्रक्रिया को बढ़ावा देती हैं। विद्यार्थियों को संस्कृत का ज्ञान हो पाया हो अथवा नहीं फिर भी वे अपनी रटाई के आधार पर पास हो जाते हैं।

4. वर्तमान संस्कृत परीक्षा प्रणाली में संयोग काम करता है। सारा वर्ष पढ़ने वाला विद्यार्थी संयोगवश अनुत्तीर्ण हो जाता हैं और कुछ चुने हुए प्रश्नों को रट लेने वाला विद्यार्थी खूब अच्छे अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हो जाता है।

5. वर्तमान संस्कृत परीक्षा प्रणाली अविश्वसनीय है। एक परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका को दो परीक्षक यदि अलग-अलग जाँचें तो अंकों में पर्याप्त अन्तर होगा। हो सकता है एक परीक्षक उसे उत्तीर्ण करे और दूसरा अनुत्तीर्ण।

संस्कृत शिक्षण में मूल्यांकन का नया दृष्टिकोण : नयी परीक्षा प्रणाली

शिक्षण स्तर बहुत कुछ परीक्षा प्रणाली पर आधारित होता है। परीक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रणाली के दोष रहित होने से शिक्षण स्तर उन्नत होता है। इसी दृष्टि से संस्कृत शिक्षण में मूल्यांकन के नये दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है। मूल्यांकन प्रणाली के दोषरहित होने से शिक्षण प्रणाली अपने आप सुधरेगी और फलस्वरूप शिक्षण स्तर भी सुधरेगा। अतः संस्कृत में परीक्षा प्रणाली को निर्दोष बनाना होगा।

परीक्षण की सामान्य विधियाँ तीन हैं—प्रबन्धात्मक विधि, वस्तुगत विधि, तथा मौखिक विधि। इन तीनों का संस्कृत परीक्षा प्रणाली के अन्तर्गत उपयोग किया जाना चाहिए। संस्कृत की नवीन परीक्षा प्रणाली की रूपरेखा इस प्रकार की होनी चाहिए :

1. प्रबन्धात्मक परीक्षाएं

वर्तमान परीक्षा प्रणाली प्रबन्धात्मक है। प्रबन्धात्मक प्रणाली में प्रश्नों का उत्तर लम्बा होता है। शैली विवरणात्मक होती है। प्रचलित संस्कृत परीक्षा प्रणाली मुख्यतः प्रबन्धात्मक है। इस विधि द्वारा ज्ञानोपलब्धि का वास्तविक परीक्षण नहीं हो पाता है। परीक्षार्थी विषय का पर्याप्त ज्ञान रखने पर भी भाषा शैली के अपरिपक्व होने पर परीक्षा में पिछड़ जाता है। परन्तु प्रबन्धात्मक परीक्षाओं का बहिष्कार नहीं किया जा सकता। संस्कृत में प्रबन्धात्मक परीक्षाएँ निम्नांकित विषयों के मूल्यांकन के लिए आवश्यक हैं।

1. अक्षर विन्यास
2. लिखित अभिव्यक्ति
3. पाठ्य पुस्तक पर आधारित विषय-वस्तु का ज्ञान
4. कविताओं कीं रसानुभूति
5. सार तथा भाव लेखन
6. कथा तथा घटना वर्णन
7. पत्र तथा निबन्ध रचना।

2. वस्तुगत परीक्षाएं

प्रबन्धात्मक परीक्षाओं की अविश्वसनीयता, अनिश्चितात्मकता जैसे दोषों के निर्मूलन के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में वस्तुगत परीक्षाओं द्वारा मूल्यांकन पर बल दिया गया है। वस्तुगत परीक्षा प्रणाली में छोटे-छोटे प्रश्न बनाए जाते हैं। प्रश्नों के उत्तर भी छोटे होते हैं। इन परीक्षाओं की यह विशेषता होती है कि इनमें प्रश्नों के उत्तर एक जैसे होते हैं, उत्तर देने में समय कम लगता है, अंक वितरण प्रत्येक स्थिति में एक जैसा होता है। परीक्षा-प्रश्नों को सारे पाठ्यक्रम में से चुना जा सकता है। इन परीक्षाओं का एक बड़ा दोष यह है कि इन द्वारा विद्यार्थियों की भाषा-शैली तथा लिखित अभिव्यक्ति की जाँच नहीं हो पाती। फिर भी इनका अपना महत्त्व है। इनका उपयोग संस्कृत शिक्षण में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निम्नांकित विषयों के लिए किया जा सकता है :

1. शब्दावली का ज्ञान
2. शब्दावली का शुद्ध प्रयोग
3. पठित विषय का ग्रहण
4. अक्षर विन्यास
5. सैद्धान्तिक व्याकरण
6. प्रयोगात्मक व्याकरण
7. अलंकार तथा छन्द ।

वस्तुगत परीक्षा प्रणाली के अन्तर्गत संस्कृत में निम्नांकित प्रकार के प्रश्न बनाए जा सकते हैं :

1. **बहुविकल्प प्रश्न** : इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर में शुद्ध शब्द के साथ अन्य कई शब्द दिए जाते हैं । इनमें से शुद्ध उत्तर चुनने को कहा जाता है । जैसे—

(क) शुद्ध उत्तर कोष्ठक में लिखें :
'फल' शब्द का बहुवचन—फलाः, फलानि, फले ( )

(ख) इस वाक्य को शुद्ध बनाने के लिए अशुद्ध शब्द पर × चिह्न लगाएँ :
अहम् पठसि, पठति, पठामि ।

2. **प्रत्याव्हान प्रश्न** : विद्यार्थी इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर अपनी स्मृति के आधार पर देते हैं । जैसे—

(क) उत्तर कोष्ठक में लिखें :
'लता' शब्द का रूप प्रथमा बहुवचन में ( )
'राजन्' शब्द का रूप तृतीया एकवचन में ( )

(ख) उत्तर कोष्ठक में लिखें :
लिख्—लोट् लकार का रूप उत्तम पुरुष बहुवचन में ( )
हस्—लृट् लकार का रूप प्रथम पुरुष एकवचन में ( )

3. **प्रत्यभिज्ञा प्रश्न** : ऐसे प्रश्नों में शुद्ध अशुद्ध रूप की पहचान की जाती है । जैसे शुद्ध रूप के आगे (√) चिह्न तथा अशुद्ध के आगे (×) चिह्न लगाएँ ।

(क) नदी शब्द का रूप तृतीया एक वचन में नद्या बनता है । ( )
(ख) पठ् धातु का रूप लट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन में पठतः बनता है । ( )
(ग) विजयादशमी फाल्गुनमासे भवति । ( )

4. **तुलनात्मक प्रश्न** : इस प्रकार के प्रश्नों में मिश्रित शब्दों के दो समूह दिए जाते हैं । एक समूह के शब्दों को दूसरे समूह के शब्दों के अनुरूप क्रमबद्ध करना होता है, जैसे :

द्वौ	सैनिकाः	द्वौ बालकौ
शूराः	तरुः	शूराः सैनिकाः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशालः निशायाम् ( )
सर्वस्याम् बालकौ ( )
केनचित् शृगालेन ( )

5. **रिक्त स्थानों की पूर्ति :** कोष्ठकों में दिए गए शब्दों के शुद्ध रूप रिक्त स्थानों में भरें :

(क) ···एतत् फलम् रोचते । (अस्मद्)
(ख) अहम्·····बिना न गमिष्यामि । (युष्मद्)
(ग) रामः राक्षसान्·····। (हन् धातु)
(घ) भरतस्य···नाम कैकेयी आसीत् । (मातृ)

6. **सुव्यवस्थित अर्थात् क्रमबद्ध करना :** (क) सरित्, सरिति, सरितः, सरिते, सरितः, सरितम्, सरिता—को विभक्ति अनुसार क्रमबद्ध करें ।

(ख) युनिक्त, युङ्क्थः युङ्क्तः, युङ्क्थ, युञ्जन्ति, युनक्षि—को पुरुष तथा वचन अनुसार क्रमबद्ध करें ।

ऊपर दिए गए प्रश्न केवल कुछ उदाहरण हैं। इनके आधार पर ऐसे कितने ही प्रश्न बनाए जा सकते हैं । अध्यापक को अपनी सूझबूझ बरतनी चाहिए ।

3. मौखिक परीक्षाएँ

मौखिक परीक्षाएँ मौखिक परीक्षण के लिए होती हैं । इनमें लिखित कार्य नहीं करना पड़ता । केवल मौखिक अभिव्यक्ति से ही क्षमता का परीक्षण किया जाता है । संस्कृत उच्चारण तथा ध्वनियों के परीक्षण के लिए मौखिक परीक्षाओं की आवश्यकता होती है। विषय-ग्रहण, शब्दार्थ, ज्ञान, वाचन में कुशलता, स्मरण-क्षमता, सामान्य-ज्ञान तथा मौखिक अभिव्यक्ति की जांच के लिए इनका उपयोग किया जा सकता है ।

संस्कृत प्रश्नपत्रों में सुधार की आवश्यकता

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत शिक्षण के स्तर को उन्नत करने के लिए संस्कृत में मूल्यांकन के नये दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है । विद्यार्थियों के ज्ञान के पूर्ण मूल्यांकन के लिए प्रबन्धात्मक परीक्षाओं के साथ-साथ वस्तुगत तथा मौखिक परीक्षाओं की आवश्यकता होगी । वर्तमान परिस्थितियों में इन परीक्षाओं का अलग-अलग आयोजन व्यवहार्य नहीं है । प्रायः प्रारम्भिक स्तर पर संस्कृत का एक और माध्यमिक स्तर पर दो प्रश्नपत्र होते हैं । इन प्रश्नपत्रों के रूप को बदलना होगा । इनमें प्रबन्धात्मक तथा वस्तुगत—दोनों प्रकार के प्रश्न होने चाहिएँ । लिखित अभिव्यक्ति, अक्षर विन्यास सम्बन्धी ज्ञान, व्याख्या, कहानी एवं घटना वर्णन तथा पत्र, प्रस्ताव आदि के लिए प्रबन्धात्मक प्रश्न आवश्यक हैं। परन्तु इन प्रश्नों के निर्माण में घिसी-पिटी प्रणाली को छोड़कर नया दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। प्रश्नपत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निर्माता प्रायः पिछले वर्षों में आए प्रश्नों को ही घुमा-फिराकर प्रश्नपत्र बना देते हैं। उनमें नवीनता नहीं ला पाते। विद्यार्थी भी परीक्षा के लिए तैयारी पिछले पर्चों को देखकर करते हैं। यदि कोई नयी प्रकार का प्रश्न आ जाता है तो वे घबरा जाते हैं। कभी-कभी वे उग्र रूप दिखाने लगते हैं। उनके अध्यापक भी उनका समर्थन करते हैं। यह प्रवृत्ति अनुचित है। प्रश्नपत्र निर्माता प्रश्नपत्रों में प्रबन्धात्मक प्रश्न ऐसे बनाएँ कि जिनमें परीक्षार्थियों को अपनी कल्पना से काम लेना पड़े, नकल से नहीं।

परीक्षा प्रणाली को विश्वसनीय तथा निष्पक्ष बनाने के लिए नवीन परीक्षा प्रणाली सम्बन्धी दृष्टिकोण को अपनाना भी आवश्यक है। नवीन मूल्यांकन प्रणाली में प्रश्नों की रचना बड़ी महत्त्वपूर्ण है। वस्तुगत परीक्षण के लिए बहु-विकल्प, प्रत्याह्वान, प्रत्यभिज्ञा, तुलना, क्रमबद्धता, रिक्तस्थान-पूर्ति सम्बन्धी प्रश्नों का निर्माण किया जा सकता है। अध्यापक पाठ्य पुस्तक, व्याकरण तथा सामान्य ज्ञान सम्बन्धी विषयों पर आधारित प्रश्नों का निर्माण अपनी सूझ-बूझ से कर सकता है। कुछ उदाहरण इसी अध्याय में पहले दिए जा चुके हैं। संस्कृत में लिखित परीक्षाओं के अतिरिक्त मौखिक परीक्षाएँ भी आवश्यक हैं। ध्वनियों एवं शब्दों के उच्चारण, वाचन तथा मौखिक अभिव्यक्ति की जाँच के लिए मौखिक परीक्षाओं का आयोजन अवश्य किया जाना चाहिए। प्रारम्भिक स्तर पर निश्चितरूपेण इनका उपयोग लाभकारी होगा।

प्रत्येक कक्षा में परीक्षा के लिए मौखिक, वस्तुगत तथा प्रबन्धात्मक प्रश्नों के लिए अंक निर्धारित होने चाहिएँ। प्रारम्भिक स्तर पर मौखिक परीक्षण के लिए अधिक और प्रबन्धात्मक परीक्षण के लिए अपेक्षया कम अंक होने चाहिएँ। माध्यमिक स्तर पर प्रश्नपत्रों में वस्तुगत प्रश्न भी होने चाहिएँ। उच्च कक्षाओं के प्रश्नपत्रों में प्रबन्धात्मक प्रश्न होने ही चाहिएँ।

संस्कृत शिक्षण में मूल्यांकन सम्बन्धी कुछ उपयोगी सुझाव

1. संस्कृत शिक्षण के स्तर को उन्नत करने के लिए यह आवश्यक है कि संस्कृत में मूल्यांकन के नये दृष्टिकोण को अपनाया जाए। अतः संस्कृत अध्यापकों को चाहिए कि वे घिसी-पिटी प्रणाली पर आधारित प्रश्नपत्र बनाने के स्थान पर ऐसे प्रश्नपत्र बनाएँ जिन द्वारा विद्यार्थियों की योग्यता को सही रूप से जाँचा जा सके।

2. प्रश्नपत्र ऐसे बनाए जाएँ जिनका उत्तर देने के लिए विद्यार्थियों को अपनी योग्यता, बुद्धि एवं कल्पना का उपयोग करना पड़े। तभी रटकर पास होने और नकल करने की कुप्रवृत्तियों का निर्मूलन हो सकेगा।

3. परीक्षण के लिए प्रबन्धात्मक, वस्तुगत तथा मौखिक परीक्षाओं को आधार बनाने के साथ-साथ गृह-कार्य तथा विद्यार्थियों की दैनिक प्रगति को भी महत्त्व दिया जाना चाहिए। अभिप्राय यह है कि बाह्य मूल्यांकन के साथ-साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आन्तरिक मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए।

4. आन्तरिक मूल्यांकन करते समय विद्यालय के अध्यापकों को तथा बाह्य मूल्यांकन करते समय परीक्षकों को निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

5. प्रश्न पत्र ऐसे बनाये जाएँ जिनसे यह भली-भाँति आँका जा सके कि संस्कृत शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति कहाँ तक हो रही है।

6. वस्तुगत परीक्षण के लिए प्रश्नों का निर्माण सूझ-बूझ से किया जाए अन्यथा इनसे लाभ के स्थान पर हानि होगी और विद्यार्थियों की योग्यता का सही मापन नहीं हो सकेगा।

7. शिक्षा-बोर्डों अथवा विश्वविद्यालयों द्वारा प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तर के लिए मौखिक परीक्षाएँ निर्धारित न भी की गई हों तो भी विद्यार्थियों की वाचन-कुशलता तथा उनके उच्चारण को जाँचने के लिए संस्कृत अध्यापकों को अपनी ओर से मौखिक परीक्षाएँ आयोजित करनी चाहिएँ।

8. संस्कृत परीक्षा-प्रणाली को प्रामाणिक, विश्वसनीय एवं निष्पक्ष बनाने के लिए यथोचित सभी पग उठाए जाएँ।

9. भाषा शिक्षण के चार प्रमुख कौशल हैं—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। संस्कृत परीक्षा प्रणाली ऐसी हो जिससे विद्यार्थियों के इन चारों कौशलों का परीक्षण हो सके। कम-से-कम प्रारम्भिक स्तर पर इन चारों कौशलों का परीक्षण अनिवार्य रूप से होना चाहिए।

10. संस्कृत प्रश्नपत्र ऐसे बनाए जाएँ जो कक्षा विशेष के लिए निर्धारित समस्त पाठ्य-क्रम पर आधारित हों।

11. प्रश्न ऐसे हों जो विद्यार्थियों के संस्कृत भाषा सम्बन्धी ज्ञान-स्तर को जाँचें। विद्यार्थी केवल संयोग से उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण न हों।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. मूल्यांकन से क्या अभिप्राय है ?
2. शिक्षण में मूल्यांकन की क्या आवश्यकता है ?
3. मूल्यांकन के मुख्य प्रकार कितने हैं ?
4. वर्तमान संस्कृत परीक्षा-प्रणाली के दोष बताएँ।
5. संस्कृत शिक्षण में मूल्यांकन का नया दृष्टिकोण अपनाना क्यों आवश्यक है ?
6. प्रबन्धात्मक परीक्षाओं से क्या अभिप्राय है ? इनका संस्कृत शिक्षण में किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है ?
7. वस्तुगत परीक्षाएँ क्या हैं ? संस्कृत शिक्षण में इनकी उपयोगिता सोदाहरण स्पष्ट करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

8. मौखिक परीक्षाओं का संस्कृत शिक्षण में आप किस प्रकार उपयोग करेंगे ?
9. संस्कृत प्रश्नपत्रों को आदर्श बनाने के लिए आप क्या सुझाव देंगे ?
10. संस्कृत शिक्षण में आन्तरिक मूल्यांकन का आप किस प्रकार उपयोग करेंगे ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्याय 23

पाठ योजना

पाठ योजना से अभिप्राय

किसी भी कार्य को करने से पूर्व हम उस कार्य की कार्य-योजना सोचते हैं अर्थात् यह निर्धारित करते हैं कि वह कार्य कितने समय में करना है और कैसे करना हैं। जो कार्य पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार किया जाता है उसमें सफलता मिलती है और कार्य करने में श्रम भी कम लगता है।

पाठ योजना से अभिप्राय है पाठ को कक्षा में पढ़ाने की योजना। पाठ योजना में पढ़ाए जाने वाले पाठ से सम्बन्धित सूचनाएँ होती हैं। पाठ योजना से स्पष्ट होता है कि अध्यापक कौन-सी कक्षा को क्या पढ़ाने वाला है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि उस पाठ को पढ़ाने के लिए अध्यापक कौन-सी विधि का प्रयोग करेगा। पहले क्या पढ़ाएगा और बाद में क्या ? वह विद्यार्थियों से कौन-से प्रश्न पूछेगा ? विद्यार्थियों द्वारा पठित ज्ञान की पुनरावृत्ति के लिए अध्यापक क्या करेगा? कक्षा में अथवा घर पर करने के लिए विद्यार्थियों को अभ्यासार्थ क्या काम दिया जाएगा ? आदि आदि।

पाठ योजना को पाठ-संकेत के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसमें पाठ को पढ़ाने के लिए संकेत दिए हुए होते हैं। पाठ योजना में एक कार्य के पश्चात् दूसरा कार्य करने के लिए संकेत दिए जाते हैं। ये संकेत विभिन्न सोपनों के अन्तर्गत दिए जाते हैं। जैसे हम एक सोपान से दूसरे सोपान पर पग रखते हुए नीचे से उपर पहुँच जाते हैं वैसे ही पाठ योजना के सोपानों का अनुसरण करते हुए हम पाठ को समाप्त करते हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि पाठ योजना अध्यापक द्वारा कक्षा में किए जाने वाले शिक्षण कार्य का विवरण है। अध्यापक निर्धारित समय में विद्यार्थियों को कितना पाठ पढ़ाएगा और किस विधि से पढ़ाएगा—यह सब कुछ पाठ योजना से ज्ञात होता है।

पाठ योजना की आवश्यकता

ऊपर लिखा जा चुका है कि योजना द्वारा किया गया कार्य सुसाध्य होता है। इसमें श्रम कम लगता है। शिक्षण कार्य को और अधिक सावधानी से करने की आवश्यक्ता है क्योंकि शिक्षण कार्य को बिना किसी योजना के करने से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्यार्थियों का भविष्य अंधकारमय बन सकता है। योजना के अभाव में शिक्षण कार्य अरोचक होगा और शिक्षण सम्बन्धी उद्देश्य प्राप्त करने में भी कठिनाई होगी। अतः शिक्षण कार्य का योजनाबद्ध होना अत्यन्त आवश्यक है।

पाठ पढ़ाने से पूर्व अध्यापक को ज्ञात होना चाहिए कि उसे किसी पाठ का कितना अंश पढ़ाना है और किस विधि से पढ़ाना है। यह सब कुछ उसे पाठ योजना से ज्ञात होगा। पाठ योजना अध्यापक का शिक्षण के समय पथप्रदर्शन करती है।

पाठ योजना से निम्नांकित लाभ हैं :

1. पाठ योजना से अध्यापक को यह स्पष्ट हो जाता है कि उसे विशेष कालांश में कितना पाठ पढ़ाना है और किस विधि से पढ़ाना है।

2. पाठ योजना से अध्यापक का कार्य सरल बनता हैं। पहले से ही उसे यह ज्ञात होता है कि उसे किस समय क्या करना है। कौन से प्रश्न पूछने हैं? अभ्यासार्थ क्या करना है? उसे ये बातें कक्षा में नहीं सोचनी पड़तीं।

3. पाठ योजना पहले से बना लेने पर विद्यार्थियों की रुचियों का ध्यान रखा जा सकता है। उनके मानसिक स्तर के अनुसार कार्यक्रम बनाया जा सकता है।

4. पाठ योजना की विद्यमानता से विद्यार्थियों और अध्यापक को कम परिश्रम करना पड़ता हैं।

5. पाठ योजना द्वारा पाठ को पढ़ाने के उद्देश्य सुगमता से प्राप्त किए जा सकते हैं।

6. पाठ योजना के लिए अध्यापक को कक्षा में आने से पूर्व तैयारी करनी पड़ती है। इससे अध्यापक द्वारा शिक्षण कार्य सुनिश्चित एवं सुव्यवस्थित बनता है।

7. पाठ योजना के कारण अध्यापक एक सीमा में कार्य करता है। वह विचलित नहीं होता।

8. अध्यापक आत्मविश्वास से कार्य करता है। वह कक्षा में घबराता नहीं।

9. पाठ योजना के कारण पिष्टपेषण बच जाता है। अध्यापक सोपानानुसार आगे बढ़ता रहता है। वह एक ही विषय-स्थल पर चक्कर नहीं काटता।

10. पाठ योजना विभिन्न दिनों और कालांशों में पढ़ाए गए पाठों के मध्य श्रृंखला का कार्य करती है। शिक्षण धारा-प्रवाह रूप से चलता है। कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा—वाली उक्ति चरितार्थ नहीं होने पाती।

उपर्युक्त सभी लाभों के लिए पाठ विद्यमानता आवश्यक है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तम पाठ योजना के गुण

उत्तम पाठ योजना के लिए निम्नांकित गुण अपेक्षित हैं :

1. पाठ योजना विद्यार्थियों के ज्ञान की पृष्ठभूमि, मानसिक स्तर, उनकी अवस्था तथा रुचियों के अनुरुप हो ।

2. पाठ योजना के निर्माण में सरल से कठिन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर आदि शिक्षण सिद्धांतों का ध्यान रखा गया हो ।

3. पाठ योजना अध्यापक के शिक्षण कार्य में सहायक हों । इससे उसका कार्य सुगम बने ।

4. पाठ योजना से पहले पढ़ाए गए तथा बाद में पढ़ाए जाने वाले पाठों का सम्बन्ध झलकता हो ।

5. पाठ योजना में उन सभी सहायक साधनों की ओर संकेत हो जिनकी आवश्यकता पढ़ाते समय होनी हो ।

6. पाठ योजना क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित हो । पहले वाली बात पहले और बाद वाली बाद में लिखी हो ।

7. पाठ योजना अध्यापक की सहायता के लिए और शिक्षण कार्य को सुव्यवस्थित बनाने के लिए होती है । अतः यह लचकदार हो । आवश्यकतानुसार इसमें परिवर्तन करने की छूट हो । कठोर प्रतिबन्ध से हानि की आशंका हो सकती है ।

8. पाठ योजना अध्यापक के शिक्षण कार्य का दर्पण है । अतः यह स्वच्छ तथा सुन्दर अक्षरों में लिखित हो ।

पाठ योजना के प्रकार

1. वार्षिक योजना

कक्षा को वर्ष भर में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम को मासिक, साप्ताहिक तथा दैनिक इकाइयों में बाँट लिया जाता है । इससे वर्ष भर में किया जाने वाला कार्य निश्चित हो जाता है । कार्य समय पर स्वतः होता चलता है । इसके अभाव में कार्य की कभी अति धीमी और कभी अति तीव्र गति होने की आशंका रहती है ।

2. दैनिक योजना

दैनिक योजना का सम्बन्ध एक दिन के शिक्षण कार्य से होता है । दैनिक योजना दो प्रकार की होती है :

1. **पूर्ण विवरण सहित :** इस प्रकार की योजना में एक कालांश में किए जाने वाले शिक्षण कार्य का पूरा विवरण होता है । ऐसी योजना छात्र-अध्यापकों के लिए आवश्यक होती है क्योंकि उन्हें शिक्षण कार्य का पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करना होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

2. **संक्षिप्त** : प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकने पर अध्यापन कार्य करते समय अध्यापक के पास इतना समय नहीं होता कि वह पूर्ण विवरण सहित पाठ योजना का निर्माण करे। शिक्षण कार्य सम्बन्धी अनुभव हो जाने पर विस्तृत पाठ योजना की आवश्यकता भी नहीं होती। संक्षिप्त पाठ योजना से काम चल सकता है। संक्षिप्त पाठ योजना के विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत संक्षिप्त संकेत दिए जाते हैं। इन संकेतों के आधार पर अध्यापक शिक्षण कार्य कुशलता से कर लेता है।

संस्कृत पाठ योजना के सोपान

संस्कृत में मुख्यतः तीन प्रकार के पाठ हो सकते हैं (1) ज्ञान प्राप्ति सम्बन्धी—गद्य, व्याकरण, रचना तथा अनुवाद विषयक। (2) कौशल सम्बन्धी —उच्चारण, मौखिक रचना, अक्षर-विन्यास, तथा श्रुत लेख विषयक। (3) सौन्दर्यानुभूति सम्बन्धी —कविता तथा नाटक विषयक।

इन सभी प्रकार के पाठों के लिए एक ही प्रकार के सोपान निर्धारित करना कठिन है। फिर एक ही पाठ केवल ज्ञान सम्बन्धी नहीं होता, उसमें कौशल और सौन्दर्यानुभूति का अंश भी होता है। पाठ योजना का सोपानों में विभाजन प्रक्रिया को सुनिश्चित करने के लिए है ज्ञान, कर्म तथा अनुभव को एक दूसरे से पृथक् करने के लिए नहीं।

संस्कृत में उपर्युक्त सभी प्रकार के पाठों के लिए सोपान लगभग एक जैसे होंगे। उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए किसी विशेष पक्ष पर न्यूनाधिक बल देने की आवश्यक्ता होगी। अतः संस्कृत की पाठ योजना के मुख्य सोपान निम्नांकित हैं :

1. परिचय

इस सोपान में अध्यापक अपना नाम, अथवा रोल न०, उसे किस कक्षा को पढ़ाना है, क्या विषय पढ़ाना है, सहायक सामग्री, पाठ के सामान्य तथा विशेष उद्देश्यों का उल्लेख करता है।

2. प्रस्तावना

इस सोपान को भूमिका भी कहा जाता है। इस सोपान में नवीन पाठ को पढ़ाने के लिए आधार तैयार किया जाता है। इस सोपान में अध्यापक विद्यार्थियों का पाठ से सम्बन्धित पूर्वज्ञान जाँचता है और पूर्वज्ञान का नवीन ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करता है। पूर्वज्ञान जाँच लेने पर अध्यापक उद्देश्य कथन करता है अर्थात् वह विद्यार्थियों को बताता है कि उन्हें उस समय क्या पढ़ना है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

3. प्रस्तुतीकरण

इस सोपान को विषय-उपस्थापन भी कहा जाता है। इस सोपान में अध्यापक पाठ पढ़ाता है। गद्य, पद्य व्याकरण रचना पढाने की विधि में अन्तर है। इन विधियों के सम्बन्ध में गत अध्यायों में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है। संस्कृत के विभिन्न विषयों से सम्बन्धित पाठ योजनाओं के उदाहरण परिशिष्ट—'क' में प्रस्तुत किए गए हैं।

4. पुनरावृत्ति

प्रस्तुतीकरण के सोपान के पश्चात् पुनरावृत्ति शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ाएगए पाठ की दुहराई की जाती है। इससे विद्यार्थियों के विषय-ग्रहण का ज्ञान होता है।

5. गृह कार्य

पढ़ाए गए पाठ के और अभ्यास के लिए विद्यार्थियों को कक्षा में करने के लिए अथवा घर पर करने के लिए कार्य दिया जाता है। इससे विद्यार्थियों का ज्ञान परिपुष्ट होता है।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. पाठ योजना से क्या अभिप्राय है ?
2. पाठ योजना की क्या आवश्यकता है ?
3. पाठ योजना से अध्यापक को क्या लाभ होंगे ?
4. उत्तम पाठ योजना में कौनसे गुण होने चाहिएँ ?
5. पाठ योजना लचकदार क्यों होनी चाहिए ?
6. पाठ योजना कितने प्रकार की होती है ?
7. वार्षिक योजना से क्या लाभ होंगे ?
8. दैनिक योजना से क्या अभिप्राय है ?
9. पूर्ण विवरण सहित पाठ योजना संक्षिप्त पाठ योजना से किस दृष्टि से भिन्न होती है ?
10. संस्कृत पाठ योजना में कौन-कौन से सोपान होने चाहिएँ ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट क

पाठ योजनाओं के उदाहरण

पाठ योजना क्रमांक 1

गद्य पाठ-योजना

दिनांक—
अवधि – 40 मिनट
विद्यालय——
अध्यापक——
विषय—संस्कृत गद्य

कालांश—द्वितीय
कक्षा—आठवीं, वर्ग—क
रोल न०———
शीर्षक——होलिकोत्सव :

सहायक सामग्री—श्यामपट, चाक, झाड़न, होलिकोत्सव सम्बन्धी एक चित्र

सामान्य उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे संस्कृत के सरल गद्यांश को गति, प्रवाह तथा शुद्धोच्चारण सहित पढ़ सकें।
2. संस्कृत के सरल वाक्यों का अर्थ ग्रहण कर सकें।
3. विद्यार्थियों की संस्कृत शब्दावली में वृद्धि करना।
4. उनको गद्यांश में प्रयुक्त विभिन्न व्याकरण-रूपों से परिचित कराना।
5. उनके सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
6. उनमें संस्कृत स्वाध्याय के प्रति रुचि को विकसित करना।
7. उनकी कल्पना एवं विचार शक्ति को विकसित करना।
8. पाठगत आदर्शों के माध्यम से विद्यार्थियों का चरित्र-निर्माण करना।
9. विद्यार्थियों में संस्कृत का स्वाध्याय करने की प्रवृति का विकास करना।
10. विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

विशेष उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को होलिकोत्सव के महत्त्व से परिचित करना।
2. उनको होलिकोत्सव सम्बन्धी आयोजनों से, विशेषतया रंग खेलने से, परिचित कराना।
3. विद्यार्थियों को होलिकोत्सव पर अश्लील प्रदर्शन तथा झगड़े एवं दंगों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से बचने और परस्पर प्रेम से मिलजुल कर रहने का संदेश प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना।

पूर्वज्ञान

1. विद्यार्थी 'होली' के त्योहार से भलीभाँति परिचित हैं।
2. वे जानते हैं कि होली का त्योहार प्रतिवर्ष कैसे मनाया जाता है।

प्रस्तावना

अध्यापक विद्यार्थियों से उनके पूर्वज्ञान के आधार पर निम्नांकित प्रश्न पूछेगा :

1. विद्यार्थियो ! इस चित्र में तुम क्या देखते हो ?
(सहायक सामग्री सम्बन्धी चित्र दिखाते हुए)
2. कौन-से त्योहार पर लोग एक दूसरे पर रंग फेंकते हैं ?
3. होली का दिन बच्चे किस प्रकार मनाते हैं ?
4. होली वाले दिन और कौन-से खेल तमाशे होते हैं ?
5. होली का त्योहार क्यों मनाया जाता है ?

(यदि विद्यार्थियों को संस्कृत का इतना अभ्यास हो कि वे संस्कृत में उत्तर दे सकें तो उपर्युक्त प्रश्न संस्कृत में पूछे जा सकते हैं)

उद्देश्य कथन

अध्यापक बच्चों को कहेगा कि होली के विषय में वे पहले भी कुछ जानकारी रखते हैं। आज उन्हें इसी सम्बन्ध में और ज्ञान कराया जाएगा। वह विद्यार्थियों को उनकी पाठ्य पुस्तक का पृ० 48 खोलने को कहेगा।

विषय-वस्तु

पुरा मूलत्राण 'नगरे हरिण्यकशिपुः नाम राजाऽऽसीत्। सोऽतीव दुष्टः आसीत्। स स्वात्मानमेव परमात्मानम् अमन्यत। हरिण्यकशिपोः प्रह्लादः नाम एकः सुतः आसीत्। स भगवद्भक्तं आसीत्, अतः हरिण्यकशिपुः पुत्रं प्रह्लादं अतुदत् अवदत् च यत् स भगवद्भक्तिं त्यक्त्वा हरिण्यकशिपुम् एव ईश्वरं मन्येत। किन्तु स नामन्यत। बहुधा पीड्यमानोऽपि प्रह्लादः विष्णोः भक्तिं नात्यजत्।

प्रस्तुतीकरण

(क) आदर्श पाठ

1. अध्यापक विद्यार्थियों के समक्ष उपर्युक्त संस्कृत गद्यांश का आदर्श पाठ प्रस्तुत करेगा। वह उचित स्वराघात तथा विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए शुद्ध वाचन करेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

2. अध्यापक दो तीन विद्यार्थियों से इसी गद्यांश को पढ़वाएगा।
3. विद्यार्थी जहाँ अशुद्धोच्चारण करेंगे अध्यापक वहाँ शुद्धि करेगा।

(ख) व्याख्या

1. सन्धिच्छेद—विद्यार्थियों के समक्ष गद्यांश गत निम्नांकित शब्दों का सन्धिच्छेद स्पष्ट किया जाएगा तथा नियमों का उल्लेख किया जाएगा :

राजाऽऽसीत्	=	राजा+आसीत्
सोऽतीव	=	सः+अतीव
स्वात्मानमेव	=	स्व+आत्मानम्+एव
नामन्यत	=	न+अमन्यत
पीड्यमानोऽपि	=	पीड्यमानः+अपि

2. कठिन शब्दों तथा वाक्य खण्डों की व्याख्या—

अध्यापक गद्यांश गत निम्नांकित पदों तथा वाक्य खण्डों का अर्थ विविध विधियों से पूछेगा तथा यथावश्यक व्याख्या करेगा :

पद	अर्थ	विधि
पुरा	पहले, प्राचीन काल में	मातृभाषा में अर्थकथन तथा वाक्य प्रयोग द्वारा
मूलत्राणाम्	मुलतान	पद विश्लेषण तथा अर्थकथन द्वारा
अतुदत्	दुःख देता था	धातु रूप विश्लेषण तथा वाक्य प्रयोग द्वारा
अवदत्	बोला	,,
नामन्यत्	न माना	,,
नात्यजत	न छोड़ा	,,
बहुधा	बहुत बार	मातृभाषा में अर्थकथन तथा वाक्य प्रयोग द्वारा
विष्णोः	विष्णु की	पद विश्लेषण द्वारा

3. अध्यापक 'स स्वात्मानमेव—अमन्यत,' 'अतः हिरण्यकशिपुः पुत्रम्—एव ईश्वरं मन्येत,' आदि कठिन वाक्यों का अर्थ उद्बोधनविधि द्वारा मातृभाषा में करेगा।

(ग) मौनपाठ

तत्पश्चात् अध्यापक विद्यार्थियों को इस गद्यांश का मौन पाठ करने के लिए कहेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(घ) बोध-परीक्षा

विषय-ग्रहण की परख करने तथा इस गद्यांश की पुनरावृत्ति हेतु अध्यापक विद्यार्थियों से निम्नांकित प्रश्न पूछेगा :

1. हिरण्यकशिपु कहाँ का राजा था ?
2. उसके पुत्र का क्या नाम था ?
3. वह अपने पुत्र को क्यों दुःख देता था ?
4. प्रह्लाद ने विष्णु की भक्ति करना क्यों नहीं छोड़ा ।

(यदि विद्यार्थी संस्कृत में उत्तर देने की योग्यता रखते हों तो उपर्युक्त प्रश्न संस्कृत में पूछे जा सकते हैं)

अगले गद्यांशों को भी इसी विधि से पढ़ाया जाएगा ।

पुनरावृत्ति

पठित पाठ की पुनरावृत्ति के लिए निम्नांकित प्रश्न किए जाएँगे :

1. 'वद्'—धातु के लङ् लकार में सभी रूप बताएँ ।
2. 'विष्णु'—शब्द के सभी विभक्तियों में रूप बताएँ ।

गृह-कार्य

1. इस गद्यांश का मातृभाषा में अर्थ लिख कर लाएँ ।
2. पुरा, बहुधा, आसीत्, अवदत्, त्यक्त्वा—का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करके लाएँ ।

पाठ योजना क्रमांक 2

पद्य पाठ-योजना

दिनांक—— कालांश—तृतीय
अवधि—40 मिनट कक्षा—सातवीं, वर्ग—ख
विद्यालय——
अध्यापिका—— रोल न०——
विषय ——संस्कृत पद्य
शीर्षक—सूक्तयः
सहायक सामग्री——श्यामपट, चाक, झाड़न ।

सामान्य-उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में गति, यति, लय तथा भाव के अनुसार पद्य पाठ करने की योग्यता उत्पन्न करना ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

2. पद्यांशों का भावग्रहण करने की योग्यता उत्पन्न करना।
3. विद्यार्थियों की कल्पना एवं विचार शक्ति को विकसित करना।
4. उनमें उदात्त भावों का विकास करते हुए उनके चरित्र का निर्माण करना।
5. उनमें काव्यगत सौन्दर्य की अनुभूति करने की क्षमता विकसित करना।
6. उनमें संस्कृत कविता के प्रति अनुराग उत्पन्न करना।
7. उनको कविता की विभिन्न शैलियों से परिचित कराना।

विशेष उद्देश्य

विद्यार्थियों को गुणवान् व्यक्तियों तथा मूर्खों का अन्तर बताते हुए गुणवान् व्यक्तियों के नम्रता सम्बन्धी गुण से परिचित कराना।

पूर्वज्ञान

विद्यार्थी अच्छे और बुरे व्यक्ति का अन्तर पहले से ही जानते हैं। वे यह भी जानते हैं कि अच्छा व्यक्ति समाज में आदर और बुरा व्यक्ति घृणा पाता है।

प्रस्तावना

अध्यापिका विद्यार्थियों से उनके पूर्वज्ञान पर आधारित निम्नांकित प्रश्न पूछेगी :

1. विद्यार्थियो ! तुम अच्छा बनना चाहोगे या बुरा ?
2. अच्छा व्यक्ति किसे कहा जाता है ?
3. अच्छे व्यक्ति में और कौन-से गुण होने चाहिएँ ?
4. गुणवान् व्यक्ति किसे कहा जाता है ?
5. गुणवान् बनने के लिए तुम क्या करोगे ?

(विद्यार्थी इन प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे क्योंकि कक्षा में भी अच्छे और बुरे लड़कों का अन्तर उन्हें देखने को मिलता है)

उद्देश्य कथन

अध्यापिका विद्यार्थियों को कहेगी कि वे जानते हैं कि अच्छा व्यक्ति कौन होता है और उसमें कौन-से गुण होते हैं। गुणवान् व्यक्ति का समाज आदर करता है। आज उन्हें गुणवान् के एक और विशेष गुण का ज्ञान कराया जाएगा। वह विद्यार्थियों को पुस्तक का 'सूक्तयः' नामक पाठ खोलने के लिए कहेगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय-वस्तु

नमन्ति फलिनो वृक्षाः, नमन्ति गुणिनो जनाः ।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च, न नमन्ति कदाचन ।।

प्रस्तुतीकरण

(क) आदर्श पाठ

1. अध्यापिका विद्यार्थियों के समक्ष उपर्युक्त पद्यांशों का उचित लय एवं भाव के अनुसार आदर्श पाठ करेगी ।

2. तत्पश्चात् दो तीन विद्यार्थियों से सस्वर अनुवाचन करवाया जाएगा । (सारी कक्षा से सामूहिक वाचन भी करवाया जा सकता है)

3. विद्यार्थी जहाँ अशुद्धि करेंगे अध्यापिका उन्हें शुद्ध उच्चारण बताएगी ।

(ख) व्याख्या

1. पदों तथा वाक्य खण्डों की व्याख्या

सौन्दर्यानुभूति में बाधा न पड़े अतएव पदों का अर्थ कथन विधि द्वारा बताया जाएगा—

पद	अर्थ	विधि
फलिनो	फल वाले	कथन विधि द्वारा
गुणिनो	गुण वाले	व्युत्पत्ति तथा अर्थकथन विधि द्वारा
शुष्कवृक्षाश्च	सूखे वृक्ष	अर्थकथन विधि द्वारा
कदाचन	कभी	अर्थकथन विधि द्वारा
नमन्ति	झुकते हैं	,,

2. व्याकरण

'वृक्षाश्च', मूर्खाश्च का सन्धिच्छेद अध्यापिका कथन विधि द्वारा स्वयं बताएगी ।

3. अध्यापिका नमन्ति फलिनो वृक्षाः, नमन्ति गुणिनो जनाः, आदि सभी पद्य खण्डों का अन्वय करेगी तथा मातृभाषा में अर्थ बताएगी ।

4. भाव विश्लेषणात्मक प्रश्न

1. कैसे वृक्ष नीचे झुकते हैं ?
2. गुणवान् और फल वाले वृक्षों में क्या समता है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदि प्रश्न विद्यार्थियों से पूछे जाएँगे ।

(ग) मौनपाठ

तत्पश्चात् अध्यापिका विद्यार्थियों को इस पद्यांश का मौन पाठ करने के लिए कहेगी ।

(घ) बोध-परीक्षा

बोध-परीक्षण के लिए अध्यापिका विद्यार्थियों से निम्नलिखित प्रश्न करेगी :

1. मूर्खों को शुष्क वृक्ष के समान क्यों बताया गया है ;
2. मूर्ख क्यों नहीं झुकते हैं ?

(अगले पद्यांशों को पढ़ाने के लिए भी यही क्रम अपनाया जाएगा)

पुनरावृत्ति

पठित पाठ की पुनरावृत्ति के लिए निम्नांकित प्रश्न किए जाएँगे :

1. वृक्षाश्च, मूर्खाश्च —शब्दों का सन्धिच्छेद करें ।
2. 'कदाचन' का वाक्य प्रयोग करें ।

गृह-कार्य

विद्यार्थियों को घर पर करने के लिए निम्नांकित कार्य दिया जाएगा :

1. पठित पद्यांश का भाव मातृभाषा में लिखकर लाएँ ।
2. इस श्लोक को कण्ठस्थ करें ।

पाठ योजना क्रमांक 3

व्याकरण पाठ-योजना

दिनांक — कालांश—द्वितीय
अवधि—40 मिनट — कक्षा—सातवीं, वर्ग—क
विद्यालय——
अध्यापक——— — रोल न०——
विषय—संस्कृत व्याकरण
शीर्षक—दीर्घ सन्धि
सहायक सामग्री—श्यामपट, चाक, झाड़न ।

सामान्य उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को संस्कृत शब्दों के विभिन्न रूपों से परिचित कराना ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

2. भाषा के शुद्ध अशुद्ध रूप को परखने की क्षमता प्रदान करना ।
3. विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण के नियमों तथा सिद्धान्तों से परिचित कराना ।
4. उन्हें व्याकरण सिद्धान्तों को रचना कार्य में प्रयुक्त करने का अवसर प्रदान करना ।

विशेष उद्देश्य

1. दीर्घ सन्धि के नियमों से परिचित कराना ।
2. दीर्घ सन्धि के रूपों का अभ्यास कराना ।

पूर्वज्ञान

विद्यार्थियों को स्वरों तथा व्यञ्जनों का ज्ञान है। वे इनका अन्तर जानते हैं। वे यह भी जानते हैं कि स्वरों तथा व्यञ्जनों के प्रयोग को सन्धि कहते हैं।

प्रस्तावना

विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान परीक्षण के लिए अध्यापक निम्नलिखित प्रश्न पूछेगा :

1. स्वर कौन-से हैं ?
2. व्यञ्जन कौन-से हैं ?
3. स्वर कितने प्रकार के हैं ?
4. अ और आ में, इ और ई में, उ और ऊ में क्या अन्तर है ?
5. सजातीय स्वरों के वर्ग बताएँ ? (अ, आ), (इ, ई), (उ, ऊ)

उद्देश्य कथन

आज हम इन्हीं सजातीय स्वरों की सन्धि के सम्बन्ध में पढ़ेंगे ।

प्रस्तुतीकरण

इस व्याकरण पाठ को आगमन-निगमन विधि द्वारा पढ़ाया जाएगा—

(क) आगमन विधि

1. उदाहरण प्रस्तुतीकरण,—

धर्म+अर्थः=धर्मार्थः
शश+अंकः=शशांकः
राम+आगमनम्=रामागमनम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्या+आलयः=विद्यालयः
मुनिः+इन्द्रः=मुनीन्द्रः
लक्ष्मी+ईशः=लक्ष्मीशः
कवि+ईश्वरः=कवीश्वरः
भानु+उदयः=भानूदयः
पितृ+ऋणम्=पितृणम्

2. निरीक्षण, विश्लेषण तथा वर्गीकरण

अध्यापक विद्यार्थियों को उपर्युक्त उदाहरण ध्यानपूर्वक देखने के लिए कहेगा और विद्यार्थियों की सहायता से उपर्युक्त उदाहरणों में से प्रत्येक का विश्लेषण तथा वर्गीकरण करेगा—

धर्मार्थः तथा शशांकः में	अ+अ=आ
रामागमनम् में	अ+आ=आ
विद्यालयः में	आ+आ=आ
मुनीन्द्रः में	इ+इ=ई
कवीश्वरः में	इ+ई=ई
लक्ष्मीशः में	ई+ई=ई
भानूदयः में	उ+उ=ऊ
पितृणम् में	ऋ+ऋ=ॠ

3. नियमीकरण

अध्यापक उपर्युक्त विश्लेषण तथा वर्गीकरण के आधार पर विद्यार्थियों की सहायता से निम्नांकित नियम निर्धारित करेगा :

1. ह्रस्व अथवा दीर्घ अकार के आगे ह्रस्व अथवा दीर्घ अकार आए तो दोनों के मेल से दीर्घ अकार (आ) बन जाता है।
2. ह्रस्व अथवा दीर्घ इकार के आगे ह्रस्व अथवा दीर्घ इकार आए तो दोनों के मेल से दीर्घ इकार (ई) बन जाता है।
3. इसी प्रकार 'उ' तथा 'ऋ' की स्थिति में भी 'ऊ' तथा 'ॠ' रूप हो जाते है।
4. विद्यार्थियों के समक्ष ऐसे और उदाहरण रखे जाएँगे और दीर्घ सन्धि सम्बन्धी नियम का और स्पष्टीकरण किया जाएगा।

(ख) निगमन विधि

1. निर्धारित नियम के प्रयोग तथा प्रमाणीकरण के लिए निम्नांकित उदाहरण प्रस्तुत किए जाएँगे :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

1. रामारिः, विद्यार्थी
2. कवीच्छा, नारीश्वरः
3. गुरूत्सवः

2. विद्यार्थियों से ही इन शब्दों का सन्धिच्छेद करवाया जाएगा। पूर्व निर्धारित नियमों का इन उदाहरणों के सम्बन्ध में पुनः स्मरण करवाया जाएगा।

3. विद्यार्थियों से ऐसे और शब्दों का सन्धिच्छेद करवाया जाएगा तथा उनके ज्ञान को और पुष्ट किया जाएगा।

पुनरावृत्ति

पुनरावृत्ति हेतु निम्नलिखित शब्दों का सन्धिच्छेद करवाया जाएगा :
पुरुषार्थी, शरणार्थी, साधूपदेशः, कवीन्द्रः, वेदान्तः, जलाशयः मातृणम्।

गृह-कार्य

1. विद्यार्थियों को अब तक पढ़े गए पाठों में से कोई ऐसे दस शब्द छाँटने को कहा जाएगा जिनमें दीर्घ सन्धि हो।
2. उन शब्दों का सन्धिच्छेद करके लाने को भी कहा जाएगा।

पाठ योजना क्रमांक 4

अनुवाद पाठ-योजना

कक्षा—छठी
विषय—संस्कृत अनुवाद (लट् लकार पर आधारित)
अन्य परिचयात्मक विवरण—पाठ योजना क्रमांक 1, 2 तथा 3 की भाँति

सामान्य उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को व्याकरण पाठों में सीखे गए नियमों को प्रयुक्त करने के लिए अवसर प्रदान करना।
2. उनको हिन्दी तथा संस्कृत के वाक्यों का तुलनात्मक ज्ञान कराना।
3. उनमें संस्कृत के माध्यम से विचाराभिव्यक्ति करने की क्षमता विकसित करना।
4. विद्यार्थी संस्कृत लेखन में जिस प्रकार की अशुद्धियाँ करते हैं उनसे उन्हें परिचित कराना तथा उन अशुद्धियों को दूर करने लिए प्रेरित करना।

विशेष उद्देश्य

विद्यार्थियों को लट् लकार में प्रथम पुरुष की क्रियाओं का प्रयोग करने की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षमता प्रदान करना ।

पूर्वज्ञान

विद्यार्थी लट् लकार के रूप सभी पुरुषों में जानते हैं।

प्रस्तावना

विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान परीक्षण के लिए निम्नांकित प्रश्न पूछे जाएँगे :

1. मोहन लिखता है । वाक्य में कौन-से काल की क्रिया प्रयुक्त हुई है ? (वर्तमान काल)
2. संस्कृत में वर्तमान काल के लिए कौन-से लकार का प्रयोग होता है ?
3. पठ् धातु के लट् लकार में प्रथम पुरुष के रूप बताएँ।
4. 'वे सब पढ़ते हैं', के लिए संस्कृत में पठ् धातु का लट् लकार में क्या रूप होगा ?

उद्देश्य कथन

अध्यापक विद्यार्थियों को बताए कि आज उन्हें लट् लकार में प्रथम पुरुष की क्रियाओं से युक्त हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करना सिखाया जाएगा ।

विषय-वस्तु

1. राम पढ़ता है ।
2. सीता जाती है ।
3. लड़कियाँ खेलती हैं ।
4. मोहन दौड़ता है ।
5. वह पत्र लिखता है ।
6. दो बालक नमस्कार करते हैं ।
7. वे सब नमस्कार करते हैं ।
8. बहुत से घोड़े दौड़ते हैं ।

प्रस्तुतीकरण

1. विद्यार्थी उपर्युक्त वाक्यों का मौन वाचन करेंगे तथा कठिन शब्दों पर चिह्न लगाएँगे ।

2. अध्यापक चिह्नित कठिन शब्दों के संस्कृत पर्याय श्यामपट पर लिखेगा—

पढ़ना—पठ्

जाना—गम् (गच्छ्)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खेलना—क्रीड्
दौड़ना—धाव्
लिखना—लिख्
नमस्कार करना—नम्
घोड़ा—अश्व

3. अध्यापक श्यामपट पर लट् लकार के प्रथम पुरुष के प्रत्यय–ति तः अन्ति लिखेगा।

4. अध्यापक उपर्युक्त हिन्दी वाक्यों में से एक एक वाक्य क्रमशः लेगा और विद्यार्थियों से मौखिक रूप से उनका संस्कृत अनुवाद करवाएगा। जहाँ विद्यार्थी कठिनाई अनुभव करेंगे अथवा अशुद्धि करेंगे अध्यापक उनका पथ-प्रदर्शन करेगा।

अनुवाद लेखन

तत्पश्चात् अध्यापक विद्यार्थियों को अनूदित वाक्यों को लिखने को कहेगा और स्वयं निरीक्षण करेगा।

संशोधन

अनुवाद कार्य का यथासम्भव कक्षा में ही संशोधन किया जाएगा।

गृह-कार्य

अध्यापक विद्यार्थियों को निम्नलिखित वाक्यों का घर से संस्कृत में अनुवाद करके लाने को कहेगा :

1. मोहन चलता है।
2. सीता पढ़ती है।
3. पुरुष जाता है।
4. देव आता है।
5. बालक दौड़ते हैं।
6. लड़कियाँ लिखती हैं।

पाठ योजना क्रमांक 5

लिखित रचना पाठ-योजना

कक्षा—नौवीं
विषय—संस्कृत रचना
उपविषय—अश्वः (निबन्ध लेखन)
अन्य परिचय—पाठ योजना क्रमांक 1, 2, 3 की भाँति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहायक सामग्री—अश्व का एक चित्र

सामान्य उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे प्रश्नों का उत्तर सरल संस्कृत में दे सकें।
2. वे सरल संस्कृत में मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति कर सकें।
3. उनको शुद्ध संस्कृत लिखने के लिए उत्साहित करना।
4. उनमें संस्कृत रचनाकार्य करने की क्षमता विकसित करना।

विशेष उद्देश्य

विद्यार्थियों के लिए अश्व पर कुछ संस्कृत वाक्य लिखने की योग्यता प्रदान करना।

पूर्वज्ञान

विद्यार्थी घोड़े की आकृति तथा इसके प्रयोग से भली-भाँति परिचित हैं। वे मातृभाषा में इसका भली प्रकार वर्णन कर सकते हैं।

प्रस्तावना

अध्यापक विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान के आधार पर निम्नांकित प्रश्न करेगा :

1. सवारी के लिए कौन-कौन से पशुओं का प्रयोग होता है ?
2. सवारी के लिए घोड़ा अन्य पशुओं की अपेक्षा क्यों अधिक अच्छा समझा जाता है।
3. सवारी के अतिरिक्त घोड़ा और किस काम आता है ?

(यदि विद्यार्थी संस्कृत में उत्तर दे सकें तो ये प्रश्न संस्कृत में पूछे जाएँ)

उद्देश्य कथन

अध्यापक विद्यार्थियों को बताएगा कि आज उन्हें अश्व पर संस्कृत में कुछ वाक्य लिखवाए जाएँगे।

प्रस्तुतीकरण

1. अध्यापक विद्यार्थियों को अश्व का चित्र दिखाएगा और उसके सम्बन्ध में उनसे प्रश्न करेगा :
   1. एषः कः पशुः ?
   2. अस्य शरीरं कीदृशम् अस्ति ?
   3. अस्य कर्णौ कीदृशौ स्तः ?
   4. अस्य कति पादाः सन्ति ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

5. एषः किम् खादति ?
6. अस्य कीदृशी प्रकृतिः ?
7. अस्य कः उपयोगः ?
8. युद्धे अश्वस्य कः उपयोगः भवति ?
9. केषु अन्येषु कार्येषु अश्वस्य उपयोगः अस्ति ?

2. श्यामपट कार्य

अध्यापक विद्यार्थियों द्वारा दिए गए उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तरों को श्यामपट पर पूर्ण रूप से अथवा आंशिक रूप से लिखता जाएगा :

1. एषः अश्वः अस्ति ।
2. अस्य शरीरं अति सुगठितम् अस्ति ।
3. अस्य कर्णौ दीर्घौ स्तः ।
4. अस्य चत्वारः पादाः सन्ति ।

आदि आदि ।

रचना कार्य

अध्यापक विद्यार्थियों को उपर्युक्त संकेतों के आधार पर 'अश्वः' शीर्षक पर संस्कृत में वाक्य लिखने को कहेगा ।

संशोधन

अध्यापक कुछ विद्यार्थियों के निबन्धों का उसी कालांश में तथा शेष निबंधों का वह आगामी कालांशों में संशोधन करेगा ।

गृह-कार्य

जो विद्यार्थी कक्षा में निबन्ध न लिख सकेंगे उनको घर से लिखकर लाने के लिए कहा जाएगा ।

पाठ योजना क्रमांक 6

मौखिक रचना पाठ-योजना

कक्षा—छठी
विषय—मौखिक रचना उपविषय—कुछ सर्वनाम शब्दों का मौखिक प्रयोग
अन्य परिचय—पाठ योजना क्रमांक 1, 2, 3 की भाँति
सहायक सामग्री—पुस्तक, वस्त्र आदि वस्तुएँ—मौखिक कार्य के समय संकेत के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामान्य उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को सरल संस्कृत में उत्तर देने के लिए उत्साहित करना।
2. उनका उच्चारण सुधारना।
3. उनकी संस्कृत शब्दावली में वृद्धि करना।
4. उनको संस्कृत में मौखिक अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना।

विशेष उद्देश्य

विद्यार्थियों से एतत्, एषः, किम्, कः, कस्य सर्वनामों का वाक्यों में प्रयोग करवाना।

पूर्वज्ञान

विद्यार्थी किम्, कः, एतत्, एषः, आदि संस्कृत शब्दों से परिचित हैं।

प्रस्तावना

1. अध्यापक किम्, कः, एषः, आदि शब्दों का अर्थ विद्यार्थियों से पूछेगा।
2. पुस्तक, कपड़ा, फूल आदि शब्दों के संस्कृत पर्याय पूछेगा।

प्रस्तुतीकरण

1. अध्यापक विद्यार्थियों को पुस्तक, वस्त्र, फूल आदि वस्तुएँ दिखाएगा और उनसे इस प्रकार के प्रश्न पूछेगा :
   किम् एतत् ? (पुस्तकम्)
   एतत् कस्य पुस्तकम् (मम)
   एतत् किम् ? (वस्त्रम्)
   एतत् किम् ? (पुष्पम्)
   कः एषः ? (बालकः)
   एषः बालकः किम् करोति। (लिखति)
2. अध्यापक विद्यार्थियों से इसी प्रकार के प्रश्न कक्षा में विद्यमान अन्य वस्तुओं के सम्बन्ध में करेगा।
3. अध्यापक का यत्न यह होगा कि वह कक्षा में उपस्थित सभी विद्यार्थियों से बारी से प्रश्न पूछे।
4. मौखिक अभ्यास के अन्तर्गत जिन कठिन शब्दों का प्रयोग हुआ है अध्यापक उन्हें श्यामपट पर लिखेगा।

पुनरावृत्ति

जिन शब्दों का मौखिक अभ्यास कराया गया है उन्हीं शब्दों पर आधारित वाक्यों का मौखिक अनुवाद अध्यापक करवाएगा। जैसे :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

1. यह क्या है ?
2. यह किसकी पुस्तक है ?

आदि आदि

पाठ योजना क्रमांक 7

श्रुतलेख पाठ-योजना

कक्षा—सातवीं
विषय—संस्कृत श्रुतलेख
अन्य विवरण—पूर्वदत्त पाठ-योजनाओं की भाँति

सामान्य उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को शुद्ध संस्कृत का अभ्यास कराना।
2. उनकी अक्षर-विन्यास सम्बन्धी अशुद्धियों का निराकरण करना।

विशेष उद्देश्य

विशेष अनुच्छेद में आए शब्दों के अक्षर-विन्यास का अभ्यास कराना।

पूर्वज्ञान

श्रुतलेख के लिए वह संस्कृत गद्यांश चुना गया हैं जो विद्यार्थियों ने गत सप्ताह पढ़ा था।

प्रस्तुतीकरण

1. अध्यापक विद्यार्थियों को श्रुतलेख सम्बन्धी गद्यांश एक बार धीरे-धीरे पढ़कर सुनाएगा। (अपनी ओर से कोई गद्यांश चुनें)
2. अब वह विद्यार्थियों को गद्यांश लिखने को कहेगा। अध्यापक पदों अथवा वाक्य खण्डों को बोलेगा और विद्यार्थी साथ-साथ अपनी कापियों पर लिखते जाएँगे। बोलते समय पद अथवा वाक्य खण्ड को 2-3 बार साथ-साथ दुहराया जाएगा जिससे कि सभी विद्यार्थी सुन सकें और अपनी गति अनुसार लिख सकें।
3. विद्यार्थियों के लिख लेने पर अध्यापक एक बार फिर गद्यांश को पढ़ कर सुनाएगा।
4. तत्पश्चात् अध्यापक विद्यार्थियों के श्रुतलेखों का संशोधन करेगा। (यदि विद्यार्थी अधिक हों तो कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिख दिया जाए। विद्यार्थी अपने-अपने लेख का स्वयं सशोधन करें। फिर भी अन्तिम संशोधन अध्यापक स्वयं करे।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्ञातव्य

विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण प्रायः मातृभाषा के माध्यम से कराया जा रहा है। इसलिए पाठ योजनाएँ हिन्दी में दी गई हैं। जिन संस्थाओं में विद्यार्थियों को संस्कृत के माध्यम से शिक्षण कार्य कराया जा रहा हो वहाँ इन्हीं पाठ-योजनाओं का उपयोग संस्कृत में रूपान्तरित करके किया जा सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट ख

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

(हिन्दी)

आत्मानन्द मिश्र — शिक्षण कला
उमेश मिश्र — भारतीय दर्शन
चन्द्रशेखर पाण्डेय — सस्कृत साहित्य की रूपरेखा
प्रभाशकर मिश्र — हिन्दी सुलेख—क्या, क्यों, कैसे ?
बलदेव उपाध्याय — संस्कृत साहित्य का इतिहास
भगवतशरण उपाध्याय — विश्व-साहित्य की रूपरेखा
भूदेव शास्त्री — मातृभाषा का अध्यापन
भोलानाथ तिवारी — भाषा विज्ञान
मंगलदेव शास्त्री — तुलनात्मक भाषा-शास्त्र
रघुनाथ सफाया — भाषा और साहित्य का विवेचन
रघुनाथ सफाया — हिन्दी शिक्षण विधि
रामचन्द्र वर्मा — शब्द साधना
रामचन्द्र शुक्ल — हिन्दी साहित्य का इतिहास
रामधारी सिंह दिनकर — संस्कृत के चार अध्याय
रामनारायण त्रिपाठी — संस्कृत अध्यापन विधि
रामशकल पाण्डेय — नवीन शिक्षण सिद्धान्त
रामशकल पाण्डेय — संस्कृत शिक्षण
विजयनारायण चौबे — संस्कृत शिक्षण विधि
सरयूप्रसाद चौबे — अध्यापन विधियाँ
सीताराम चतुर्वेदी — संस्कृत-शिक्षण-पद्धति
सुनीति कुमार चटर्जी — आर्य भाषा और हिन्दी
शिवनारायण श्रीवास्तव — कविता की शिक्षा
श्यामसुन्दर दास — भाषा विज्ञान

(संस्कृत)

आनन्दवर्धनाचार्य — ध्वन्यालोक
गुणाढ्य — बृहत्कथा
चाणक्य — अर्थशास्त्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पतञ्जलि	महाभाष्य
पाणिनि	अष्टाध्यायी
पाणिनि	पाणिनीय शिक्षा
भट्टोजिदीक्षित	सिद्धान्त कौमुदी
भरत मुनि	नाट्यशास्त्र
भामह	काव्यालंकार
मम्मट	काव्य प्रकाश
याज्ञवल्क्य	याज्ञवल्क्य शिक्षा
विष्णुशर्मा	पञ्चतन्त्र

(अंग्रेजी)

Altekar, A.S.	Education in Ancient India
Apte, D.G. and Dongre, P.K.	Teaching of Sanskrit in Secondary Schools
Apte, N.S.	The Students, Guide to Sanskrit Composition.
Banerji, R.D.	Prehistoric, Ancient & Hindu India.
Bokil, V.P. and Parasnis, N.R.	A New Approach to Sanskrit.
Chatterjee, S.K.	Indo Aryan and Hindi.
Chaube, S.P.	Some Foundations of Education.
Das, S.K.	The Educational System of Ancient Hindus.
Dikshit, K.N.	Prehistoric Civilization of the Indus Valley.
Edgar Dale.	Audio-Visual Aids in Teaching.
Eisonsen, T.	Speech Correction in the Schools.
Findlay, J.J.	Modern Language Learning.
Gouin, F.	The Art of Teaching and Studying. Languages.
Haroid E. Palmet	The Principles of Language Study.
Harris, Z.S.	Methods in Structural Linguistics.
Henry Sweet	A Handbook of Phonetics.
Huparikar, G.S.	The Problem of Sanskrit Teaching.
Huse, H.R.	Reading and Speaking Foreign Language.
Jagger, J.H.	Poetry in School.
Kale, M.R.	The Higher Sanskrit Grammar.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Lervis, M.M. Language in Schools.
Mackenzie, A.F. Learning to Read.
Majumdar, C. The Vedic Age
Mario, A.K. Pei The Story of Language.
Oliver. Z.E. Modern Language Teacher's Hand-book.
Palmar, Harold E. The Oral Method of Teaching Language.
Schonell, J.J. The Psychology and Teaching of Reading.
Tarr, John, C. Good Handwriting,
Thimman, I.C. Teaching Languages.
Vernon Molinson Teaching a Modern Language.
Weighman, J.C. On Language and Writing.
Whorf, B.L. Language, Thought and Reality.

Report of the Secondary Education Commission, 1953 Government of India, New Delhi.

Report of the Official Language Commission, 1956, Government of India, New Delhi.

Report of the Sanskrit Commission, 1958, Government of India, New Delhi.

Report of the Indian Education Commission, 1966, Government of India, New Delhi.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट ग

पारिभाषिक शब्दावली

आगमन प्रणाली inductive method
आधुनिकीकरण modernization
अन्तरिक मूल्यांकन internal assessment
इकाई unit
उच्चस्तर high stage
उच्चारण pronunciation
कालांश period
कौशल skill
ग्रहण का उद्देश्य receptive aim
तालिका table
तुलना comparison
तुलनात्मक जाँच matching tests
दैनिकी diary
द्रुत पाठ्य-पुस्तकें rapid reading books
नाटकीकरण dramatization
निगमन प्रणाली deductive method
पद्य poetry
परम्परागत विधि traditional method
पाठ योजना lesson plan
पाठ्यक्रम syllabus
पाठ्य बिन्दु teaching points
प्रतिमूर्ति model
प्रत्यक्ष विधि direct method
प्रत्यभिज्ञा जाँच recogniton tests
प्रत्याह्वान जाँच recall tests
प्रबन्धात्मक essay type
प्रयोग applicaton
प्रस्तावना preparation
प्रस्तुतीकरण presentation
प्राथमिक स्तर primary stage
प्रामाणिकता validitiy
बहुविकल्प जाँच multiple choice tests.
भावाभिव्यक्ति का उद्देश्य expressive aim
माध्यमिक स्तर middle stage
मानचित्र map
मूल्य निर्धारण appraisal
मूल्यांकन evaluation
मौखिक परीक्षाएँ oral tests
मौखिक रचनाकार्य oral composition
रचना कार्य composition work
लिखित रचना कार्य written composition
वस्तुगत परीक्षाएँ objective type tests
वाचनालय reading room
विद्यालय-पत्रिका school magazine

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विवरणात्मक descriptive
विश्लेषण analysis
व्यवहार रूप behaviour pattern
शैली style
श्रव्य-दृश्य साधन audio-visual aids.
संग्रहालय museum
सम्पूरक पाठ्य पुस्तकें supplementary readers
सहायक सामग्री teaching aids
सामान्यीकरण generalization
साहित्यिक सभाएँ literary clubs
सोपान steps
सौन्दर्यानुभूति appreciation
हर्बार्टीय सोपान herbartial steps.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाल्मीकि विद्यापीठ पुस्तकालयः

प्रत्यावर्तनतिथिः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Class No 491.2 Acc. No. 9444
Book No MIS
Author मिश्र प्रभाकर
Title संस्कृत शिक्षण

Due on	Borrower's Name	Returned on

491.2
MIS
9444

महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय
वाल्मीकि विद्यापीठ
पुस्तकालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu